ढोलिया जी

॥ नमः श्रीपार्श्वनाथाय ॥

स्वर्गीय कविवर भूधरदास विरचित

पार्श्व पुराण

(जैन सिद्धान्त गर्भित सुन्दर काव्य ग्रंथ)

प्रकाशक—
वीर पुस्तक भंडार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर-३

Rs 5-00



हरिश्चन्द्र ढोलिया.

प्रकाशक :
वीर पुस्तक भंडार
मनिहारो का रास्ता,
जयपुर-३



मूल्य :
~~२)५०~~
५)



मुद्रक :
श्री वीर प्रेस,

कविवर भूधरदासजी

इस पार्श्वपुराण के रचयिता कविवर भूधरदासजी है। अठारहवी शती के उत्तरार्द्ध मे कविवर ने आगरा मे इसकी रचना की। कवि आगरा के रहने वाले खडेलवाल दि० जैन थे। इनका समय विक्रम सं० १७५० से १८०६ माना जाता है। पार्श्वपुराण की रचना से पूर्व आध्यात्मिक एव उपदेशी एकसौ से अधिक छन्द उनने लिखे, जिन्हे जयपुर नरेश-सवाई जयसिंहजी के सूबेदार (सूबा के हाकिम) श्री गुलाबचदजी के कहने से एकत्र कर पौष कृष्णा त्रयोदशी रविवार वि स० १७८१ मे पूर्ण किया। शतक मे १०६ छन्द हैं। अन्तिम छन्द मे अपना परिचय देते हुए उनने लिखा है—

आगरे मे बाल-बुद्धि भूधर खडेलवाल बालक के ख्याल सौं कवित्त कर जानै है
ऐसे ही करत भयो जैसिंह सवाई सूबा—हाकिम गुलाबचद आये तिहि थानै हैं।
हरीसिंह साह के सुवश धर्मरागी नर, तिनके कहे सौ जोरि कीनी एक ठानै है।
फिरि फिरि प्रेरे मेरे आलस को अतभयो, उनकी सहाय यह मेरो मन मानै है।

दोहा—सतरह सै इक्यासिया, पोह पाख तमलीन।
तिथि तेरस रविवार को, सतक समापत कीन।

शतक के पश्चात् पार्श्वपुराण को रचना हुई जो आषाढ शुक्ला पचमी वि स १७८९ मे पूर्ण हुई। इन दो ग्रथो के अतिरिक्त कवि के बनाये लगभग ७० पद भी उपलब्ध हैं जो विभिन्न राग रागनियो मे गाये जा सकते हैं। खोज करने पर सभवत और भी पद मिलें। पर जितने उपलब्ध हैं वे बडे ही महत्वपूर्ण और हृदय को छूनेवाले हैं। कवि के पद, छन्द आदि एक से एक बढकर है और सासारिक प्राणी को झकझोर देने वाले है। ससार की असारता, भोगो की नि सारता और मानव जीवन की उपादेयता पर कवि ने खूब ही लिखा है। इतने प्रभावक है शतक के छन्द एव भजन कि जो काय लम्बे चौडे अनेक उपदेशो और शास्त्रो के अध्ययन से नही हो सकता—वह पद्य की दो लाइनो मे हो जाता है। बडा आनन्द आता है इनके पढने मात्र से ही।

पार्श्वपुराण मे भी कवि ने कमाल कर दिया है। सचमुच पार्श्व पुराण जैन काव्य-साहित्य मे एक उच्च कोटिका काव्य-ग्रथ है। इसमे भगवान पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र है-पर साथ ही जैन सिद्धान्त का सार भी इसमे कवि ने भर दिया है। पच कल्याणक वर्णन के साथ तत्त्वचर्चा और आध्यात्मिक उपदेशो से सरावोर है-यह ग्रथ। शब्द विन्यास, भावगाभीर्य और प्रसादादिगुण स्थान स्थान पर देखने को मिलते हैं इस छोटे से पुराण मे। विभिन्न छन्दो मे निबद्ध यह ग्रथ कवि की छन्द-शास्त्र की जानकारी प्रकट करता है। यद्यपि कवि ने अपनी लघुता प्रकट करते हुए लिखा है कि—

अमर कोष नहिं पढ्यो, मैं न कहिं पिंगल पेख्यो।
काव्य कठ नहिं करी, सारसुत सो नहिं सीख्यो।
अच्छर–संधि–समास-ज्ञान वर्जित बुधि हीनी।
धर्म–भावना हेत–किमपि भाषा यह कीनी।

किन्तु वे एक विद्वान् थे—साहित्य, दर्शन और सिद्धान्त के अच्छे जानकार। यह पार्श्वपुराण किसी का अनुवाद नही यह कवि की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना है। जैन काव्यो में ऐसा अन्य कोई चरित्र ग्रथ नही है। कवि का प्रभाव इसीसे स्पष्ट है कि उनका पार्श्वपुराण, जैन शतक एव पद सग्रह का समाज मे काफी प्रचार है और बडे चाव से लोग इन्हे पढते है। इसीलिए इनकी रचनाओ के बार २ प्रकाशन की आवश्यकता पड जाती है। प्रस्तुत सस्करण भी ग्रथ उपलब्ध नही होने से छपाया गया है। उनके भजन तो सकडो प्रकाशनो मे मिलेगे। कोई भजन सग्रह इनके पद बिना अधूरा ही समझा जावेगा।

अब तक के प्रकाशित पार्श्वपुराणो के सस्करणो मे यह सस्करण विशेष महत्व रखता है। इसमे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये गये हैं-

धारण को समझने के लिए और भी शब्दार्थ अपेक्षित
ने दिये हैं-वे भी बडे उपयोगी हैं। इस शब्दार्थ
श्री गुलाबचदजी जैन दर्शनाचार्य, एम ए

भँवरलाल न्यायतीर्थ

शुद्धि-पत्रक

प्रस्तुत पार्श्वपुराण मे प्रारभ के १६ पृष्ठो के शब्दार्थ नही छप सके हैं । अत निम्न प्रकार पाठ शुद्धि करके शब्दार्थ यथास्थान पढने का कष्ट करें ।

शुद्धाशुद्धि

पृष्ठ सख्या	पक्ति सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१	१५	।।१।।	।।३।।
२	२	।।१।।	।।४।।
१२	२२	भूताचलपथ	भूताचलपवत
२७	२१	शास्त्र भडार	शस्त्र भडार
८८	२०	द्रोणाचार्य जैमे	चारसौ (या सख्या विशेष) ग्रामो मेंप्रधान

पृष्ठो के अनुसार शब्दार्थ निम्न प्रकार हैं—

पृष्ठ १ भुवनतिलक=तीनलोक मे महान, दिवायर=सूर्य, गुणसायर=गुणों के समुद्र, नाग=हाथी, मयमत=मतवाला, उच्छेदन=उखाडनेवाले, रमाकत=अनत चतुष्टय रूप लक्ष्मी के पति, बोध=ज्ञान मार=कामदेव, मातग=हाथी, मृगेन्द्र=सिंह, मुखमयक=मुखरूपी चन्द्रमा, रक=गरीब, रजनीपति=चन्द्रमा, पन्नग=सांप ।

पृष्ठ २ शक्र=इन्द्र, चक्र=चक्रवर्ती, भवजलधि=ससार-समुद्र, तरड=नाव, विषधर=सांप, डर्के=काटे, व्याल=सांप, नेरे=नजदोक, वादि=व्यर्थ, उर कोप=हृदय रूपी खजाना, रक्र-घन=गभीर वे घन के समान, हेठ=हीन विगतविरोध=रोग को दूर करनेवाला ।

पृष्ठ ३ मनुज=मनुष्य, गृह=प्रासाद, गयंद=हाथी, नगर=शहर, निरखै=
उठावे, विमस्त=विनाश (वानिश्ता) गोप=श्रम।

पृष्ठ ४ मुनि न सीम=जिसकी न छुवावे, देहगेह=शरीररूपीघर, छिद्र=छेद,
भुजग=नाग, शान्ति=शक्ति, रमणा=रमणी, निरादर=अनादर, हीमन=
हीनते।

पृष्ठ ५ मवधाधि=पारस करस, प्रतपत=पात हुए (समान) यतन=यत्न।
पृष्ठ ६ नरनाथ=राजा, श्रुति=स्तुति, त्रुति-टूटी, गनराज=गणधर वारिधि=
समुद्र, धरम=धर्म, मतिभाजन=बुद्धि का बरतन।

पृष्ठ ७ उनहार=समान, दन=पाँ, मकरन्द=पराग (फूलों की केसर) मनोग=
सुन्दर मठान=प्रासाद कमान=प्रत्यंचा (डोरी), पावत=देखने हुए, द्वारजन=
द्वारपाली, जनगुम=मानवगुन, मुग्धाति=लगने की धति मैन=मैन (मदन),
तुरग=घोड़ी, चौपद=चौपाया, गोपुर=दरवाजा निधी=थाना।

पृष्ठ ८ सुरेश=सुरेन्द्र (इन्द्र), पटतर=उपमा, जेठो=बड़ा, मतिहीना=मन्दबुद्धि,
जलधि=समुद्र, नारजा (नारी)=स्त्री, अभिराम=सुन्दर, टेव=आदत, बंक=
टेढ़ो, मजै=मचै, लोहूरवच=लोहे का बख्तर, पाढा=नगाड़ा, नढै=पहिन करे,
देह=शरीर।

पृष्ठ ९ इष्ट=भला, नह=प्रेम, सेत (श्वेत)=सफेद, ससै=सन्देह, राम=राजा
बाहि=पास मे, अहनिश=रातदिन, सोमप्रकृति=सरल स्वभाव, भूषण-भूषित=
आभूषण पहने हुए, निहार=देख, विह्वल=व्याकुल।

पृष्ठ १० अवेव=अविवेका, मदनमत्त=काम म मतवाले, जरो जरो=जलो जलो
(नष्ट हो), यार=मित्र, रवि=सूर्य, नीर=पानी, परसै=स्पर्श करे, अम्बुज=कमल,
अलि=भौरा, अविचार=मूर्ख, कल=चैन, विसेस=विशेष व्याधि=रोग, सिक्षा-
वचन=शिक्षारूप वचन तूल=तुल्य (बराबर), जेठ=पति का बड़ा भाई (ज्येष्ठ)

पृष्ठ ११ अपसस=अप्रशंसनीय (बुराई योग्य), सतभाव=शीघ्र निवसै=बसे,
परपंच=मायाचार, भावज=भाई की स्त्री, वन-करनी=वन की हथिनी, रज =
रज समान हुआ, भजा=तोड़ डाला, रिपु=शत्रु।

पृष्ठ १२ विप्र=ब्राह्मण, द्विज=द्विज (ब्राह्मण), निग्रहजोग=पजा का पात्र, करुणा=दया, गरुड=ज, सयान=चतुर, खेद=दुःख, रिस=गुस्सा, खर=गधा, पीर=पीड़ा, बीथी=गली, ख्वारी=तिरस्कार, पुरवासी=नागरिक, बिलखत=रोवत, वदन=मुख ।

पृष्ठ १३ अधोमुख=ओंधेमुख, पान=पीना, ऊरधमुखी=ऊंचे मुखवाले, अघोर=अघोर=, सर्वभक्षी), दुविधि दया=स्वदया, परदया । परचै=परिचय, नख=नाखून, प्रनम्यो=नमस्कार किया, फनी=सांप, सहोदर=भाई, खल=दुष्ट, बरज्यो=मना किया दर्पण=काच, छार=राख ।

पृष्ठ १४ टेक=आदत, सुवास=सुगंधित, एकाकी=अकेला, विनयो=नम्रीभूत हुआ, सरल वायक=सरल वचन, सुखभास=मुख से बोले, बीनयो=बिनती की मलेस्मा=श्लेष्म (खासी या कफ), पिसुन=मूर्ख, पियूष=अमृत, दुर्जनहिततरु=दुष्ट की प्रीति रूपी वृक्ष ।

पृष्ठ १५ मूसन=चोरी करना या ठगना, कर आयो=पकड़ा गया, इन्द्रायन=गड़दूवा (कड़वे फल की बेल), विनठ्ठी=नष्ट हुई, कमलपत्र परसग=कमल के पत्ते की सगति करके, दिठ्ठी=दिखाई पड़ी, मुक्ताफल=मोती ।

पृष्ठ १६ पत्र पुंज=पत्तों का ढेर, सिकताथल—बालुका प्रदेश, तुंग=ऊंचे, तमाल=ताड के वृक्ष, कपि=बन्दर, उतंग=ऊंचे, कुरंग=हरिण, मद-जीवन-झरना=मद जल का झरना, तम वरन=काला, जगम=चलता फिरता, मुसलोपम=मूसल के समान, धवल=सफेद, गंड=गाल, दह—कादो=झील या कीचड, अंग लेय=शरीर के लपेटले ।



— कविवर भूधरदासजी विरचित —

पार्श्व-पुराण

श्रीपार्श्वनाथजी की स्तुति ।

दोहा ।

मोह-महा-तम-दलन दिन, तपलक्ष्मी भरतार ।
ते पारस परमेस मुझ, होहु सुमतिदातार ।। १ ।।
वामानंदन-कलपतरु, जयो जगत-हितकार ।
मुनिजन जाकी आस करि, जाचैं सिवफल सार ।।२।।

छप्पय ।

भुवनतिलक भगवंत, सतजन-कमल-दिवायर ।
जगतजतु-बान्धव अनंत, अनुपम गुणसायर ।।
राग-नाग-मयमंत,-दंत-उच्छेपन वलि अति ।
रमाकंत अरहंत, अतुल जसवन्त जगतपति ।।
महिमा महंत मुनिजन जपत, आदि अंत सबको सरन ।
सो परमदेव मुझ मन बसो, पासनाह मंगलकरन ।।३।।
विमल-बोध-दातार, विश्व-विद्या-परमेसर ।
लछमीकमलकुमार, मार-मातंग-मृगेसर ।।
मुखमयक अवलोकि, रंक रजनीपति लाजै ।
नाम-मंत्र-परताप, पाप पन्नग डरि भाजै ।।

जय अस्वसेन-कुल-चन्द्र जिन, सक्र-चक्र-पूजित-चरन ।
तारो अपार भव-जलधितै, तुम तरंड तारन तरन ।।४।।

बाघ सिंह बम होहिं, विषम विषधर नहि डंकै ।
भूत प्रेत बेताल, ब्याल बैरी मन संकै ।।
साकिनि डाकिनि अगनि, चोर नहिं भय उपजावै ।
रोग सोग सब जाहिं, विपत नेरे नहि आवै ।।
श्रीपार्सदेवके पदकमल, हियै धरत निज एकमन ।
छूटै अनादि बधन बधे, कौन कथा विनसै विघन ।।५।।
चहुँगति भ्रमत अनादि, वादि बहुकाल गमायो ।
रही सदा सुख-आस, प्यास, जल कहूं न पायो ।।
सुख–करता जिनराज, आज लौ हियै न आये ।
अब मुझ माथे भाग, चरन–चिंतामनि पाये ।।
राखौं सभाल उर कोषमै, नहिं बिसरौं पल रक-धन ।
परमावचोर टालन निमित, करौं पार्सजिनगुनकथन ।।

चौपई [१५ मात्रा]

बन्दौं तीर्थंकर चौबीस । बन्दौ सिद्ध बसै जगसीस ।
बन्दौ आचारज उवझाय । बन्दौं परम साधु के पाय ।७।
ये ही पद पाचौं परमेठ । ये ही साच और सब हेठ ।
ये ही मगल पूज्य अतीव । ये ही उत्तम सरन सदीव ।८।
बदौं जिनवानी मन सोध । आदि अत जो विगत-विरोध ।
सकलवस्तु दरसावनहार । भ्रमविषहरन औषधी सार ।९।

दोहा।

बरतो जग जयवंत नित, जिनप्रवचन अमलान।
लोक-महलमें जगमगै, मानिक—दीप समान ॥१०॥
हरो भरम दारिद्र दुख, भरो हमारी आस।
करो सारदा लच्छमी, मुझ उर अंबुज वास ॥११॥

चौपई।

बन्दौं वृषभसेन गनराज। गुरु गौतम भवजलधिजहाज।
कुंदकुंद-मुनि-प्रमुख सुपंथ। जे सब आचारज निरग्रंथ।१२।
जैनतत्त्व के जाननहार। भये जथारथ कथक उदार।
तिनके चरनकमल कर जोरि। करौं प्रनाम मान-मद-छोरि ।।

दोहा।

सकल पूज्य-पद पूजकैं, अलपबुद्धि अनुसार।
भाषा पार्सपुरान की, करौं स्वपरहितकार ॥१४॥

चौपई

जिनगुनकथन अगमविस्तार। बुधिबल कौन लहैं कवि पार।
जिनसेनादिक सूरि महंत। बरनन करि पायो नहिं अंत।१५।
तो अब अलपमति जन और। कौन गिनतिमें तिनकी दौर।
जो बहुभार गयंद न बहै। सो क्यों वोन ससक निरबहै।१६।

दोहा

कह जानें ते यो कहैं, हम कछु बरन्यो नाहिं।
जे कह जानें ही नहीं, ते अब कहा कहाहिं ॥१७॥
नभ विलस्त नापै नहीं, चुलू न सागर तोय।
श्रीजिनगुनसंख्या सुजस, त्यों कवि करै न कोय ॥१८॥

चौपई

पै यह उत्तम नर अवतार। जिनचरचा बिन अफल अ....
सुनि पुरान जो घुमैं न सीस। सो थोथे नारेल सरीस।१६।
जिनचरित्र जे सुनैं न कान। देहगेह के छिद्र समान।
जामुख जैनकथा नहिं होय। जीभ भुजगनिको बिल सोय।२०।
या प्रकार यह उद्यम जोग। कहत पुरानन पडित लोग।
जिनगुनगान सुधारसन्याय। सेवत अलप जनम-जुर-जाय।२१।

घनाक्षरी।

जौ लौं कवि काव्यहेत आगम के अच्छर कौ,
अरथ विचारै तौलौं सिद्धि सुभ घ्यान की।
और वह पाठ जब भूपर प्रगट होय,
पढ़ै सुनैं जोव तिन्है प्रापति ह्वै ग्यानकी॥
ऐसें निज-परकौं विचार हित हेतु हम,
उद्यम कियौ है नहिं बान अभिमानकी।
ग्यानग्रस चाखा भई ऐसी अभिलाखा अब,
करू जोरि भाखा जिन पारसपुरानकी॥२२॥
आगैं जैन ग्रन्थनि के करता कवीन्द्र भये,
करी देवभासा महाबुद्धिफल लीनो है।
अच्छर–मिताई तथा अर्थ की गभीरताई,
पदललिताई जहा आई रीति तीनो है॥
काल के प्रभाव तिन ग्रन्थनिके पाठी अब,
दोमत अल्प ऐसो, आयौ दिन हीनो है।

तातै इह समै जोग पढै वालबुद्धि लोग ।
पारसपुरानपाठ भाषावद्ध कीनो है ॥२३॥

दोहा ।

सक्तिभक्तिबल कविनपै, जिनगुन बरनै जाहि ॥
मैं अब बरनौं भक्तिवस, सक्ति मूल मुझ नाहि ॥२४॥
बरनौं पूरवकथितक्रम, ग्रंथअर्थ अवधारि ।
सुगमरूप सछेपसौं, सुनो सबहि नरनारि ॥२५॥

चौपई ।

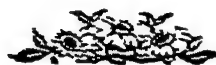
मगधदेस देसनि-परधान । राजगृही नगरी सुभथान ॥
राज करै श्रेनिक भूपाल । नीतवंत नृप पुन्यविसाल ॥२६॥
छायक-सम्यकदरसनसार । रूप सील सबगुनआधार ॥
तिनके घर अतेवर घना । पटरानी रानी चेलना ॥२७॥
जाके गुन बरनत बहु भाय । बिरिया लगै कथा वढि जाय॥
एक दिना निज सभा नरेस । निवसै जैसै सुरग-सुरेस॥२८॥
रोमाञ्चित वनपालक ताम । आय राय प्रति कियौ प्रनाम ॥
छह रितुके फल फूल अनूप । आगे धरे अनूपम रूप ॥२९॥
हाथ जोरि विनवै वनपाल । विपुलाचल पर्वत के भाल ॥
वर्द्धमान तीर्थंकर आप । आये राजन-पुन्यप्रताप ॥३०॥
महिमा कछु बरनी नहिं जाय । इंद्रादिक सेवैं सब पाय ॥
समोसरनसपतिकी कथा । मोपै कही जाय किमि तथा ॥३१॥
माली वचन सुनै सुखदाय । हरष्यौ राजा अंग न माय ॥
दीनै भूषन वसन उतार । बनमाली लीनै सिरधार ॥३२॥

सात पैंड़ गिरिसम्मुख जाय। कियौ परोच्छ विनय नरराय॥
आनंदभेरि नगरमें दई। सबहीकों दरसनरुचि भई॥३३॥
चल्यो संग पुरजन समुदाय। वदे वर्द्धमान जिनराय॥
लोकोत्तर लछमी अवलोक। गये सकल नृपतिके सोक॥३४॥
थुति आरभ करी बहुभाय। बार बार भुवि सीस नवाय॥
गोतम गुरु पूजे कर जोरि। नरकोठें बैठ्यौ मद छोरि॥३५॥
कियौ प्रश्न श्रेणिक बड भूप। प्रभु पारस निजकथा अनूप॥
जाके सुनत पाप छय होय। कहिये देव कृपाकरि सोय।३६।
तब गनधर बोले हितकाज। जोग प्रस्न कीनो नरराज॥
सुन पुनीत पारसजिनकथा। सफल होय मानुषभव जथा।३७।

दोहा।

इहि विधि जो मगधेस प्रति, कह्यौ चरित गनराज॥
ताही क्रम आये कहत, आचारज परकाज॥ ३८॥
तिनहीके अनुसार अब, कहूं किमपि विस्तार॥
जैनकथा कलपित नहीं, यह जानो निरधार॥ ३९॥
जैनवचनवारिधि अगम, पानी अर्थ अनूप॥
मतिभाजन भर भर लिये, यह जिनआगमरूप॥ ४०॥

इति पीठिका।



पहला अधिकार

चौपई।

जबूदीप दिपै इह सार। सूरज मंडल की उनहार॥
मध्य सुमेरुकर्णिकाभास। बने छेत्र दल दीरघ जास॥४१॥
तारागन मकरद मनोग। सुरनरसग भ्रमरकुलजोग॥
लवनसमुद्र सरोवरथान। दीप किधौं यह कमल महान॥४२॥
लच्छ महा जोजन विस्तार। बसै विविध-रचना-आधार॥
दच्छिन भरत धनुष-सठान॥ पर्वत फणाच नदीजुग बान॥४३॥
मानों सागरप्रति अनुमानि। तानत तीर छार-जल जानि॥
ऐसी भांति विराजत खेत। छहो-खंड-मंडित छवि देत॥४४॥
पांच मलेच्छ बसै तामांहि। धर्म कर्म कछु जानै नांहि॥
उत्तम आरजखंडमझार। देस सुरम्य बसै मनहार॥४५॥
जनकुल जहां रहैं बहु भांति। पास पास सोहैं पुर-पांति॥
सरवर नदी सैल उद्यान। वन उपवनसौं सोभामान॥४६॥
तहां नगर पोदनपुर नाम। मानों भूमितिलक अभिराम॥
देवलोककी उपमा धरै। सब ही विध देखत मनहरै॥४७॥

दोहा।

तुंग कोट खाई सजल, सघन बाग गृह-पांति॥
चौपथ चौक बजारसौं, सोहै पुर बहुभांति॥४८॥
ठाम ठाम गोपुर लसै, वापी सरवर कूप॥
किधौं स्वर्ग ने भूमिकौं, भेजी भेंट अनूप॥४९॥

चौपई।

जैनी प्रजा जहां परवीन। बसै दानपूजाव्रतलीन।
जैनभवन ऊंचे अति बने। सिखर धुजासौं सोभित घने ॥५०॥
इहि विधि पुरसोभा अधिकार। वरनन करत लगै बहुबार।
राज करै राजा अरविंद। सोहै मानो स्वर्ग सुरिंद ॥५१॥
पालै प्रजा कुमति जिन दली। नीतिबेलमंडित भुजबली।
दयाधाम सज्जन गंभीर। गुनरागी त्यागी रनधीर ॥५२॥
तिस भूपतिकै विप्र सुजान। विस्वभूति मंत्री बुधिवान।
ताकै तिया अनूदरि सती। रूपसील-गुन-लच्छनवती ॥५३॥
दोय पुत्र तिनकै अवतरे। पापपुन्य की पटतर धरे।
जेठो नंदन कमठ कुपूत। दूजो पुत्र सुधी मरुभूत ॥५४॥

दोहा।

जेठो मतिहेठो कुटिल, लघुसुत सरल सुभाय।
विष अमृत उपजे जुगल, विप्र जलधिके जाय ॥ ५५ ॥
बड़े पुत्रने भारजा, व्याही वरुना नाम।
लघुने बरी विसुन्दरी, रूपवती अभिराम ॥ ५६ ॥

चौपई।

यौं सुख निवसै बांधव दोय। निज निज टेव न टारै कोय।
बक्र चाल विषधर नहिं तजै। हंस वक्रता भूल न भजै ॥५७॥

दोहा।

उपजे एकहि गर्भसौं, सज्जन दुर्जन येह।
लोह-कवच रच्छा करै, खांडो खंडै देह ॥५८॥

चौपई।

अति सज्जन मरुभूति-कुमार। नीति-शास्त्रको जाननहार ॥
सबकों इष्ट सकलगुनगेह। राजा प्रजा करै सब नेह ॥५९॥
एक दिना भूपति-मंत्रीस। सेत बाल देख्यौ निज सीस ॥
उपज्यो विप्र-हिये वैराग। जान्यौ सब जग अथिर सुहाग ॥६०

दोहा।

जरा मौतकी लघु बहिन, यामैं ससै नाहि ॥
तौ भी सुहित न चितवै, बडी भूल जगमाहि ॥६१॥

चौपई।

यह विचार मंत्री मनमाहि। निज सुत सौंपि रायकी बांहि ॥
सुगुरु-साखि जिन-चारित लियौ। वनोवास आतमहित कियौ।
अब मरुभूति विप्र सुख करै। अहनिस नीतिपंथ पग धरै ॥
राजा प्रीति करै बहु भाय। सोमप्रकृति सबकौं सुखदाय ॥६३
एक समय आपन अरविंद। मंत्री सेनासहित नरिंद ॥
राय वज्रवीरजपर चढ़े। क्रोधभाव उरमैं अति बढ़े ॥६४॥
पीछे कमठ निरकुश होय। लग्यौ अनीति करन सठ सोय ॥
जो मन आवै सो हठ गहै। 'मैं राजा' सबसौं इम कहै ॥६५
एक दिना निजभ्रातानारि। भूषन-भूषितरूप निहारि ॥
रागअंध अति विह्वल भयौ। तीच्छन कामताप उर तयौ ॥६६
महा मलिन उर बसै कुभाव। दुर्गतिगामी जीव सुभाव ॥
पुत्री सम लघुभ्रातानारि। तहां कुदिष्ट धरी अविचारि ॥६७

दोहा।

पाप कर्मको डर नहीं, नहीं लोकको लाज ॥
कामी जनकी रीति यह, धिक तिस जन्म अकाज ॥६८॥
कामी काल अकाजमें, हो हैं अन्ध अवेव ॥
मदनमत्त मदमत्त सम, जरो जरो यह टेव ॥६९॥
पिता नीर परसै नहीं, दूर रहै रवि यार ॥
ता अंबुजमें मूढ अलि, उरझि मरै अविचार ॥७०॥
त्यों ही कुविसनरत पुरुष, होय अवस अविवेक ॥
हितअनहित सोचै नहीं, हिये विसनकी टेक ॥७१॥

चौपई।

वनमें सघन लतागृह जहां। गयौ कमठ कामातुर तहां ॥
बड़ी वेदना कल नहिं परै। छिन छिन काम-विथा दुख करै ॥
कमठ सखा कलहंस विसेख। पूछत भयौ दुखी तिह देख ॥
कौन व्याधि उपजी तुम अंग। अतिव्याकुल दीसत सरवंग ॥
तब तिन लाज छोरि सब सही। मनकी बात मित्रसौं कही ॥
सुनि कलहंस कथा विपरीति। सिच्छावचन कहे करि प्रीति ॥
अति अजोग कारज इह वीर। सो तुम चित्यौ साहस-धीर ॥
परनारीसम पाप न आन। परभवदुख इह भव जस-हान ॥७५
इस ही वंछासौं अघ भरे। रावण आदि नरकमें परे ॥
जगमें जेठ पितासमतूल। बात कहत लाजै नहिं भूल ॥७६॥
तातै यह हठ भूल न करो। सुहित सीख मेरो मन धरो ॥
लोकनिंद कारज यह जान। धर्मनिंद निहचै उर आन ॥७७

दोहा ।

यों कलहंस अनेक विध, दई सीख सुखदैन ।।
ते सब कमठकुशीलप्रति, भये विफल छिनबैन ।। ७८ ।।
आयुहीन नर को यथा, औषधि लगै न लेश ।।
त्यों ही रागी पुरुष प्रति, वृथा धरम-उपदेश ।। ७९ ।।
बोल्यो तब कामी कमठ, सुनो मित्र निरधार ।।
जो नहिं मिलै विसुंदरी, तो मुझ मरन विचार ।। ८० ।।
देख कमठको अधिक हठ, कुमति करी कलहंस ।।
आय कहै ता नारिसों, झूठ वचन अपशंस ।। ८१ ।।

अडिल्ल छंद ।

सुन विसुंदरी आज कमठ वनमें दुखी ।
सु ताको सुध लेहु होय जिहिं विधि सुखी ।।
सुनत ही सतभाव गई वनमें तहाँ ।
निवसै कर परपंच कमठ कपटी जहाँ ।। ८२ ।।

दोहा ।

कुवचन कर भीतर लई, वनिता गई अजान ।
राग वचन भाखे विविध, दुराचारको थान ।। ८३ ।।

चाल छंद ।

गहपानी कमठ कलंकी । अघसों मनसा नहिं शंकी ।
भावज तन-फरसो रंगो । निज शीलसरोवर भंगो ।। ८४ ।।
रिपु जीत विजयजस पायो । अरविंद नृपति घर आयो ।।
जे कर्म कमठने कीने । राजा सब ते सुन लीने ।। ८५ ।।

मंत्री मरुभूति बुलायो । ताकों सब भेद सुनायो ।।
कहु विप्र सुधी क्या कीजे । क्या दंड इसे अब दीजे ।।८६।।
दुज कहे सरल परिनामी । अपराध छिमा कर स्वामी ।।
जो एक दोष सुन लीजे । ताकों प्रभु दंड न दीजे ।। ८७ ।।
तब भूप कहै सुन भाई । जो निग्रहजोग अन्याई ।।
तातें करुना किम होहै । यह न्याय नृपति नहिं सोहै ।।८८।।
तातें गृह गच्छ सयाने । मत खेद हियें कछु आने ।।
ऐसें कह विप्र पठायौ । तिस पीछे कमठ बुलायौ ।।८९।।
अति निंदो नीच कुकर्मी । जानो निरधार अधर्मी ।।
राजा अति ही रिस कीनीं । सिर मुंड दंड बहु दीनीं ।।९०।।
मुखकें कालोस लगाई । खर रोप्यौ पीर न आई ।।
फिर सारे नगर फिरायौ । प्रति वीथी ढोल बजायौ ।।९१।।
इस भांति कमठकी ख्वारी । देखें सब ही नरनारी ।।
पुरवासी लोक धिकारें । बालक मिलि कंकर मारें ।।९२।।
यो दंड दियौ अति भारी । फिर दीनौं देश निकारी ।।
जो दीरघ पाप कमाये । ततकाल उदै बहु आये ।। ९३ ।।

दोहा ।

इहि विधि फूल्यौ पाप तरु, देख्यौ सब संसार ।।
आगे फल है नरक फल, धिक दुर्विसन असार ।। ९४ ।।

चौपई ।

महादंड भूपति जब दयौ । कमठ कुसील दुखी अति भयौ ।।
बिलखत वदन गयौ चल तहां । भूताचलपर्वत है जहां ।।९५।।

रहैं तहां तपसी-समुदाय। ग्यान बिना सब सोखैं काय ॥
केई रहे अधोमुख झूल। धूंआं पान करैं अघमूल ॥९६॥
केई ऊरधमुखी अघोर। देखें सबै गगनकी ओर ॥
केई निवसैं ऊरध बाँहि। दुविध दयासौं परचै नाहि ॥९७॥
केई पंच अगनि झल सहैं। केई सदा मौनमुख रहैं ॥
केई बैठे भसम चढाय। केई मृगछाला तन लाय ॥९८॥
नख बढाय केई दुख भरैं। केई जटा—भार सिर धरैं ॥
यों अग्यान तपलीन मलीन। करैं खेद परमारथ हीन ॥९९॥
तिनमे एक तापसीनाथ। प्रनम्यौ ताहि धरे सिर हाथ ॥
तिन असीस दे आदर कियौ। दिच्छादान कमठ तहँ लियौ १००
करन लग्यौ तब कायकलेस। उर वैराग विवेक न लेस ॥
ठाढो भयौ सिला कर लिये। किधौं फनी फन ऊँचो किये ।१०१
मंत्री बंधवकी सुधि पाय। राजासौं विनयो इमि आय ॥
भूताचलपर्वतकी ओर। भ्राता कमठ करै तप घोर ॥१०२॥
जो नरनायक आग्या होय। देखूं जाय सहोदर सोय ॥
पूछै नृपति कौन तप करै। भो प्रभु तापसके व्रत धरै ॥१०३॥
एक बार मिलि आऊँ ताहि। राय कहै मंत्री मत जाहि ॥
खलसौं मिलै कहा सुख होय। विषधर भेंटे लाभ न कोय ॥१०४
बरजो रह्यो न बारबार। महा सरलचित विप्रकुमार ॥
भ्रातमोहबस उद्यम कियौ। कोमल होत सुजनको हियौ ।१०५

दोहा

दुर्जनदूखित संतकौ, सरल सुभाव न जाय।
दर्पणकी छवि छारसौं, अधिकहि उज्ज्वल थाय ॥१०६॥

चौपई ।

फेरि दुष्ट भीलनतै मिल्यो । भयो चोर घर मूसन[1] हिल्यौ ।।
पाप करत कर आयो[2] जबै । बांधि बुरी विधि मारयौ तबै ।।

दोहा ।

जैसी करनी आचरै, तैसो हो फल होय ।
इन्द्रायनकी बेलिकै, आंब न लागै कोय ।।११८।।

चौपई ।

एक दिना अरविंद नरिंद । पूछे कर जुग जोरि मुनिंद ।।
भो प्रभु मुझ मंत्री मरुभूत । क्यो नहिं आयौ ब्राह्मनपूत।।११९।
यह सुनि अवधिवत मुनिराय । सब बिरतंत कह्यौ समुझाय ।।
राजा मन अति भयौ मलीन । हा मन्त्री सज्जनता लीन ।१२०
बरजत गयौ दुष्टके पास । कुमरन लह्यौ सह्यौ बहु त्रास ।।
होनहार सोई विधि होय । ताहि मिटाय सकै नहिं कोय।।।१२१
यों विचारि मन सोक मिटाय । साधु पूजि घर आये राय ।।
यह सुनि दुष्टसग परिहरो । सुखदायक सतसंगति करो ।।१२२

छप्पय ।

तपे तवापर आय, स्वातिजलबूंद विनट्ठो[4]।
कमलपत्रपरसंग,[5] वही मोतीसम दिट्ठो[6]।।
सागरसीप समीप, भयो मुक्ताफल[7] सोई ।
सगतको परभाव, प्रगट देखो सब कोई ।।
यों नीचसंगतै नीचफल, मध्यमतै मध्यम सही ।।
उत्तमसंजोगतै जीवको, उत्तमफलप्रापति कही ।।१२३।।

इतिश्रीपार्श्वपुराणभाषाया मरुभूतिभववर्णन

१ मूसन= चोरीकरना या ठगना २ कर आयो
४ छीजरी - नष्ट हुई ५ कमलपत्र परसग = कमल

दूसरा अधिकार

दोहा ।

अस्वसेन-कुल-चद्रमा, बामा-उर-अवतार ।
बदौं पारसपदकमल, भविजनअलि आधार ॥१॥

पद्धरी छद

इसभांति तजे मरुभूति प्रान । अब सुनो कथा आगे सुजान ॥
अतिसघन सल्लकी बन विशाल । जह तरुवर तुंग तमाल ताल ॥
बहु बेलजाल छाये निकुंज । कहिं सूखि परे तिन पत्रपुंज ॥
कहिं सिकताथल कहिं सुद्ध भूमि । कहिं कपि तरुडारन रहे झूमि
कहिं सजलथान कहिं गिरि उतग। कहिं रोछ रोज विचरैं कुरंग ॥
तिस थानक आरतध्यानदोष । उपज्यौ वनहस्ती वज्रघोष ॥
अति उन्नत मस्तकसिखर जास । मद-जीवनझरना झरहिं तास
दीसै तमवरन विसाल देह । मनों गिरिजंगम दूसरो येह॥५॥
जाको तन नख शिख छोमवत । मुसलोपम दीरघ धवल दत॥
मदभीजे झलकैं जुगल गंड । छिन छिनसौं फेरैं सुंड दड॥६॥
जो बरुना नामै कमठ नार । पोदनपुर निवसै निराधार ॥
सो मरि तिहि हथिनी हुई आन । तिससग रमै नित रजमान॥
कबही बहु खडै बिरछबेलि । कबही रजरंजित करहि केलि ।
कबही सरवरमै तिरहि जाय । कबही जल छिरकै मत्ताकाय॥
कबही मुख पंकज तोरि देय । कबही दह-कादो अंग लेय॥८॥

दोहा।

यो सुछद क्रीडा करै, बरुना-हथिनी सत्थ।
बन निवसै बारण[1] बली, मारण-सील समत्थ[2]॥ १०॥

चौपई।

एक दिवस अरविंद नरेस। ज्यों विमानमैं स्वर्ग सुरेस॥
यो निजमहलन निवसै भूप। देख्यौ बादल एक अनूप॥११॥
तुंग[3] सिखर अति उज्जल महा। मानो मंदिर ही बनि रहा॥
नर[4]वै निरखि चितवै ताम। ऐसो ही करिये जिनधाम॥१२॥
लिखन हेत कागद कर लयौ। इतने सो सरूप मिटि गयौ॥
तब भूपति उरकरै विचार। जगतरीति सब अथिर असार।१३।
तन धन राज-संपदा सबै। यो ही विनसि जायगी अबै॥
मोहमत्त प्रानी हठ गहै। अथिर वस्तुकौं थिर सरदहै॥१४॥
जो पररूप पदारथजाति। ते अपने मानै दिनराति॥
भोगभाव सब दुखके हेत। तिनहीकौं जानै सुखखेत॥१५॥
ज्यों माचै[5]-कोदो[6] परभाव। जाय जथारथ दिष्टि स्वभाव॥
समझे पुरुष औरकी और। त्यों ही जगजीवनकी दौर।१६।
पुत्र कलत्र[7] मित्रजन जेह। स्वारथ लगे सगे सब एह॥
सुपनसरूप सकल संभोग। निजहितहेत विलब न जोग।१७।
यो भूपति वैराग विचारि। डारी पोट परिग्रह भारि॥
राजसमाज पुत्रकौं दियौ। सुगुरुसाखि नृप चारित लियौ।१८।
धरी दिगंबरमुद्रा सार। करै उचित आहार विहार॥

---

१. हाथी २. समर्थ ३. ऊंचा ४ राजा ५ उन्मत्त ६ एकधान ७ स्त्री।

बारहविध दुद्धर तपलीन । छहोकाय पोहर[1] परवीन ।।१९।।
एकसमय अरविंद मुनीस । सारथवाहीके सग ईस ।।
सिखर सुमेरु बदनाहेत । चले ईरज्यापथ पग देत ।।२०।।
गये सल्लकी बनमै लघ । तहा जाय उतरयो सब सघ ।।
निजसिज्झाय[2] समय मन लाय । प्रतिमाजोग दियो मुनिराय।२१
तावत वज्रघोष गजराज । आयौ कोपि कालसम गाज ।
सकलसघमै खलबल परी । भाजे लोग कीकि[3] धुनि करी।।२२।।
गजके धकै परयो जो कोय । सो प्रानी पहुच्यौ परलोय ।।
मारे तुरग[4] तिसाये गैल । मारे मारगहारे बैल ।। २३ ।।
मारे भूखे करहा[5] खरे । मारे जन भाजे भय भरे ।।
इहिविध हाथी करत सँघार । मुनि सनमुख आयौ किलकार ।२४
अति विकराल रोषविष भरौ । मुनि मारनकौ उद्यम करौ ।।
साधु सुदर्सन मेरु समान । सिरीवच्छ लच्छन उर थान ।२५।।
सो सुचिन्ह गज देख्यौ जाम । जाती-सुमरन उपज्यौ ताम ।।
ततखिन सांत भयौ गजईस । मुनिके चरन धरयौ निज सीस ।
तब मुनि चवै[6] मधुर धुनि महा । रे गयद[7] यह कीनौं कहा।।
हिंसा करम परम अघहेत । हिंसा दुरगतिके दुखदेत ।।२७।।
हिंसासौ भमिये ससार । हिंसा निजपरकौं दुखकार ।।
तै ये जीव विधु से आय । पातकतै न डरयौ गजराय ।।२८।।
देखि देखि अघके फल कौन । लई विप्रतै कुजर[8]-जौन[9]।।

१ पीर हरने वाले । २ स्वाध्याय ३ किलकारी ४ घोड़ा ५ ऊंट ६ कहै ७ हाथी ८ हाथी ९ योनि ।

तू मंत्री मरुभूति सुजान । मै अरविंद क्यो न पहिचान ॥२९॥
धर्मविमुख आरतके दोष । पसु-परजाय लई दुखकोष ॥
अब गजपति ये भाव निवारि । धर्मभावना हिरदै धारि ॥३०
सम्यकदरसन-पूरब जान । पालि अणुव्रत जब लौं प्रान ॥
सुन करिंद[1] उर कोमल थयौ । किये पाप निज निदत भयौ।३१।

दोहा ।

फिर गुरु-पाँयन सिर धरचौ, धर्म गहन उर हेत ॥
तब सत्यारथ धर्मविधि, कही साधु समचेत ॥३२॥

चौपई ।

सुन हस्ती सासन अनुकूल । सकल धरमको दर्सन मूल ॥
सब गुनरत्नकोष यह जान । मुक्ति-धौरहर[2]-धुर[3]-सोपान[4]।३३
तातै यह सबहीको सार । या बिन सब आचरन असार ॥
जो सरदहै औरकी और । सो मिथ्यातभावकी दौर ॥३४॥
दोष अठारह-वरजित देव । दुविधसंगत्यागी[5] गुरु एव ।
हिंसावरजित धरम अनूप । यह सरधा समकितको रूप ।३५।

दोहा ।

सकादिक दूषन बिना, आठो अग समेत ।
मोख-बिरछ-अंकूर यह, उपजै भवि-उर-खेत ॥३६॥

चौपई ।

अंगहीन दरसन जगमाँहि । भवदुखमेटन समरथ नाँहि ॥
अच्छरऊन[6]मत्र जो होय । विषबाधा मेटै नहिं सोय ॥३७॥

---

१ हाथी २. महल ३ ध्रुव ४. सीढी ५. परिग्रह त्यागी ६. कम ।

परमेष्ठि परमपद ध्यावै । ऐसें गज काल गमावै ।।
एकै दिन अधिक तिसायौ । तब वेगवती तट आयो ।।४७।।
जल पीवन उद्यम कीधौ । कादो द्रह कुंजर बीधौ ।।
निहचै जब मरन विचारौ । सन्यास सुधी[1] तब धारौ ।।४८।।
सो कमठ कलंकी मूवो । ता बन कुरकट अहि हूवो ।।
तिन आय डस्यौ गज ग्याता । यह बैर महादुखदाता ।।४९।।

दोहा ।

मरन कर्यौ गजराज तब, राखे निर्मल भाव ।
सुरग बारवै सुर भयौ, देखौ धर्मप्रभाव ।।५०।।

चौपई ।

तहां स्वयप्रभ नाम विमान । ससिप्रभदेव भयो तिंहि थान ।।
अवधि जोड सब जान्यौ देव । व्रतकौ फल पूरबभव भेव ।५१।
जिनसासन ससौ बहुभाय । धर्मविषै दिढता मन लाय ।।
सदा सासते श्रीजिनधाम । पूजा करी तहां अभिराम ।।५२।।
महामेरु नन्दीसुर आदि । पूजे तहा जिनबिंब अनादि ।
कल्यानक-पूजा विस्तरै । पुन्य भंडार देव यो भरै ।।५३।।
सोलह सागर आयु प्रमान । साढ़े तीन हाथ तन जान ।
सोलह सहस वर्ष जब जांहि । असन[2]-चाह उपजै उरमांहि।५४।
अनुपम अमृतमय आहार । मनसौं भुंजै देवकुमार ।
आठदुगुन[3] पख बीतै जास । तब सो लेय सुगंध उसास ।५५।
अवधि चतुर्थ अवनि परजत । यही विक्रियाबल विरतत ।

१ समझदार २ भोजन ३ सोलह ।

अवधिछेत्र जावत परमान । होय विक्रिया तावत मान ।५६।

दोहा ।

वदनचद्र[1] उपमा धरै, विकसित वारिज[2] नैन ।
अग अग भूषन लसै, सब बानक[3] सुखदैन ।।५७।।
सुन्दर तन सुन्दर वचन, सुन्दर स्वर्गनिवास ।
सुन्दर वनितामडली, सुन्दर सुरगन दास ।।५८।।
अणिमा महिमा आदि दे, आठ रिद्धि फल पाय ।।
सुर सुछदक्रीडा करै, जो मन वरतै आय ।।५९।।
सुनत गोत-सगीत-धुनि, निरखत निरत रसाल ।।
सुखसागरमै मगन सुर, जात न जानै काल ।।६०।।
लोकोत्तम सब सपदा, अनुपम इन्द्री–भोग ।।
सुफल फल्यौ तपकल्पतरु, मिल्यौ सकल सुखजोग ।।६१।
जैवतो बरतो सदा, जैनधर्म जग माँहि ।
जाके सेवत दुखसमुद, पसुपछो तिर जाँहि ।।६२।।

छन्द ।

इसही जम्बूदीप, पूर्व विदेह मझारैं ,
पुहकलावतो देस, विकसत नैन निहारै ।।६३।।
तहा विजयारध नाम, सौहै सैल रवानो[4] ।
उज्जल वरन विसाल, रूपमई गिरिरानो[5] ।।६४।।
जोजन परम पचास, भूमिविसै चौड़ाई ।

१ चन्द्रमुख २ कमल ३ बनाव । ४ सुन्दर ५ पहाड़ो का राजा

तुंग[1] पचीस प्रमान सोभा कही न जाई ॥६५॥
चौथाई भूमांझ, नौ सिर कूट विराजै।
सिद्धसिखर जिनधाम, मणिप्रतिमा तहां छाजै ॥६६॥
उत्तर दक्षिन ओर, श्रेणी दोय जहां हैं।
दोय गुफा गिरि हेठ[2], अति अधियार तहा है ॥६७॥
तापर स्वर्ग समान, लोकोत्तम पुर सोहै।
वापी-कूप-तलाव,–मण्डित सुर मनमोहै ॥६८॥
विद्युतगति भूपाल, न्याय प्रजा प्रतिपालै।
नीतिनिपुन धर्मज्ञ, संत सुमारग चालै ॥६९॥
विद्युतमाला नांव, ता घर नारि सयानी।
मानौं मनमथ[3] जोग, आय मिली रतिरानी ॥७०॥
तिनकै सो सुर आय, पुत्र भयौ बड़भागी।
अगनिवेग तसु नाम, अति सुन्दर सौभागी ॥७१॥
सोमप्रकृति[4] परवीन, सकलसुलच्छनधारी।
जिनपदभक्ति पुनीत, सबहीकौं सुखकारी ॥७२॥
राजसंपदा भोग, भुंजत पुन्यनियोगैं।
एक दिना इन साधु, भेंटे भाग सजोगै ॥७३॥
स्रवन सुन्यौ उपदेश, भर जोबन वैराग्यौ ॥
आसनभव्य[5] कुमार, संजमसौं अनुराग्यौ ॥७४॥
तजि परिग्रह गुरुसाख, पंचमहाव्रत लीनैं।

---

१ ऊंचा २ पास ३, कामदेव ४ सौम्य स्वभावी ५ निकट भव्य।

दुद्धर तप आराध, रागादिक कृस कीनें ॥७५॥
छीन किये परमाद, विचरैं एकविहारी।
बारह अंग समुद्र, पार भयौ श्रुतधारी ॥७६॥
एक दिवस धरि जोग, हिमगिर कंदर[1] माहीं।
निवसैं[2] आतमलीन, बाहरकी सुधि नाहीं ॥७७॥

दोहा।

कुरकट नामा कमठचर, दुष्टनाग दुखदाय।
सो मरि पंचम नरकमैं, पर्‌यौ पापवस जाय ॥७८॥
छेदन भेदन आदि बहु, तहां वेदना घोर।
सहस जीभसौं वरनिये, तऊ न आवै ओर ॥७९॥
ऐसे दुखमैं कमठ जिय, कीनों पूरन आव।
सत्रह सागर भुगतकैं, निकस्यौ क्रूरसुभाव ॥८०॥

चौपई।

वैर भाव उरतैं नहिं टर्‌यौ। फेरि आय अजगर अवतर्‌यौ॥
संसकारवस आयौ तहां। हिमगिरिगुफा मुनीसुर जहां ॥८१॥
मिले साधु संजमधर धीर। समभावनतैं तज्यौ सरीर॥
लीनौं स्वर्गसोलवैं वास। जो नितनिरुपमभोगनिवास ॥८२॥
जन्म-सेजतैं जोवन पाय। उठ्यौ अमर[3] संपूरन काय॥
देखि संपदा विस्मय भयौ। अवधि होत संसै सब गयौ ॥८३॥
पूजा करी जिनालय जाय। भक्ति-भाव-रोमांचित काय॥
पूरवसंचित पुन्यसंजोग। करै तहां सुर वांछित भोग ॥८४॥

१ गुफा २ बसे ३ देव।

गये बरस बाईस हजार। भोजन भुंजे मनसाहार ॥
तावतमान पच्छ जब जाय। तब ऊसासों[1] दिसि[2] महकाय ।८५।
देखें पंचम-[3] भूपरजंत। अवधिग्यानबल मूरतिवंत ॥
तितनें मान विक्रिया करें। गमनागमन हियें जब धरें ॥८६॥
तीन हाथ अति सुन्दर काय। लेस्या सुकल महा सुखदाय ॥
थिति सागर बाईस विसाल। इहिविध बीतें सुखमें काल ॥८७

दोहा।

आदि अंत जिस धर्मसों, सुखी होय सब जीव।
ताकों तनमनवचनकरि, हे नर सेव सदीव ॥८८॥

इतिश्रीमत्पार्श्वनाथपुराणभाषाया गजस्वर्गगमनविद्याधरभव-
विद्युत्प्रभदेव भववर्णन नाम द्वितीयोऽधिकार ॥२॥

तीसरा अधिकार



दोहा

अस्वसेनकुल-कमल रवि[4], वामाकुंवर कृपाल।
वन्दों पारसचरन जुग, सरनागत-प्रतिपाल ॥१॥

चौपई

जम्बूदीप वसै बहुफेर। जाके मध्य सुदर्शन मेर।
कंचनमनिमय अतुलसुहाग। ता पर्वतके पच्छिम भाग ॥२॥
अपरविदेह[5] विराजै खेत। सो नित चौथेकाल समेत।

१ उछ्वास २ दिशा ३ पांचमें नरक ४ सूय ५ पश्चिम विदेह।

क्रमक्रमसौं सिसु भयो कुमार । पढ लीनी विद्या सब सार ।
जोवनवत कुमर जब भयौ । निर्मल नीतिपथ पग ठयौ ।
रूप-तेज-वल-बुद्धि-विज्ञान । सकल सारगुणरत्ननिधान ।१४।
कीनौ पिता व्याहविधि जोग । राजसुता बहु वरीं मनोग[1] ।
क्रमकरि कुमर पितापद पाय । राज करैं थुति[2] करिय न जाय॥
पुन्यजोग आयुधगृह[3] जहां । चक्ररतन वर उपज्यौ तहा ।
छहोखडवरतो भूपाल । वस कीनें नाये निजभाल ॥१६॥
देव दैत्य विद्याधर नये । नृप मलेच्छ सब सेवक भये ।
वढी सपदा पुन्यसयोग । इन्द्रसमान करैं सुखभोग ॥१७॥

दोहा ।

सपूरन सुख भोगवै, वज्रनाभि चक्रेस ।
तिस विभूतिवल वरनऊं, जथासकति लवलेस[4] ॥१८॥

चौपई ।

सहस वतीस सासते देस । धनकनकचन भरे विसेस ।
विपुल[5] वाड वेढे चहुंओर । ते सब गांव छानवै कोर ॥१९॥
कोट कोट दरवाजे चार । ऐसे पुर छव्वीसहजार ।
जिनकौं लगं पाचसौं गाव । ते अटंव चउ[6]सहस सुठाव ॥२०
पर्वत और नदीके पेट । सोलह सहस कहे वे खेट ।
कर्वट नाम सहस चौवीस । केवल गिरिधर वेढे दीप ॥२१॥
पत्तन अडतालीस हजार । रतन जहा उपजं अति सार ।

१ सुदर २ स्तुति ३ शस्त्र भंडार ४ थोडी ५ घने ६ चार हजार ।

एकलाख द्रोणीमुख[1] वीर। सहस घाट सागरके तीर ।।२२।
गिरि ऊपर सबाहन[2] जान। चौदह सहस मनोहर थान।
अट्ठाईस हजार असेस। दुर्ग[3] जहा रिपुको न प्रवेस ।।२३।।
उपसमुद्रके मध्य महान। अंतरदीप छपन परिमान।
रतनाकर छब्बीस हजार। बहु विध सार वस्तुभंडार ।।२४।।
रतनकुच्छ[4] सुन्दर सातसै। रतनधरा थानक जहँ लसै।
इन पुरसौ वस राजै खरे। जैनधाम धरनी जनभरे ।।२५।।
वर गयद चौरासीलाख। इतने ही रथ आगम-साख।
तेज तुरग अठारह कोर। जे बढ चलै पदनतै जोर ।।२६।।
पुनि चौरासी कोटि प्रमान। पायक[5] सघ बड़े बलवान।
सहस छानवै वनिता[6] गेह। तिनको अब विवरन सुन लेह।।२७
आरजखड वसै नरईस। तिनकी कन्या सहस बतीस।
इतनी ही अतिरूप रसाल। विद्याधरपुत्री गुनमाल ।।२८।।
पुनि मलेच्छ भूपनकी जान। राजकुमारी तावतमान।
नाटकिगन बत्तीस हजार। चक्री नृपकौं सुखदातार ।।२९।।
आदि सरीर[7] आदि[8] सठान। पूर्वकथित तन लच्छन जान।
बहुविध विजन[9] सहित मनोग। हेमवरन[10] तन सहजनिरोग।३०
छहो खड भूपति बलरास। तिनसौं अधिक देहबल जास।
सहस बतीस चरनतल रमै। मुकटबधराजा नित नमै।३१।

आठसौ (संख्या विशेष) गा ग्रामों मे प्रधान

१ द्रोणमध्य जैसे २ निवास स्थान ३ किले ४ रत्नो की खान
५ पैदल सिपाही ६ स्त्री ७ परमौदारिक शरीर ८ समचतुरस्रसस्थान
९ तिल आदि चिह्न १० स्वर्ण के समान रग।

नृप मलेच्छ छोरि अभिमान । सहस अठारह मानै आन ।
पुनि गनबद्ध बखानै देव । सोलह सहस करै नृप सेव ।।३२।।
कोटि थाल कंचननिर्मान । लाखकोटि हलसहित किसान ।
नाना वरन गऊकुल[1] भरे । तीनकोटि व्रज[2] आगम धरे ।३३।

दोहा ।

अब नवनिधिके नाम गुन, सुनो जथारथरूप ।
जैनी विन जानै नहीं, जिनकों सहज सरूप ।।३४।।

चौपई ।

प्रथम कालनिधि सुभ आकार । सो अनेक पुस्तकदातार ।
महाकालनिधि दूजी कही । याको महिमा सुनियौ सही।३५।
असि मसि आदिक साधन जोग । सामग्री सब देय मनोग ।
तीजी निधि नैसर्प महान । नाना विध भाजनकी खान ।३६।
पाडुक नाम चतुरथी होय । सब रसधान समर्पै सोय ।
पदम पचमी सुकृत खेत । वाछित वसन निरंतर वेत ।।३७।।
मानव नाम छठी निधि जेह । आयुधजात[3] जन्मभू देह ।
सप्तम सुभग पिंगला नाम । बहुभूषन आपै अभिराम ।।३८।।
संख निधान आठमी गनो । सब वाजित्र-भूमिका बनी ।
सर्वरत्न नवमी निधि सार । सो नित सर्वरत्नभंडार ।।३९।।

दोहा ।

ये नौनिधि चक्रेसकै, सकटाकृत[4] सठान[5] ।
आठचक्रसंजुक्त सुभ, चौखूटी सब जान ।।४०।।

---

१. गोशाला २ पशु स्थान ३. शस्त्र निर्माण ४. गाडी के आकार ५. आकार

जोजन आठ उतग अति, नव जोजन विस्तार ।
बारह मित[1] दीरघ सकल, बसैं गगन निरधार ॥४१॥
एक एकके सहस मित, रखवाले जखदेव[2] ।
ये निधि नरपति पुन्यसौं, सुखदायक स्वयमेव ॥४२॥

चौपई ।

प्रथमसुदरसन चक्रपसत्थ[3] । छहोखडसाधन समरत्थ ।
चडवेग दिढदड दुतीय । जिस बल खुलै गुफा गिरिकीय ।४३।
चर्मरत्न सो तृतिय निवेद । महा वज्रमय नीर अभेद ।
चतुरथ चूडामनि मति-रैन । अधकारनासक सुखदैन ॥४४॥
पचम रत्न काकिनी जान । चिंतामनि जाकौ अभिधान[4] ।
इन दोनौंतैं गुफामझार । ससिसूरज लखिये निरधार ।४५।
सूरजप्रभ सुभ छत्र महान । सो अति जगमगाय ज्यौं भान[5] ।
सोनदक असि[6] अधिक प्रचड । डरैं देखि बैरी बलबड ।४६।
पुनि अजोध सेनापति सूर । जो दिगविजय करैं बल भूर ।
बुधसागर प्रोहित परवीन । बुधिनिधान विद्यागुनलीन ॥४७॥
थपित[7] भद्रमुख नाम महत । सिलपकलाकोविद[8] गुनवत ।
कामबृद्ध गृहपति विख्यात । सब गृहकाज करैं दिनरात ।४८।
व्याल विजयगिरि अति अभिराम । तुरग[9] तेज पवनजय नाम ।
वनिता नाम सुभद्रा कही । चूरैं वज्ज पानि[10] सौं सही ।४९।

---

१ प्रमाण २ यक्षदेव ३ प्रशस्त ४ नाम ५ सूर्य ६ तलवार ७ शिल्पकार ८ विद्वान ९ घोडा १० हाथ ।

महादेहबल धारै सोय । जा पटतर[1] तिय अवर न कोय ।
मुख्यरतन यह चौदह जान । और रतनको कौन प्रमान।'५०।।

दोहा ।

राजअग चौदह रतन, विविध भाति सुखकार ।
जिनकी सुर सेवा करैं, पुन्यतरोवर-डार ।।५१।'
चक्र छत्र असि दडमनि, चर्म काकिनी नाम ।
सात रतन निर्जीव यह, चक्रवर्ति के धाम ।।५२।।
सेनापति गृहपति थपित, प्रोहित नाम तुरग ।
वनिता मिलि सातौं रतन, ये सजीव सरवग ।।५३।।
चक्र छत्र असि दड ये, उपजैं आयुधयान ।
चर्म काकिनी मनिरतन, श्रीगृह उतपति जान ।।५४।।
गज तुरग तिय तीन ये, रूपाचलतैं होत ।
चार रतन वाको विमल, निजपुर लहैं उदोत ।।५५।।

चौपई ।

मुख्य संपदाकी विरतत । आगैं और सुनौ मतिवत ।
सिहवाहनी सेज मनोग । सिहारूढ[2] चक्रवै[3] जोग ।।५६।।
आसन तु ग अनुत्तर नाम । मानिकजालजटित अभिराम ।
अनुपम नामा चमर अनूप । गगातरल–तरग–सरूप ।।५७।।
विद्युतद्दुति मनिकु ंडल जोट । छिपे और दुति जाकी ओट ।
कवच अभेद अमेद महान । जामैं भिदैं न बैरीवान ।।४८।।
विसमोचिनी पादुका[4] दोय । परपदसौं विष मु ंचै सोय ।

१ तुलना मे २ सिहो पर रखी हुई ३ चक्रवति के योग्य ४ खडाऊ ।

अजितंजै रथ महारवन्न[1] । जलपै थलवत करै गवन्न[2] ॥५६॥
वज्रकाड चक्रीधर चाप । जाहि चढावत नरपति आप ।
बान अमोघ[3] जवै कर लेत । रनमै मदा विजय वर देत ।६०।
विकट वज्रतु डा अभिधान[4] । सत्रुखडिनी सकती जान ।
सिहाटक वरछो विकराल । रतनदड लागो रिपुकाल ॥६१॥
लोहवाहिनो तीखन छुरी । जिमि चमकै चपलाद्युति[5] दुरी[6] ।
ये सब वस्तुजाति भूमाहि । चक्री छूट और घर नाहि ।६२।

दोहा ।

मनोवेग नामा कणय (?), ग्रथन कह्यौ विख्यात ।
खेटभूतमुख नाग हैं, दोनो आयुध जात ॥ ६३ ॥

चौपई ।

आनन्दन भेरी दस दोय । वारह जोजन लौं धुनि होय ।
वज्रघोस पुनि जिनकौ नाम । वारह पटह[7] नृपति के धाम ।६४।
वर गभीरावर्त गरीस । सोभनरूप सख चौवीस ।
नानावरन धुजा रमनीय । अडतालीस कोट मित कीय ।६५।
इत्यादिक वहुवस्तु अपार । वरनन करत न लहिये पार ।
महलतनो रचना असमान । जिनमत कही सो लीजै जान ॥

दोहा ।

चक्री नृपकी सपदा, कहैं कहां लौं कोय ।
पुन्यवेल पूरव वई, फली साघनी[8] सोय ॥६७॥

१ सुन्दर २ गमन ३, मचूक ४ नाम ५ बिजली ६ तेज ७ नक्कारे ८ घनी

इहि विध वज्रनाभि नरराय । करैं भोग चक्रीपद पाय ।
धर्मध्यान अहनिशि[1] आचरैं । निर्मल नीतिपंथ पग धरैं ॥६८॥
पूजा करैं जिनालय जाय । पूजै सदा गुरु के पाय ।
सामायिक साधैं अघनाश । करैं परब[2] प्रोषधउपवास ॥६९॥
चारप्रकार दान नित देय । औगुन त्यागैं गुन गहि लेय ।
सम शील पालैं बड़भाग । मनवचकाय धर्मसों राग ॥७०॥
सिंहासनपर बैठि नरेश । करैं पुनीत[3] धर्म उपदेश ।
सुजन सभाजन किंकरलोग । देय सुहितसिच्छा सब जोग ॥७१॥

दोहा ।

बीजराखि फल भोगवै, ज्यों किसान जगमाहिं ।
त्यों चक्रीनृप सुख करैं, धर्म विसारैं नाहिं ॥७२॥

नरेन्द्र अथवा जोगीरासा ।

इहिविध राज करै नरनायक, भोगैं पुन्य विसालो ।
सुखसागरमैं रमत निरंतर, जात न जान्यौ कालो ॥७३॥
एक दिना शुभकर्मसंजोगे, क्षेमंकर मुनि वन्दे ।
देखे श्रीगुरु के पदपंकज, लोचन अलि आनन्दे ॥७४॥
तीन प्रदच्छन दे सिरनायो, करि पूजा थुति कीनी ।
साधु समीप विनय कर बैठ्यो, पायनमैं दिठ[4] दीनी ॥७५॥
गुरु उपदेस्यो धर्म सिरोमनि, सुनि राजा वैरागे ।
राज रमा[5] वनितादिक जे रस, ते-रस वेरस[6] लागे ॥७६॥

---

१ रात-दिन २ अष्टमी चतुर्दशी ३ पवित्र ४ दृष्टि ५ लक्ष्मी ६ बुरे स्वाद वाले ।

मुनिसूरजकथनी किरनावलि, लगत भरमबुध भागी।
भव-तन-भोगसरूप विचारै, परम-धरम-अनुरागी ॥७७॥
इस संसार महावनभीतर, भ्रमते ओर न आवै।
जामन मरन-जरा-दौ[1] दाझ्यौ, जीव महादुख पावै ॥७८॥
कबही जाय नरकथिति भुंजै छेदन भेदन भारी।
कबही पसु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी ॥७९॥
सुरगतिमैं परसंपति देखै, रागउदय दुख होई।
मानुष जोनि अनेक विपतिमय, सर्वसुखी नहिं कोई ॥८०॥
कोई इष्टवियोगी विलखै, कोई असुभसँजोगी।
कोई दीन दारिद्र विगूचे[2], कोई तनके रोगी ॥८१॥
किसही घर कलिहारी[3] नारी, कै बैरी सम भाई।
किसहीकै दुख बाहर दीखै, किसही उर दुचिताई[4] ॥८२॥
कोई पुत्र बिना नित झूरै, होय मरै तब रोवै।
खोटी संततिसौं[5] दुख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै ॥८३॥
पुन्यउदय जिनकै तिनकौं भी, नाहिं सदा सुख साता।
यो जगवास जथारथ देखत, सब दीखै दुखदाता ॥८४॥
जो संसारविषै सुख हो तो, तीर्थङ्कर क्यों त्यागै।
काहेकौं सिवसाधन करते, संजमसौं अनुरागै ॥८५॥
देह अपावन अथिर घिनावन, यामैं सार न कोई।
सागरके जलसौं सुचि[6] कीजै, तौ भी सुचि नहिं होई ॥८६॥
सात कुधातमई मलमूरति, चामलपेटी सोहै।

१ आग २ दुखी ३ लड़ाई करने वाली ४ चिन्ता ५ सन्तान से ६ पवित्र।

अतर देखत या सम जगमैं, और अपावन को है ॥८७॥
नव मलद्वार[1] स्रवैं निसिवासर नाव लियें घिन आवैं।
व्याधि उपाधि[2] अनेक जहा तहा, कौन सुधी सुख पावै ॥८८॥
पोखत तौ दुख दोख करैं सब, सोखत सुख उपजावे।
दुर्जन देहसुभाव बरावर, मूरख प्रीति वढावै ॥८९॥
राचनजोग[3] स्वरूप न याको, विरचनजोग[4] सही है।
यह तन पाय महा तप कीजै, यामें सार यही है ॥९०॥
भोग बुरे भवरोग वढावें, वैरी है जग जीके।
वेरस[5] होंहि विपाक[6] समै अति, सेवत लागैं नीके ॥९१॥
वज्र अगनि विषसौं विषधरसौं,[7] ये अधिके दुखदाई।
धर्मरतनके चोर चपल ये, दुर्गतिपथ सहाई ॥९२॥
ज्यों ज्यो भोग सँजोग मनोहर, मनवाछित जन पावै।
तिसना नागनि त्यों त्यो डकै, लहर जहरकी आवैं ॥९३॥
मोह उदय यह जीव अग्यानी, भोग भले कर जानैं।
ज्यों कोई जन खाय घतूरो, सो सब कंचन[8] मानैं ॥९४॥
मै चक्री पद पाय निरंतर, भोगे भोग घनेरे।
तौ भी तनिक भये नहिं पूरन, भोगमनोरथ मेरे ॥९५॥
राज-समाज महा अघकारन, वैर बढावनहारा।
वेस्यासम लछमी अति चचल, याकौ कौन पत्यारा[9] ॥९६॥

(१ दो कान, दो नाक, दो आंख, मुंह, गुदा, लिंग या योनी–ये ९ मल द्वार हैं) २ मानसिक चिन्ता ३ प्रेम करने योग्य ४ विरक्त होने योग्य। ५ आनन्दहीन ६ फल ७ सांप ८ सोना ९ विश्वास।

मोह महा रिपु वैर विचारा, जगजिय सकट डाले ।
घर कारागृह वनिता बेडी, परिजन जन रखवाले ।।९७।।
सम्यकदरसन ग्यान-चरन-तप, ये जियके हितकारी ।
ये ही सार असार और सब, यह चक्री चित धारी ।।९८।।
छोडे चोदह रतन नवों निधि, अरु छोडे सग साथी ।
कोडि अठारह घोडे छोडे, चौरासो लख हाथी ।।९९।।
इत्यादिक सपति बहुतेरी, जीरन-तिन[1] ज्यो त्यागी ।
नीति विचार नियोगी[2] सुतकों, राज दियो बडभागी ।।१००।।
होय निसल्य अनेक नृपति सँग, भूषन वसन उतारे ।
श्री गुरुचरन धरी जिनमुद्रा, पच महाव्रत धारे ।।१०१।।
धन यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम[3], धन यह धीरजभारी ।
ऐसी सपति छोरि बसे वन, तिन पद ढोक हमारी ।।१०२।।

दोहा ।

परिग्रहपोट उतारि सब, लीनो चारित पथ ।
निज सुभावमें थिर भये, वज्रनाभि निरग्रथ ।।१०३।।

चौपाई ।

बारहविध दुद्धरतप करैं । दसलच्छनी धरम अनुसरैं ।।
पढैं अग-पूरव[4] श्रुत सार । एकाकी विचरैं अनगार ।।१०४
ग्रीषमकाल बसैं गिरिसीस । बरसामैं तरुतल मुनिईस ।।
सीतमास तटिनीतट[5] रहै । ध्यान अगनिमैं कर्मनि दहैं ।१०५

१ पुराना तिनका २ हकदार (बडा) ३ ससार मे उत्तम ४ ग्यारह अग चौदह पूर्व । ५ नदी किनारे ।

एक दिना बनमै थिर काय । जोग दिये ठाडे मुनिराय ॥
कमठजीव अजगर-तन छोरि । उपज्यौ छठे नरक अतिघोर ।
थिति सागर बाईस प्रमान । देखे दुख जानै भगवान ॥
पूरनआयु भोगकर मरचौ । बनहिं कुरंग[1]भील अवतरचौ।१०७
कालसरूप वदन विकराल । वनचर जीवनकौ छयकाल[2] ।
धनुषबान लीये निजपान[3] । भ्रमै मासलोभी बन थान ॥१०८॥
सो पापी चल आयौ तहा । जोगारूढ खड़े मुनि जहा ॥
सत्रुमित्रसौं सम कर भाव । लगे आपमै सुद्धसुभाव ॥१०९॥
कु कुम[4] कादो[5] महल मसान । कोमल सेज कठिन पाषान ।
कचन काच दुष्ट अरु दास । जीवन मरन बराबर जास ॥११०
निर्ममत्त तनकी सुधि नाहिं । सातौं भय वरजित उरमाहिं ॥
देखि दिगबर[6] कोप्यौ नीच । कपित अधर दसनतल[7]भीच।१११
तान कमान कान लौं लई । तीखन[8] सर[9] मारचौ निरदई ॥
मुनिवर धर्मध्यान आराध । दुखमै धीरज तज्यौ न साध ।११२।
दरसनग्यानचरन तप सार । चारौ आराधन चित धार ॥
देहत्याग तब गये मुनिद्र । मध्यम ग्रैवेयक अहमिंद्र ११३॥
तहँ उपपादसिला निकलक[10] । हसतूल[11]जुत रतन पलक ॥
उठचौ सेज तजि दीपत[12]काय । अल्पकाल मै जोबन पाय।११४
देखै दिसि अतिविस्मयरूप । महा मनोग विमान अनूप ॥
अतुल तेज अहमिंद्र निहार । अवधिज्ञान उपज्यौ तिहिं बार।११५

१ बदसूरत २ नष्ट करने वाला ३ अपने हाथ मे ४ केशर ५ कीचड
६ मुनि ७ दात ८ तीक्ष्ण ९ बाण १० कलकरहित ११ रुई १२ चमकतीहुई ।

जान्यौं सब पूरब-भव-भेव । चारित विरछ फल्यौ सुखदेव ॥
अनुपम आठों दरव संजोय । रतनबिंब पूजे थिर होय ॥११६॥
आयौ सुर हर्षित निजथान । महारिद्धि महिमा असमान ॥
तीनभवनवरती जिनधाम । भावभक्ति निन करै प्रनाम ॥११७॥
तीर्थङ्कर केवलि-समुदाय । निजथानक थित पूजै पाय ॥
पचकल्यानक काल विचारि । प्रनमैं हस्तकमल सिरधारि ॥११८॥

दोहा ।

अनाहूत[1] अहमिंद्रगन, आवैं सहज सुभाय ।
धर्मकथा जिनगुनकथन करैं सनेह बढाय ॥११९॥
कबहीं रतनविमानमें, कबहीं महलमझार ।
कबही बनक्रीडा करैं, मिलि अहमिंद्रकुमार ॥१२०॥
और वास[2] निज वासतैं, उत्तम दीसै नाहिं ॥
ताहींतै ते अमरगन[3], और कहीं नहि जाहिं ॥१२१॥
प्रीत भरे गुन आगरे[4], सुभग[5] सोम[6] श्रीमन्त ।
सातधात मलसौं रहित, लेस्या सुकल धरत ॥१२२॥
सब समान-संपतिधनी सब मानै हम इन्द्र ।
कला ग्यान विग्यानसम, ऐसे सुर अहमिंद्र ॥१२३॥
सुकल बरन तनमनहरन, दोय हाथ परिमान ।
मानौं प्रतिमा फटिककी[7], महातेज दुतिवान ॥१२४॥

---

१ बिना बुलाये २ निवासस्थान ३ देवता ४ भंडार ५ सुन्दर ६ सौम्य प्रकृति
७ स्फटिकमणि ।

कामदाह उरमै नहीं, नहि वनिताकौ राग ।
कल्पलोकके सुर सुखी, असंख्यातवें भाग ।।१२५।।
सत्ताईस हजार मित बरस बीति जब जाहिं ।
मानसीक आहारको, रुचि उपजै मनमाहिं ।।१२६।।
साढे तेरह पच्छपर, लेत सुगंध उसास ।
छठी अवनि लौं जिन कही, अवधिविक्रिया जास ।।१२७।।
सागर सत्ताईस मित, परम आयु तिहि थान ।
सुभग सुभद्र विमानमैं, यो सुख करै महान ।।१२८।।

चौपाई ।

अब सो भील महादुखदाय । रुद्रध्यानसौं छोडी काय ।।
मुनिहत्या-पातकतै मरचौ । चरम[1] सुभ्रसागरमै[2] परचो ।१२९।

दोहा ।

कथा तहाके कष्टकी, को कर सके बखान ।
भुगतै सो जानै सही, कै जानै भगवान ।।१३०।।

दोहा ।

जनमथान सब नरकमै, अध अधोमुख जौन ।
घटाकार[3] घिनावनी, दुसह[4] बास दुखभौन[5] ।।१३१।।
तिनमै उपजै नारकी, तल सिर ऊपर पाय ।
विषम वज्र कटकमई, परै भूमिपर आय ।।१३२।।
जो विषैल बीछू सहस, लगे देह दुख होय ।

---

१ अन्तिम २ नरक ३ लटकते हुए विजयघट की तरह ४ न सहने योग्य ५ दुख का घर ।

पूरबपापकलाप[1] सब, आप जाप[2] कर लेय।
तब विलापकी ताप तप, पश्चात्ताप करेय ॥१४२॥
मैं मानुष परजाय धरि, धन-जोबन-मदलीन।
अधम काज ऐसे किये, नरकबास जिन दीन ॥१४३॥
सरसोसम[3] सुखहेत तब, भयौ लपटो जान।
ताहीकौ अब फल लग्यौ, यह दुख मेरु समान ॥१४४॥
कदमूल मद मास मधु, और अभच्छ अनेक।
अच्छन-बस[4] भच्छन किये, अटक[5] न मानी एक ॥१४५।
जल थल नभचारी विविध, बिलवासी बहु जीव।
मैं पापी अपराध बिन, मारे दीन अतीव ॥१४६।
नगरदाह कीनौं निठुर, गाम जलाये जान।
अटवीमैं दीनी अगनि, हिंसा कर सुखमान ॥१४७॥
अपने इन्द्रीलोभकों, बोल्यौ मृषा मलीन।
कलपित ग्रंथ बनायकें, बहकाये बहु दीन ॥१४८॥
दावघातपरपंचसौं, परलछमी हर लीय।
छलबल हठबल दरबबल, परवनिता[6] बस कीय ॥१४९।
बढी परिग्रहपोट सिर, घटी न घटकी चाह।
ज्यो ईन्धनके जोगसौं, अगनि करै अतिदाह ॥१५०॥
बिन छान्यौ पानी पियौ, निसि[7] भुज्यौ अविचारि।
देवदरब खायौ सही, रुद्रध्यान उर धारि ॥१५

१ समूह २ याद कर ३ सरसो के दाने के समान थोडासा ४ इन्द्रि
५ रुकावट ६ परस्त्री ७ रात्रि मे।

कीनी सेव कुदेवकी, कुगुरुनकौं गुरु मानि ।
तिनहींके उपदेशसौं, पशु होमै हित जानि ।।१५२।।
दियौ न उत्तमदान मै, लियौ न संजमभार ।
पियौ मूढ़ मिथ्यातमद, कियौ न तप जगसार ।।१५३।।
जो धर्मीजन दयाकरि, दीनी सीख निहोर[1] ।
मै तिनसौं रिस करि अधम, भाखे बचन कठोर ।।१५४।।
करी कमाई परजनम, सो आई मुझ तोर ।
हा हा अब कैसे धरू, नरकधरामै घोर ।।१५५।।
दुलभ नरभव पायके, केई पुरुष प्रधान ।
तपकरि साधे सुरग सिव, मै अभागि यह थान ।।१५६।।
पूरब सतन यो कही, करनी चालै लार ।
सो अब आँखन देखिये, तब न करी निरधार[2] ।।१५७।।
जिस कुटुंब के हेत मै, कीनै बहुबिध पाप ।
ते सब साथी बीछुडे परचौ नरकमै आप ।।१५८।।
मेरी लछमी खानकौं, सीरी[3] भये अनेक ।
अब इस विपत बिलापमै, कोउ न दीखै एक ।।१५९।।
सारस सरवर तजि गये, सूखो नीर निराट[4] ।
फलबिन बिरख बिलौकके, पछी लागे बाट[5] ।।१६०।।
पचकरन[6]–पोषन[7] अरथ, अनरथ किये अपार ।
ते रिपु ज्यो न्यारे भये, मोहि नरकमै डार ।।१६१।।

---

१ उपकार करके २ निर्णय ३ साझीदार ४ नितान्त (बिलकुल)
५ रास्ता ६ पाचो इन्द्रिया ७ पुष्ट करने ।

तब तिलभर दुख सहनकौं, हुतो अधीरज भाव ।
अब ये कैसे दुसह दुख, भरिहौं दीरघ आव[1] ॥१६२॥
अघ बैरीके बस परयौ, कहा करूं कित जाउ ।
सुनै कौन पूछूं किसे, सरन कौन इस ठाउ ।१६३॥
यहां कछू दु.ख हृतनकौ[2], उक्त[3] उपाव न मूर[4] ।
थिति बिन बिपतसमुद्र यह, कब तिरहौं तट दूर ।।१६४।।
ऐसी चिंता करत हू, बढै बेदना एम ।
घीव तेलके जोगतैं, पावक[5] प्रजुलै जेम ।।१६५।।

सोरठा ।

इहिविध पूरब पाप, प्रथम नारकी सुधि करै ।
दुखउपजावन जाप, होय विभगा अवधितैं ।।१६६।।

दोहा ।

तब ही नारकि निर्दई, नयौ नारकी देख ।
धाय धाय मारन उठैं, महादुष्ट दुरभेख ।।१६७।।
सब क्रोधी कलही[6] सकल, सबके नेत्र फुलिंग[7] ।
दु ख देनकौ अति निपुन, निठुर नपुंसकलिंग ।।१६८।।
कुंत[8] कृपान[9] कमान सर, सकती[10] मुगदर दंड ।
इत्यादिक आयुध विबिध, लिये हाथ परचंड ।।१६९।।
कहि कठोर दुर्वचन बहु, तिल तिल खडै काय ।
सो तबही ततकाल तन, पारे-वत मिल जाय ।।१७०।।

१ आयु २ नाश करने को ३ युक्ति ४ मूल ५ अग्नि ६ लड़ाई करने वाले ७ अग्नि बरसाने वाले ८ भाला ९ तलवार १० एकअस्त्र ।

काँटेकर छेदैं चरन, भेदैं मरम विचारि ।
अस्थिजाल चूरन करैं, कुचलैं खाल उपारि ।। ७१।।
चीरैं करवत काठ ज्यों, फारैं पकरि कुठार ।।
तोड़ें अतरमालिका, अतर उदर बिदार ।।१७२।।
पेलैं कोल्हू मेलकैं, पीसैं घरटी[1] घाल ।
तावैं ताते तेलमैं, दहैं दहन[2] परजाल ।।१७३।।
पकरि पाय पटकैं पुहुमि[3], झटकि परसपर लेहिं ।
कटक सेज सुवावहीं, सूलीपर धरि देहिं ।।१७४।।
घसैं सकटक रूखसौं, बैतरनी ले जाहिं ।
घायल घेरि घसीटिए, किंचित करुना नाहिं ।।१७५।।
केई रक्त चुवाव तन विलवल भाजें ताम ।
पर्वत अतर जायके, करैं बैठि विसराम ।।१७६।।
तहा भयानक नारकी, धारि विक्रिया भेख ।
बाघ सिंह अहि[4] रूपसौं, दारैं[5] देह विसेख ।।१७७।।
केई करसौं पाय गहि, गिरसौं देहिं गिराय ।
परैं आन दुभूमिपर, खड खंड हो जाय ।।१७८।।
दुखसौं कायर चित्तकरि, ढूँढैं सरन सहाय ।
वे अति निर्दय घातकी, यह अति दीन घिघाय[6]।।१७९।।
व्रण[7]-वेदन नीकी करैं, ऐसे करि विश्वास ।
सींचैं खारे नीरसौं, जो अति उपजैं त्रास ।।१८०।।

---

१ चक्की २ अग्नि ३ पृथ्वी ४ सांप ५ विदारे ६ चिल्लाना ७ घाव ।

केई जकरि जंजीरसों, खेंचि थभ अति बांधि ।
सुध कराय अब मारिये, नाना आयुध साधि ॥१८१॥
जिन उद्धत अभिमानसों कीने परभव पाप ॥
तपतलोह आसनविर्षे, त्रास दिखावें थाप ॥१८२॥
ताती पुतली लोहकी, लाय लगावें अग ।
प्रीत करी जिन पूर्वभव, परकामिनि[1]के सग ॥१८३॥
लोचनदोषी जानिकें, लोचन लेहिं निकाल ।
मदिरापानी पुरुषकों प्यावें तावो गाल ॥१८४॥
जिन अगनसों अघ किये, तेई छेदे जाहिं ।
पल[2]-भच्छनके पापतें, तोडि तोड़ि तन खाहिं ॥१८५॥
केई पूरब वेरके, याद दिवावें नाम ।
कह दुर्वचन अनेक विध, करें कोप सग्राम ॥१८६॥
भये विक्रिया देहसों, बहुविध आयुधजात[3] ।
तिनहीसों अति रिस[4] भरे, करें परस्पर घात ॥१८७॥
सिथिल होय चिर युद्धतें, दीन नारकी जाम ।
हिंसानंदी असुर दुठ, आन भिरावें ताम ॥१८८॥

सोरठा ।

तृतिय नरक परजत, असुरादिक दुख देत हैं ।
भाख्यौ जिनसिद्धन्त, असुरगमन आगे नहीं ॥१८९॥

दोहा ।

इहिविध नरक-निवासमै, चैन एकपल नाहिं ।

१ परस्त्री २ मांस ३ शस्त्र ४ गुस्सा ।

तपै निरतर नारकी, दुखदावानलमाँहि ॥१६०॥
मार मार सुनिये सदा, छेत्र महा दुरगध ।
बहै बात[1] असुहावनी, असुध छेत्र सबध ॥१६१॥
तीनलोकको नाज सब, जो भच्छन कर लेय ।
तौहू भूख न उपसमै[2], कौन एक कन देय ॥१६२॥
सागरके जलसौं जहा, पीवत प्यास न जाय ।
लहै न पानी बूदभर, दहै निरतर काय ॥१६३॥
बायपित्तकफजनित जे, रोगजात जावत ।
तिन सबहीको नरकमै, उदय कह्यौ भगवत ॥१६४॥
कटुतुबी[3] सौ कटुक रस, करवतकी सो फास ।
जिनकी मृत मजारसौं[4], अधिक देहदुरबास[5] ॥१६५॥
जोजन लाख प्रमान जहँ, लोहपिंड गल जाय ।
ऐसी ही अति उसनता, ऐसो सीत सुभाय ॥१६६॥

अडिल्ल छद

पकप्रभापरजत उसनता अति कही ।
धूमप्रभामै सीत उसन दोनौं सही ॥
छठी सातमी भूमि मे केवल सीत है ।
ताकी उपमा नाहि महा विपरीत है ॥१६७॥

दोहा ।

स्वान[6] स्यार मजारको, पडी कलेवर-रास[7] ।
मास वसा[8] अरु रुधिरको, कादौ जहा कुबास ॥१६८॥

१ हवा २ शान्त ३ कडवीतूमडी ४ बिल्ली से ५ दुर्गन्ध ६ कुत्ता ७ शरीर ८ चर्बी

ठाम ठाम असुहावने, सेंभल तरुवर भूर ।
पैनैं दुखदैनें विकट, कटककलित करूर[1]॥१९९॥
और जहा असिपत्र[2] बन, भीम तरोवर खेत ।
जिनके दल तरवारसे, लगत घाव करदेत ॥२००॥
वैतरिना सरिता समल, लोहित लहर भयान ।
बहै खार सोनित[3] भरी, मांसकीच घिन घान ॥२०१॥
पछी वायस[4] गीधगन, लोहतुंडसौं[5] जेह ।
मरम विदारै दुख करै, चूंटै चहुदिस देह ॥२०२॥
पचेंद्री मनकौं महा, जे दुखदायक जोग ।
ते सब नरकनिकेतमै[6] , एकपिंड अमनोग ॥२०३॥
कथा अपार कलेसकी, कहै कहा लौं कोय ।
कोड़ जीभसौं बरनिये, तऊ न पूरी होय ॥२०४॥
सागरबध प्रमानथिति, छिनछिन तीखन त्रास ।
ये दुख देखैं नारकी, परवस परे निवास ॥ २०५ ॥
जैसी परवस बेदना, सहैं जीव बहु भाय ।
स्ववस सहै जो अस भी, तौ भवजल तिरजाय ॥ २०६ ॥
ऐसे नरकहिं नारकी, भयौ भोल दुठ भाव ।
सागर सत्ताईसकी, धारी मध्यम आव ॥ २०७ ॥
सागर काल प्रमान अब, बरनौं औसर पाय ।
जिनसौं नरकनिवासकी, थिति सब जानी जाय ॥२०८॥

---

१ क्रूर २ तलवार की धार समान पत्ते ३ खून ४ कौआ ५ लोहे की सी चोंच ६ घर ।

चौपई ।

पहले तीन पल्यके भेव । एकचित्तकरि सो सुन लेव ।।
जिनसौं सागर उपजै सही । जथागेत जिनसासन कही।।२०६।।

सोरठा ।

प्रथम पल्य ब्योहार, दुतिय नाम उद्धार भन ।
अर्धा त्रितिय विचार, अब इनकौ विस्तार सुन ।।२१०।।

चौपई ।

पहले गोल कूप कलपिये[1] । जोजन बडे मान थरपिये ।।
इतनौ ही करिये गंभीर । बुधिबल[2] ताहि भरौ नर धीर।२११।
सात दिवसके भीतर जेह । जनें[3] भेडके बालक[4] लेह ।
उत्तम भोगभूमिके जान । तिनके रोमअग्र मनआन ।।२१२।।
ऐसे सूच्छम करिये सोय । फेरि खड जिनकौ नहि होय ।।
तिन सौं महाकूप वह भरौ । बारंबार कूट दिढ करौ ।।२१३।।
तिन रोमनकी सख्या जान । पैंतालीस अक परवान ।।
ते श्रीजिनसासनमै कहे । कर प्रतीत जैनी सरदहे ।।२१४।।

चामर छन्द ।

चार एक तीन चार पाच दो छ तीन ले ।
सुन्न तीन सुन्न[5] आठ दोय अंक सुन्न दे ।।
तीन एक सात सात सात चार नौ करौ ।
पाच एक दोय एक नौ समार दो धरौ ।।२१५।।

---

१ कल्पना कीजिए २ बुद्धि प्रमाण ३ पैदा हुए ४ भेड का बच्चा ५ बिन्दु

दोहा ।

सात बीस ये अंक लिखि, और अठारह सुन्न ।
प्रथम पल्यके रोमकी, यह संख्या परिपुन्न[1] ।।

चौपई ।

सौ सौ बरस बीत जब जाहि । एक एक काढो यामांहि ।।
ऐसो विध सब करते सोय । कूप[2] उदर जब खाली होय ।२१७
जो कछु लगै काल परवान[3] । सो व्योहार पल्य उरआन ।।
प्रथम पल्य सवतं लघुरूप । बीजभूत भाख्यो जिनभूप ।२१८।

दोहा ।

संख्या कारन जिन कह्यो, और न यासों काज ।
दुतिय पल्य विवरन सुनों, जो भाख्यो जिनराज ।।२१६।।

चौपई

पूरवकथित रोम सब धरौ । तिनके अस कल्पना करौ ।।
बरस असंख कोटिके जिते । समय होंहि आतम परिमिते[4]।२२०।
एक एकके तावत[5] मान । करौ भाग विकलप[6] मन आन ।।
याविध ठान रोमकी रास । समय समय प्रति एक निकास ।।
जितनों काल होय सब येह । सो उद्धार पल्य सुन लेह ।।
याके रोमनसौं परवान । दीपोदधिकी सख्या जान ।।२२२।।

दोहा ।

कोड़ाकोड़ि पचीसके, पल्य रोम जावंत ।
तितने दीप समुद्र सब, बरने जैनसिधंत ।।२२३।।

---

१ परिपूर्ण २ कुआं ३. प्रमाण ४ प्रमाण ५ उतने ६. विचार ।

चौपई।

अब सुन त्रितिय पल्य की कथा। श्रीजिनसासन वरनो जथा॥
दुतियपल्यके अमित[1] अपार। रोम अंस लीजे निर्धार।२२४।
एक एकके भाग प्रमान। करि सौ वरस समय परवान॥
इहिविध रासि होय फिर एह। समय समय प्रति लीजे तेह॥
ऐसे करत लगै जो काल। सोई अद्धापल्य[2] विसाल॥
करमनकी थिति यासौं जान। यह उत्कृष्ट कही भगवान।२२६।

दोहा।

प्रथम पल्य सख्यातमित, दुतिय असंख्यप्रमान।
असंख्यातगुन तीसरौ, लिख्यौ जिनागम जान॥२२७॥
इन सब तीनौं पल्यमैं, अद्धापल्य महान।
दस कोडाकोडी गये, अद्धासागर ठान॥२२८॥
इस ही अद्धासिन्धुसौं, पुन्यपाप परभाव।
ससारीजन भोगवै, सुरगनरकको आव॥२२९॥
ऐसे दीरघ[3] काल लौं, नरक सातवें थान।
कमठ जीव दुख भोगवै, परचो कर्मवस आन॥२३०॥
धिक धिक विषयकषायमल, ये वैरी जगमांहि।
ये ही मोहित जीवकौं, अवसि नरक ले जांहि॥२३१॥
धर्म पदारथ अन्य जग, जा पटतर[4] कछु नांहि।
दुर्गतिवास बचायकैं, धरै सुरगसिवमांहि॥२३२॥

---

१ प्रमाणरहित २ उद्धारपल्य ३ लम्बे ४ समान।

यही जान जिनधर्मकौं, सेवो बुद्धिविशाल ।
मन तन वचन लगायकैं, तिहुंपन[1] तीनौं काल ।।२३३।।

इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषाया वज्रनाभअहमिन्द्रसुखभिल्लनरक-
दुखवर्णन नाम तृतियोधिकार ।।३।।

चौथा अधिकार ।

सोरठा—मारूथल[2] ससार, वामानदन कलपतरु ।
वाछितफलदातार, सुखकामी सेवो सदा ।।१।।

चौपई ।

इसही जवूदीपमझार । भरतखंड दच्छिन दिसि सार ।
कौसलदेस बसै अभिराम । नगर अजोध्या उत्तम ठान ।।२।।
आरजखडमाहिं परधान । मध्यभाग राजै सुभथान ।।
गढ़ गोपुर खाई गृहपांति । घनबनसौं सोहै बहुभांति ।।३।।
ऊंचे जिनमदिर मनहरैं । कचन कलस धुजा फरहरैं ।।
वज्रबाहु भूपति तिहिं थान । वर-इख्वाकवंस-नभ-भान।।४।।
जैनधर्म पाले बडभाग । जिनपद-कमलनि मधुप[3] सराग ।।
प्रभाकरी तिय ताघर सती । जीती जिन रंभा-रति-रती ।।५।।

दोहा ।

यथा हसके वंसकौं, चाल न सिखवै कोय ।
त्यौं कुलीन नर-नारिकै, सहज नमन-गुण होय ।।६।।

---

१ बाल, युवा और वृद्धपन २ मरुस्थल ३ भौरा ।

चौपई।

वह अहमिंद्र तहांतैं चयौ[1]। तिनकै सुदिन पुत्र सो भयौ॥
नांव धरचौ आनदकुमार। अतुल तेज सब लच्छन सार॥७॥
सुभग सोम श्रीवत[2] महान। बल-वीरज-धीरजगुनथान॥
नरनारी-मन-मानिक-चोर। देखत नयन रहैं जा ओर॥८॥
जाके सुगुन सेस कह थकैं। और कौन वरनन कर सकैं॥
जोबनवंत जनक तिस देख। व्याहमहोत्सव कियौ विसेख॥९॥
परनी राजसुता बहु भाय। जिनकी छवि बरनी नहिं जाय॥
क्रमसौं कुमर पितापद पाय। बलसौं बस कीये बहुराय[3]॥१०॥

दोहा।

जोबन वय[4] संपति बडी, मिल्यौ सकल सुखजोग।
'महामडली' पद लह्यौ, पूरव-पुन्य-नियोग॥११॥

चौपाई।

अब सुन आठ जातिके भूप। जिनकौ जिनमत कह्यौ सरूप॥
कोटि ग्रामकौ अधिपति होय। राजा नाम कहावै सोय॥१२
नवैं[5] पांचसौ राजा जांहि। अधिराजा नृप कहिये तांहि॥
महस राय जिस मानैं आन। महाराज राजा वह जान॥१३॥
दोय सहस नृप नवैं असेस। मडलीक वह अर्ध नरेस॥
चार सहस जिस पूजैं पाय। सोई मंडलीक नरराय॥१४॥
आठ सहस भूपतिकौ ईस। मडलीक सो महा महीस॥
सोलह सहस नवैं भूपाल। सो अधचक्री पुन्यविसाल॥१५॥

१ चला २ लक्षणवान ३ बहुत से राजा ४ उम्र ५ सिर झुकाते हैं।

सहस बतीस आन जिस वहैं । ताहि सकलचक्री बुध कहैं ॥
इनमें श्रीआनंदनरेस । महामंडली पद परमेस ॥१६॥

सोरठा ।

आठ सहस सुखहेत, नृप नक्षत्र सेवं सदा ।
कीरति-किरन-समेत, सोहै नरपतिचन्द्रमा ॥१७॥

चौपई ।

एक दिना आनंद महीस । बैठयो सभा सिंहासनसीस ॥
मंत्री तहा स्वामिहित नाम । कहै विवेकी सुवचन ताम ॥१८॥
स्वामी यह बसंत रितुराज । सब जन करैं महोच्छवकाज ॥
नंदीसुर-व्रत अवसर येह । करिये प्रभु-पूजा जिन गेह ॥१९॥
पूजा सदा पाप निरदलै[1] । पर्वसंजोग महाफल फलै ॥
परम पुन्यको कारन आन । नहीं जगतमें जग्यसमान[2] ॥२०॥

दोहा ।

जिनपूजा की भावना, सब दुखहरन-उपाय ।
करते जो फल संपजै[3], सो बरन्यो किमि जाय। ॥२१॥

चौपई ।

सुनि राजा मंत्री उपदेस । नगर महोच्छव कियो विसेस ॥
करि सनान जिनमंदिर जाय । जैनबिंब पूजे हिहसाय ॥२२॥
बहुविध पूजा दरब मनोग । धरे आन जिनपूजनजोग ॥
भावभक्तिसों मंगल ठयो । राजाके मन संसय भयो ॥२३॥

१. नष्ट करे २ पूजा के समान, ३ उत्पन्न करे ।

विपुलमती मुनिवर तिहिं थान । दरसन कारन आये जान ॥
तिनें पूजि नृप पूछैं येह । भो मुनींद्र मुझ मन संदेह ॥२४॥

दोहा ।

प्रतिमा धात पखानकी, प्रगट अचेतन अंग ।
पूजक जनकौं पुन्यफल, क्यों कर देय अभंग[१] ॥२५॥
तुम जगमैं समय-तिमिर-दूरकरन रविरूप ।
यह मुझ भरम मिटाइये, करैं वीनती नृप ॥२६॥
तब ग्यानी गनधर कहैं, समाधान सुन राय ।
भवि-जनकौं-प्रतिमा भगति, महापुन्य-फलदाय ॥२७॥
भाव सुभासुभ जीवके, उपजैं कारन पाय ।
पुन्य पाप तिनसौं बधै, यों भाख्यो जिनराय ॥२८॥
कुसुम[२] वरन कौ जोग लहि, जैसे फटिक[३] पखान ।
अरुनस्याम दुतिकों धरै, यही जीवकी बान ॥२९॥
सो कारन है दोय विध, अतरंग वहिरंग ॥
तिनके ही उर आय है, जे समझैं सरवंग[४] ॥३०॥
बाहिज कारन जानियौं, अतरंगको हेत ।
सोई अंतरभाव नित, कर्मबंधकौं देत ॥३१॥
जिन परिनामन पुन्य बहु, बंधै अन्यथा नाहिं ।
तिन भावनकौं निमित है, जिनप्रतिमा जगमाहिं ॥३२॥

१ पूर्ण २ फूल ३ स्फटिकमणि ४ आदत ५ पूर्णतया ।

वीतरागमुद्रा निरखि, सुधि[1] आवै भगवान ।
यही भाव कारन महा, पुन्यबंधको जान ॥३३॥
रागद्वेषवर्जित अमल[2], सुखदुखदाता नाहि ।
दर्पनवत भगवान हैं, यह आनौं उरमाहि ॥३४॥
तिनको चिंतन ध्यान जप, थुति पूजाविधिधान ॥
सुफल फलैं निज भावसो. ह्वै मुकती सुखदान ॥३५॥
जैसे गुन प्रभुके कहे, ते जिन मुद्रामाहि ।
थिरसरूप रागादिबिन, भूषन आयुध नाहि ॥३६॥
जद्यपि सिलपीकृत कृतम, जिनवरबिम्ब अचेत ।
तदपि सही अंतरविषै, सुभभावनको हेत ॥३७॥
और एक दिष्टांत[3] अब, सुन अवनीपति[4] सोय ।
जिसके उर दृष्टांतसों, संसै रहै न कोय ॥३८॥

चौपई ।

गनिका[5] धरी चितामे जाय । विसनी पुरुष देखि पछताय ॥
जो जीवत मुझ मिलतो जोग । तो मैं करतो वाछित भोग ॥
स्वान[6] कहै उर क्यों यह दही[7]। मै निज भच्छन करतो सही॥
पुनि तिहि देख कहै मुनिराय । क्यों न कियो तप यह तन पाय॥
इहिविध देखि अचेतन अंग । उपजे भाव पाय परसग[8]॥
तिन ही भावनके अनुसार । लाग्यो फल तिनकों तिहि वार॥

१ याद २ निर्मल ३ दृष्टान्त ४ राजा ५ वेश्या ६ कुत्ता ७ जली
८ निमित्त ।

दोहा।

व्यसनी नर नरकहि गयौ, लह्यौ सूखदुख स्वान ॥
साधु सुरग पहुँचे सही, भावनकौ फल जान ॥४२॥

चौपई।

यो जिनबिंब अचेतनरूप। सुखदायक तुम जानो नृप॥
कारनसम कारज संपजै[1]। यामैं बुध[2] ससै नहि भजै॥४३॥

दोहा।

जैसै चिंतामनि रतन, मनवांछितदातार।
तथा अचेतन बिंब यह, वाछापूरनहार॥४४॥
ज्यो जांचत सुख कलपतरु, दानी जनकौं देय॥
त्यो अचेत यह देत है, पूजककौं सुख श्रेय॥४५॥
मनिमंत्रादिक औषधी, हैं प्रतच्छ जड़रूप।
विषरोगादिककौं हरै, त्यो यह अघहर भूप॥४६॥
जडसरूपकौ पूज पद, प्रगट देखिये लोय[3]॥
राजपत्र[4] सिर धारिये, मुद्रा[5] अंकित होय॥४७॥
राजपत्र सिर धारिये, राजाकौ भय मानि।
जिनवरमुद्रा पूजिये, पातककौ[6] डर जानि॥४८॥
प्रतिमापूजन चिंतवन, दरसनआदि विधान।
हैं प्रमान तिहुँ कालमैं, तीन लोकमैं जान॥४९॥
जे प्रतिमा पूजै नहीं निंदा करै अजान।
तीन लोक तिहुकालमैं, तिनसम अधम[7] न आन[8]॥५०॥

---

१ बने २ बुद्धिमान ३ लोक ४ राजा का फरमान ५ म्होर लगी हुई ६ पाप
७ नीच ८ दूसरा।

जे प्रतिमा पूजें सदा, भावभगति-विधि-सुद्धि ।
तिनको जनम सराहिये, धन तिनकी सद्बुद्धि ।।५१।।
इत्यादिक उपदेस सुनि, आई उर परतीत[1] ।
जिनप्रतिमापूजनविषै, धरी राय दिढ प्रीत ।।५२।।

चौपाई ।

तिस औसर[2] मुनि बरनैं ताम । तीनभवनवरती जिनधाम।।
भानुविमानविषै जिनगेह । सो पहले बरनैं धरि नेह ।।५३।।
रतनमई प्रतिमा जगमगै । कोटभानुछवि[3] छीनो[4] लगै ।।
निरुपम रचना विविध विसाल । सूरजदेव नमैं तिहुँ काल।५४।
सुन आनंदो[5] आनँदराय । विकसत आनन[6] अग न माय ।।
जब संदेहसल्य निरबरै[7] । तब अवस्य उर सुख विस्तरै ।५५।
प्रात सांझ मंदिर चढि सोय । अर्घ देय रविसम्मुख होय ।।
करि जिनबिंबनकौ मन ध्यान । अस्तुति करै राग मन आन ।।
रविविमान मनिकंचनमई । निरमापो अद्भुत छवि छई ।।
जैनभवनकरि मंडित सोय । देखत जनमन अचरज होय ।।५७।।
पूजा तहां करै नित राय । महा महोच्छव हर्ष बढाय ।।
प्रतिदिन देय दया उर आन । दीन दुखित जनकौं बहु दान ।५८।
यह नितनेम करै भूपाल । चली नगरमैं सोई चाल ।।
सब सूरजकौं करै प्रनाम । देखादेखि चल्यो मत ताम ।५९।।

---

१ विश्वास २ समय ३ करोड़ सूर्य की शोभा ४ फीकी ५ प्रसन्न हुआ ६ मुख ७ नष्ट होय ।

समझै नही मूढ परनये । भानुउपासक तवसौं भये ।।
जो महत[1] नर कारज करै । ताकी रीत जगत आचरै ।।६०।।
यो वहु पुन्य करै भूपाल । सुखमै जात न जान्यौ काल ।।
एक दिना निजसभा नरेस । निवसै[2] मानौं सुरगसुरेस ।।६१।।
धवल[3] केस देख्यौ निज सीस । मन कप्यो सोचै नरईस ।।
जाहि देखि मनउत्सव घटै । कामी जीवनकौ उर फटै।।६२।।
सो लखि सेत[4] वाल भूपाल । भोगउदास भये ततकाल ।।
जगतरीति सब अथिर असार । चितै चितमै मोह् निवार ।६३।
वाल अवस्था भई वितीत । तरुनाई आई निज रीत ।।
सो अब वीती जरा[5] बसाय । मरन दिवस यो पहुचै आय ।६४।
बालक काया कूंपल सोय । पत्ररूप जोवनमै होय ।।
पाको पात[6] जरा तन करै । काल बयारि[7] चलत झर[8] परै।।
कोई गर्भमाहि खिर जाय । कोई जनमत छोडै काय ।।
कोई वाल दसा धरि मरै । तरुन अवस्था तन परिहरै ।।६६।।
मरन दिवसको नेम न कोय । यातै कछु सुधि परै न लोय ।।
एक नेम यह तो परमान । जन्म धरै सो मरै निदान[9] ।।६७।।
महापुरुष उपजे बडभागि । सब परलोक गये तन त्यागि ।।
ससारी जन अपनी बार । पूरबउदै करै अनुसार ।।६८।।
परवत[10]पतित नदीके न्याय[11]छिनही छिन थिति[12]बीतो जाय।
रागअधप्रानी जगमाहि । भोगमगन कछु सोचै नाहि ।।६९।।

१ बडे २ बसे ३ सफेद ४ सफेद ५ बुढापा ६ पत्ता ७ हवा ८ झडपडे ९ आखिर
१० पहाड मे गिरने बाली ११ तरह १२ स्थिति ।

अंतकाल जब पहुँचै आय । कहा होय जो तब पछताय ।।
पानी पहले बंधै जो पाल । वही काम आवै जल-काल ।७०।
यही जान आतमहितहेत । करै विलंब[1] न संत सुचेत ।
आज काल जे करत रहाँहि । ते अजान पीछे पछताँहि ।७१।
रात दिवस घटमाल[2] सुभाव । भरि भरि जलजीवनकी आव ।।
सूरज चांद बैल ये दोय । काल रँहट नित फेरै सोय ।।७२।।

दोहा ।

राजा राना छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबकों एक दिन, अपनी अपनी बार ।।७३।।
दलबल[3] देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती विरिया[4] जीवकों, कोउ न राखनहार ।।७४।।
दामविना निर्धन दुखी, तिसनावस धनवान ।
कहू न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान ।।७५।।
आप अकेला अवतरै[5], मरै अकेला होय ।
यों कबहो इस जीवका, साथी सगा न कोय ।।७६।।
जहा देह अपनी नहीं, तहा न अपनो कोय ।
परसम्पति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ।।७७।।
दिपै[6] चाम[7]-चादर-मढी, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं घिनगेह[8] ।७८।।

---

१ देर २ अरहट के घडो की माला ३. मन। की शक्ति ४ समय ५ पैदा हो ६ चमकै ७ चमडा ८ घृणा का स्थान ।

सोरठा

मोहनींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा ।
कर्मचोर चहुं ओर, सरवस लूटैं सुधि नहीं ॥७९॥
सतगुरु देहिं जगाय, मोहनींद जब उपसमे[1] ।
तब कछु बनै उपाय, कर्मचोर आवत रुकैं ॥८०॥

दोहा ।

ग्यान दीप तप तेल भरि, घर सोधैं[2] भ्रम छोर ।
याविध बिन निकसै नहीं, पैठे[3] पूरब चोर ॥८१॥
पंचमहाव्रत-सचरन, समिति पंच परकार ।
प्रबलपंच इंद्रीविजय, धार निर्जरा सार ॥८२॥
चौदह राजु[4] उतंग[5] नभ, लोक पुरुषसंठान[6] ।
तामैं जीव अनादिसौं, भरमत है बिन ग्यान ॥८३॥
जाचें[7] सुरतरु[8] देहिं सुख, चिंतत चिंतारैन ।
बिन जाचें बिन चिंतवें, धर्म सकल सुख-दैन ॥८४॥
धन-कन-कंचन-राजसुख, सबै सुलभ करि जान ।
दुर्लभ है संसारमैं, एक जथारथ[9] ग्यान ॥८५॥

चौपई ।

इहिविध भूप भावना भाय । हित उद्यम चिंत्यौ मन लाय ॥
भवसौं मोह ममत निरवारि । उठ्यौ धीर धीरज उर धारि ८६
जेठे[10] सुतकौं दीनौं राज । आप चल्यौ सिवसाधनकाज ॥

१, शान्त हो २ खोजे ३ घुसे ४ एक नाप ५ ऊँचा ६ पुरुष के आकार ७ मांगने पर ८ कल्पवृक्ष ९ यथार्थ-सम्यक् १० बड़े ।

सागरदत्त मुनीसुरपास । संजम लियौ तजी जगआस ।।८७।।
धनें भूप भूपतिके संग । धरे महाव्रत निर्भय अंग ।।
अब आनन्द महामुनि धीर । वननिवास विचरैं वन बीर ।८८।
दुद्धर[1] तप बारह विध करै । दुविध संग-ममता परिहरै ।।
तिनके नाम कहूं कछु धार । जिनसासन जिनकौ विस्तार ।८९
प्रथम महातप अनसन[2] नाम । दूजो ऊनोदर[3] गुनधाम ।
तीजो है व्रतपरिसंख्यान । रसपरित्याग चतुर्थम मान ।।९०।।
पंचम भिन्न-सयनासन सार । कायकलेस छठौ अविकार ।।
यह षटबिध बाहज तप जान । अब अन्तर तप सुनौ सुजान ।९१
पहले प्राछित[4] विनय दुतीय । वैयावृत तीजो गन लीय ।।
चौथौ अन्तरंग सिज्झाय[5] । पंचम तप व्युत्सर्ग बताय ।।९२।।
षष्ठम ध्यान हरै सब खेद । ये अन्तरतप के सब भेद ।।
अब इनकौ संक्षेप सरूप । सुनौ संत तजि भाव विरूप ।।९३।।
जिनके सुनत बंधै सुभध्यान । सेवत पद लहिये निरवान ।।
तप बिन तीनकाल तिहुं लोय । कर्मनास कबही नाहि होय।९४।
दिनसौं लेय बरस लगि करै । चार प्रकार असन परिहरै ।।
राग-रोग-निर्दलन उपाय । सो अनसन भाख्यौ जिनराय ।९५।
पौन अर्ध चौथाई टेक । एक ग्रास अथवा कन एक ।।
ऐसी बिध जो भोजन लेत । ऊनोदर आलस हर लेत ।।९६।।
जैसी प्रथम प्रतिग्या करै । ताही विध भोजन आदरै ।।

---

१ घोर २ उपवास ३ भूख से कम खाना ४. प्रायश्चित ५ स्वाध्याय ।

मो कहिये व्रतपरिसख्यान । आसाव्याधि-विनासन जान ।९७।
लवनादिक रस छारि उपाध । नीरसभोजन भुंजै साध ।।
रसपरित्याग कहावै एम । इन्द्रियमदनासन यह नेम ।।९८।।
सून्यगेह गिरि गुफा मसान । नारि-नपुंमक-वर्जित थान ।।
वसै भिन्न-सयनासन सोय । यासौं सिद्धि ध्यानकी होय ।९९।
ग्रीषमकाल वसै गिरि-सीस । पावसमै तरुवरतल दीस ।।
सीतसमय तटिनीतट[1] रहै । काय कलेस कहावै यहै ।।१००।।

दोहा ।

या तपके आचरनसौं, सहनसील मुनि होय ।
अब अन्तर-तप-भेद छह, कहूं जिनागम जोय ।।१०१।।

चौपई ।

जो प्रमादवस लागै दोष । सोधै ताहि छोरि छल रोष ।।
आचारजवानी अनुसार । यही प्रथम प्राछित तप सार ।१०२।
जे गुनजेठे[2] साधु महंत । दरसन ग्यानी चारितवंत ।।
तिनकी विनय करै मनलाय । विनय नाम तपसो सुखदाय १०३
रोगादिक पीडित अविलोय[3] । बाल बिरध मुनिवर जो होय
सेव करै निजसंजम राखि । सो वैयाव्रत आगमसाखि ।१०४।
सकतिसमान सकल गुन ठाठ । करै साधु परमागमपाठ ।।
परमोत्तम तप सो सिज्झाय । जासौं सब संसय मिटजाय१०५
निजसरीरममता परिहरै । काउसग्गमुद्रा दिढ धरै ।।
अन्तर बाहर परिग्रह छार । सोई तप व्युत्सर्ग उदार ।।१०६।।

१ नदी के किनारे २, बडे ३ अवलोकन करे ।

आरत रौद्र निवारै सोय । धर्म सकल ध्यावै थिर होय ॥
जहा सकल चिंता मिट जाहि । यही ध्यानतप जिनमतमाहि १०७

दोहा ।

यह बारह विध तप विषम[1], तपै महामुनि घोर ॥
सहै परीषह बीस जो, ते पद बरनो जोर ॥१०८॥

छप्पय

क्षुधा तृषा हिम उसन, डस मसक[2] दुखभारो ।
निरावरन तन अरति, खेद उपजावन नारी ॥
चरिया आसन सयन, दुष्ट वायक[3] बध बंधन ।
जाचै नहीं अलाभ रोग, तिन-फरस निबंधन[4] ॥
मलजनित मान-सनमानवश, प्रग्या[5] और अग्यान कर ।
दरसन मलीन बाईस सब, साधुपरीषह जान नर ॥१०९॥

दोहा ।

सूत्रपाठ अनुसार ये, कहे परीषह नाम ॥
इनके दुख जे मुनि सहैं, तिनप्रति सदा प्रनाम ॥११०॥

सोमावती छन्द

अनसन ऊनोदर तप पोषत, पाखमास दिन बीत गये हैं ।
जोग न वनै जोग भिच्छाविधि, सूख अंग सब सिथिल भये हैं ।
तब वहु दुसह भूखकी वेदन, सहत साधु नहि नेक नये हैं ।
तिनके चरनकमल प्रति दिन दिन, हाथ जोरि हम सीस ठये हैं ।
पराधीन मुनिवरको भिच्छा, परघर लेहि कहैं कछु नाहीं ।

१ बहुत कठिन २. मच्छर ३. वचन ४. कारण ५. बुद्धि ।

प्रकृति-विरोधि पारना भुंजत, बढत प्यासकी त्रास तहाहीं।
ग्रीषमकाल पित्त अति कोपै, लोचन दोय फिरे जब जाहीं।
नीर न चहैं सहैं ऐसे मुनि, जयवते वरतौ जगमाहीं ।।११२।।
सीतकाल सबही जन कापै, खडे जहा वन विरछ[1] डहै हैं।
झझा वायु वहै बरसा रित, बरसत बादल झूमरहे हैं ।।
तहा धीर तटिनोतट[2] चौवट, ताल-पालपै[3] कर्म दहै हैं।
सहैं सँभाल सीतकी बाधा, ते मुनि तारनतरन कहे हैं ।।११३।।
भूख प्यास पीडै[4] उर अतर, प्रजलै[5] आत देह सब दागै[6]।
अगनिमरूप धूप ग्रीषमकी, ताती बाल[7] झालसी[8] लागै ।।
तपै पहार ताप तन उपजे, कोपै पित्त दाहजुर जागै।
इत्यादिक ग्रीषमको बाधा, सहत साधु धीरज नहिं त्यागै ।।
डास मास माखी तन काटै, पीडै बनपछी बहुतेरे।
डसै व्याल[9] विषयाले बीछू, लगै खजूरे[10] आन घनेरे ।।
सिंह स्याल सुंडाल[11] सतावें, रीछ रोझ दुख देहिं बडेरे।
ऐसे कष्ट सहैं समभावन, ते मुनिराज हरौ अघ मेरे ।।११५।।
अतर विषय-वासना वरतै, बाहर लोकलाजभय भारी।
तातै परम दिगबरमुद्रा, घर नहि सकै दोन ससारी ।।
ऐसी दुद्धर नगन परीषह, जीतै साधु सीलव्रतधारी।
निर्विकार बालकवत निर्भय, तिनके पायन ढोक हमारी ।।११६

१ वृक्ष २ नदी किनारे ३ तालाब के किनारे ४ दुःख दे ५ जलै ६ झुलसे ७. गरम हवा ८. तीक्ष्ण ९ सर्प १० कछले ११ हाथी।

देश कालको कारन लहिकैं, होत अर्चन[1] अनेक प्रकारैं।
तब तहां खिन्न होहि जगवासी कलमलाय थिरतापद छारैं॥
ऐसी अरति परीषह उपजत, तहा धीर धीरज उर धारैं।
ऐसे साधनको उर अंतर, बसौं निरंतर नाम हमारैं॥११७॥
जे प्रधान केहरिकौं[2] पकरैं, पन्नग[3] पकरि पावसौं चपत[4]।
जिनको तनक देखि भौं बाको, कोटिक सूर दीनता जंपत॥
ऐसो पुरुष-पहार-उडावन,-प्रलय-पवन तिय[5]-वेद पयपत[6]।
धन्य-धन्य ते साधु साहसी, मनसुमेरु जिनको नहि कंपत॥११८॥
चारहाथ परवान निरखि पथ, चलत दिष्ट इत उत नहि तानैं
कोमल पांय कठिन धरती पर, धरत धीर बाधा नहि मानैं॥
नाग[7] तुरंग[8] पालकी चढ़ते, ते सवाद[9] उर यादि न आनैं।
यों मुनिराज भरैं चर्यादुख, तब दिढकर्म कुलाचल[10] भानैं॥
गुफा मसान सैल[11] तरु[12]-कोटर, निवसैं जहा सुद्धि भू हेरैं।
परिमित काल रहैं निहचल तन, वारबार आसन नहि फेरैं॥
मानुष देव अचेतन पसुकृत, बैठे विपत आन जब घेरैं।
ठौर न तजैं भजैं थिरता पद, ते गुरु सदा बसौ उर मेरैं॥१२०॥
जे महान सोनेके महलन, सुन्दरसेज सोय सुख जोवैं।
ते अब अचलअंग एकासन, कोमल कठिन भूमिपर सोवैं॥
पाहन-खड कठोर कांकरी, गडत कोर कायर नहि होवैं।
ऐसी सयन-परीषह जीतत, ते मुनि कर्मकालिमा धोवैं॥१२१॥

१. दुखी २. सिंह ३. सांप ४ कुचले ५ स्त्री वेद ६ प्रकपत=कंपित
७. हाथी ८. घोडा ९ आनन्द १० पहाड ११. पर्वत १२ वृक्षका खोखला भाग

जगत जीव जावत[1] चराचर, सबके हित सबके सुखदानी।
तिनै देख दुर्वचन कहैं दुठ, पाखडी ठग यह अभिमानी॥
मारौ याहि पकरि पापीकौं, तपसी-भेष चोर है छानी[2]।
ऐसैं वचनवाणकी वर्षा, छिमाढाल ओढै मुनिग्यानी॥१२२॥
निरपराध निर्बैर महा मुनि, तिनकौं दुष्टलोग मिलि मारैं।
केई खैंच थभसौं बाधत, केई पावकमैं[3] परजारैं॥
तहा कोप नहिं करहिं कदाचित, पूरबकर्मविपाक[4] विचारैं।
समरथ होय सहैं वध बधन, ते गुरु सदा सहाय हमारैं।१२३।
घोर वीर तप करत तपोधन, भयौ खीन सूखो गल बाहीं।
अस्थि[5] चाम अवसेस रह्यो तन, नसाजाल झलक्यौ जिसमाहीं।
ओषधि असन[6] पान इत्यादिक, प्रान जाय पर जाचत नाहीं।
दुद्धर अजाचीक[7] व्रत धारैं, करहिं न मलिन धरमपरछाहीं॥
एक बार भोजनकी विरियाँ, मौन साधि बसती[8]मैं आवैं।
जो नहिं बनै जोग भिच्छाबिधि, तौ महंत मन खेद न लावैं।
ऐसे भ्रमत बहुत दिन बीतैं, तब तप विरद भावना भावैं।
यो अलाभकी परम परीषह, सहैं साधु सोई सिव पावैं॥१२५॥
बात पित्त कफ सोनित[9] चारौं, ये जब घटैं बढैं तनमाहैं।
रोगसजोग सोग तन उपजत, जगत जीव कायर हो जाहैं॥
ऐसी व्याधि वेदना दारुन[10], सहैं सूर उपचार न चाहैं।
आतम-लीन देहसौं विरकत, जैन जती निज नेम निबाहैं।१२६।

१ जितने २ छिपा हुआ ३ अग्नि मे ४ फल ५ हड्डी ६ भोजन ७ नहीं मांगना ८ नगर-गांव ९ खून १० कठोर।

सूखे तिन अरु तीखन काटे, कठिन काकरी पाय विदारैं।
रज उड़ि आय परै लोचनमैं, तीर फास तन पीर वियारैं॥
तापर पर सहाय नहिं वाछत, अपने करसौं काढ न डारैं।
यों तिन-परस-परीषहविजई, ते गुरु भवभव सरन हमारैं।१२७।
जावजीव[1] जलन्हौन तज्यौ जिन, नगनरूप वनथान खरे है।
चलै पसेव धूपकी विरिया, उड़त धूल सब अग भरे हैं॥
मलिन देहकौं देखि महामुनि, मलिन भाव उर नाहिं करे हैं।
यौं मलजनित परीषह जीतैं, तिनैं हाथ हम सीस धरे हैं।१२८।
जे महान विद्यानिधि विजई, चिरतपसी[2] गुन अतुल भरे है।
तिनकी विनय वचनसौं अथवा, उठि प्रनाम जन नाहिं करे हैं॥
तौ मुनि तहा खेद नहिं मानै, उर मलीनता भाव हरे है॥
ऐसे परमसाधुके अहनिसि[3], हाथ जोरि हम पाय परे हैं।१२९।
तर्क छन्द व्याकरन कलानिधि, आगम अलंकार पढ जानै।
जाकी सुमति देखि परवादी, विलखे होंहि लाज उर आनै॥
जैसैं नाद[4] सुनत केहरिकी[5], बनगयन्द[6] भागत भय मानैं।
ऐसी महाबुद्धिके भाजन, पै मुनीस मद रंच न ठानैं॥१३०॥
सावधान बरतैं निसिवासर, संजमसूर परमवैरागी।
पालत गुपति गये दीरघ दिन, सकल संग-ममतापरित्यागी॥
अवधिग्यान अथवा मनपरजय, केवलकिरन अजौं नहिं जागी।
यौं विकलप नहिं करहिं तपोधन, सो अग्यानविजई बड़भागी।

१ यावज्जीव २ चिरकाल के साधु ३ रात दिन ४. आवाज ५. सिंहकी ६. बन का हाथी।

चौपाई ।

बिनावोध दुर्जन दुख देय । समरथ होय सकल सह लेय ।।
क्रोध कषाय न उपजै जहा । उत्तम छिमा कहावै तहां ।१३६।
आठ महामद पाय अनूप । निरभिमान बरतै मृदु[1]रूप ।।
मानकषाय जहा नहिं होय । मार्दव[2] नाम धरम है सोय।१३७।
जो मनचिंतै सो मुख कहै । करै कायसौं कारज वहै ।।
मायाचार न उर पाइये । आर्जव[3] धर्म यही गाइये ।।१३८।।
बोलै बचन स्वपरहितकार । सत्यस्वरूप सुधा-उनहार ।।
मिथ्यावचन कहै नहिं भूल । सोई सत्य धर्मतरुमूल ।।१३९।।
पर-कामिनि पर-दरबमझार । जो विरक्त बरतै छल छार ।।
अतर सुद्ध होय सरवग । सोई सौच[4] धर्मकी अग ।।१४०।।
मन समेत जो इंद्री पच । इनकौं सिथिल करै नहिं रंच ।।
त्रस थावरकी रच्छा जोय । सजम धर्म बखान्यौ सोय ।१४१।
ख्याति लाभ पूजा सब छड । पच करन[5]कौं दीजै दड ।।
सो तपधर्म कह्यौ जगसार । अनसनादि बारह परकार।।१४२।।
सजमधारी व्रती प्रधान । दीजै चउविध उत्तम दान ।।
तथा दुष्टविकलप परिहार । त्यागधर्म बहु सुखदातार।१४३।
बाहिज परिग्रहकौं परित्याग । अतर ममता रहै न लाग ।।
आकिंचन यह धर्म महान । सिवपददायक निहचै जान।१४४।
बड़ी नारि जननी सम जान । लघु पुत्री सम बहिन बखान ।।
तजि विकार मन बरतै जेह । ब्रह्मचर्य परिपूरन एह ।।१४५।।

---

१ कोमल २ मद न करना ३ निष्कपट ४ लोभ रहितपना ५ इन्द्रियां ।

साधुसमाधि कहावै सोय । यही भावना अष्टम होय॥१५४॥
दसबिध साधु जिनागम कहे । पथ[1]पीडित रोगादिक गहे ।।
तिनकी जो सेवा सतकार । यही भावना नौमी सार ।१५५।
परमपूज्य आतम अरहंत । अतुल अनंत चतुष्टयवंत ।।
तिनकी थुति नति[2] पूजा भाव । दसम भावना भवजल-नाव ।
जिनवरकथित अर्थ अवधार । रचना करै अनेक प्रकार ।।
आचारजकी भक्तिविधान । एकादसम भावना जान ।१५७।
विद्यादायक विद्यालीन । गुणगरिष्ठ पाठक[3] परवीन ॥
तिनके चरन सदा चित रहै । बहुश्रुतिभक्ति बारमी यहै ।१५८।
भगवतभाषित अर्थ अनूप । गनधरग्रंथित ग्रंथसरूप ।।
तहा भक्ति बरतै अमलान । प्रवचनभक्ति तेरमी जान ।१५९।
षट आवश्यक क्रिया विधान । तिनकी कबही करै न हान ।।
सावधान बरतै थिरचित्त । सो चौदहमी परमपवित्त ।१६०।
करि जप तप पूजा व्रत भाव । प्रगट करै जिनधर्मप्रभाव ॥
सोई मारग परभावना । यहै पचदसमी भावना ।।१६१।।
चार प्रकार संघसों प्रीति । राखै गाय-बचछकी रीति ।।
यही सोलमी सबसुखदाय । प्रवचनवात्सल्य अभिधाय[4]।१६२।

दोहा

सोलहकारन भावना, परम पुन्यकी खेत ।
भिन्न भिन्न अरु सोलहो, तीर्थंकरपद हेत ।।१६४।।
बधप्रकृति जिनमतविषै, कही एकसौ बीस ।

---

१ थके हुए २ नमस्कार ३. उपाध्याय ४ नाम ।

सो सत्रह मिथ्यातमै, बाधत है निसदोस ।।१६४।।
तीर्थंकर आहार[1]-दुक, तीन प्रकृति ये जान ।।
इनको बध मिथ्यातमैं, कह्यौ नहीं भगवान ।।१६५।।
तातें तीर्थंकर प्रकृति, तीनों समकितमांहि ।।
सोलह कारनसौं बधें, सबको निहचें नाहि । १६६।।

सोरठा।

पूज्यपाद मुनिराय, श्रीसरवारथसिद्धि मैं ।
कह्यौ कथन इहि भाय, देखि लीजियो सुबुधिजन ।१६७

कुसुलता

सोलह कारन ये भवतारन, सुमरत पावन होय हियौ ।
भावें श्रीआनन्दमहामुनि, तीर्थंकरपदबध कियौ ।।१६८।।
काय कषाय करी कृस[2] अति ही, सत सजम गुण पोढ[3] कियौ ।
तपबल नाना रिद्धि उपन्नी, राग विरोध निवार दियौ ।।
जिस वन जोग धरें जोगेसर, तिस वनको सब विपत टलै ।
पानी भरहिं सरोवर सूखे, सब रितुके फलफूल फलें ।१७०।
सिंहादिक जे जातविरोधी, ते सब बैरी वैर तजें ।
हस भुजगम मोर मजारी[4], आपसमैं मिलि प्रीति भजें ।१७१।
सोहैं साधु चढे समतारथ, परमारथ पथ गमन करें ।
सिवपुर पहुचनको उर वाछा, और न कछु चित चाह धरें ।।
देहविरक्त ममत्तबिना मुनि, सबसौं मैत्री भाव बहैं ।
आतमलीन अदीन[5] अनाकुल, गुन बरनत नहिं पार लहैं ।।

---

१ आहारक आहारक मिश्र २ दुबल ३ प्रौढ–मजबूत ४ बिल्ली
५ दीनता के भाव बिना ।

एक दिना ते छीर बनांतर, ठाड़े मुनि वैराग भरे ।
पौनपरीषहसौं नहिं कांपे, मेरुसिखर ज्यो अचल खरे ।१७४।
सो मर नरक कमठचर पापी, नानाभांति विपत्ति भरी ।
तिसही काननमै विकटानन[1], पचानन[2]को देह धरी ।१७५।
देखि दिगबर केहरि[3] कोप्यौ पूर्वभवांतर बैरवह्यौ ।
धायौ दुष्ट दहाड ततच्छन, आन अचानक कंठ गह्यौ ।१७६।
तीखे नखन विदारै काया, हाथ कठोरन खड करै ।
बाकी दाढनसौं तन भेदै, वदन[4] भयानक ग्रास भरै ।१७७।
यो पसुकृत परचड परीषह, समभावनसौं साधु सही ।।
क्रोध विरोध हिये नहिं आन्यो, परमछिमा उरमांझ वही ।
धनि धनि श्रीआनन्दमुनीसुर, धनि यह धीरजभाव भजे ।।
ऐसे घोर उपद्रवमै जिन, जोगजुगतसौं प्रान तजे ।१७९।
अंतसमयपरजत तपोधन, सुभभावनसौं नाहिं चये ।
आनत नाम स्वर्गमै स्वामी, सुरगनपूजित इन्द्र भये ।१८०।

दोहा ।

सुरगलोक बरनन लिखौं, जथासकति सुखरीत ।
धर्म धर्म के फलविषै, ज्यो मन उपजै प्रीत ।।१८१।।

चौपई ।

चंदकांति मूंगामनिमई । नानावरन भूमि बरनई ।।
रातदिवसको भेद न जहा । रतनउवोत निरंतर तहा ।१८२।
मनि कगुरे कचन प्राकार । औंड़ी परिखा[5] ऊंचे द्वार ।।

१ भयकर मुख वाले २ सिंह ३ सिंह ४. मुख ५ खाई ।

तोरन तुंग रतनगृह लसं । ऐसे सुरगलोकपुर वसं ।१८३।
चपक पारिजात मदार । फूलन फैल रही महकार ।।
चंतविरछतं वढ्यो सुहाग[1] । ऐसे सुरग रवाने[2] वाग ।१८४।
विपुल[3] वापिका[4] राजें खरीं । निर्मल नीर सुधामय भरीं ।।
कचनकमलछई छविवान । मानिकखडखचित सोपान ।।१८५।
कामधेनु सोहैं सव गाय । कलपवृच्छ सवही तरुराय ।।
रतनजाति चितामनि सवै । उपमा कौन सुरगकों फवै ।१८६।
गान करं कहि सुरसुन्दरीं । वन-वीथिन[5] वैठी रसभरीं ।।
कहीं देवगन वनितासग । लीलावन विचरें मनरग ।।१८७।।
मद सुगधि वहै नित वाय । पहुपरैनुरजित[6] सुखदाय ।।
आंधी मेह न कवहीं होय । ताप तुसार[7] न व्यापे कोय ।१८८
रितुकी रीति फिरं नहि कदा । सोमकाल सुखदायक सदा ।
छत्रभग चोरी उतपात । सुपने नहीं उपद्रवजात ।।१९०।।
ईति भीति भूचाल न होय । वैरी दुष्ट न दीसं कोय ।।
रोगी दोखी दुखिया दीन । बिरधवंस[8] गुणसपतिहीन ।१९०।
बढती अगविकलता कहो । ये सब सुरगलोकमैं नहीं ।।
सहज सोम सुन्दर सरवग । सब आभरनअलकृत अग ।१९१।
लच्छनलच्छित सुरभि सरीर । रिद्ध–सिद्धमदिर मनधीर ।।
कामसरूपी आनदकद । कामिनिनेत्रकमलिनीचद ।।१९२।।
बदन प्रसन्न प्रीतरस भरे । विनयबुद्धि विद्या आगरे ।।

१ सौन्दर्य २ सुन्दर ३ घनी ४ बावडी ५ गली ६ पुष्प पराग से अनुरजित ७. पाला ८ बुढापा ।

यों बहुगुणमंडित स्वयमेव । ऐसे सुरगनिवासी देव ॥१६३॥

दोहा ।

ललितवचन लीलावती, शुभलच्छन सुकुमाल ।
सहजसुगंध सुहावनी, जथा मालती माल ॥१६४॥
सीलरूप लावन्यनिधि, हावभावरसलीन ।
सोभा सुभगसिंगारकी, सकलकलापरवीन ॥१६५॥
निरत गीत संगीत सुर, सब रसरीतमँझार ॥
कोविद[1] होंहि सुभावतें, सुरगलोककी नार ॥१६६॥
पंचइन्द्रिमनको महा, जे जगमें सुखहेत ।
तिन सबहीको जानियो, सुरगलोकसमेत ॥१६७॥

चौपई ।

इत्यादिक बहुसपतिथान । देवलोकमहिमा असमान[2] ॥
आनतवर[3] विमान है जहा । धर्यो जनम सुरपतिने तहां ॥

दोहा ।

उपज्यो संपुट[4] गर्भतें, तेज पुंज अति चंड ।
मानों जलधरपटलतें, प्रगट्यो दामिनि[5]-दंड ॥१९९॥
एक महूरतमें तहा, संपूरन तन धार ।
किधों रतनकी सेज तजि, सोयत उठ्यो कुमार ॥२००॥
मनिकिरीट माथे दिपं, आनन अधिकसुरूप ।
कानन कुण्डल जगमगं, पानन कटक अनूप ॥२०१॥
भुजभूषनभूषित भुजा, हिये हार छबि देत ।

१ बुद्धिमान २ समानता रहित ३ तरहवां स्वर्ग ४. उत्पाद शैया ५ बिजली

अग अंग इत्यादि बहु, सब आभरनसमेत ॥२०२॥

चौपई।

सनै सनै देखैं दिस सही। लोचनकोर कान लगि रही॥
विसमयवत होय मन ताम। कहै कौन आयौ किस धाम॥
अहो कौन यह उत्तम देस। सकलसपदाथान विसेस॥
कचनके मन्दिर मनिजरे। दीसैं दिव्य अपछराभरे॥२०४॥
अति उतंग[1] अति ही दुति धरै। मध्य सभा मंडप मनहरै॥
सिंहासन अद्भुत इहि ठाम। मानौं मेरुसिखर अभिराम॥
अनुपम नाटक देखनजोग। श्रवणसुखद ये गीत मनोग॥
ये लावन्यवतीं वरनारि। रूपजलधिबेला[2] उनहारि।२०६।
ये उतग हाथी मदभरे। तेज तुरगनके गन खरे॥
कंचनरथ पायकदल[3] जेह। मो प्रति सिर नावै सब येह।२०७।
सब आनन्द भरे मुझ देख। सब विनीत सब सुन्दर भेख॥
जयजयकार करै विहँसाय। कारन कछु जान्यौ नहिं जाय॥

दोहा।

इन्द्रजाल अथवा सुपन, कै माया भ्रम कोय।
यो सुरेस सोचै हिये, पै निरनय नहिं होय॥२०६॥

चौपई।

तब तिस थानक देव प्रधान। मनकी बात अवधिसौं जान॥
जोगवचन बोलैं सिरनाय। ससयहरन स्रवनसुखदाय।२१०।
हम विनती सुनिये सुरराज। जीवन जनम सफल सब आज।

---

१ ऊंचा २ पाज ३ पैदल।

अब सनाथ स्वामी हम भये । जनमजोगतै पावन थये ।२११।
सूरजउदय कमलिनी-बाग । विकसै जथा जग्यौ सिर भाग ।।
नन्दवर्ध[1] हम देहिं असीस । चिर यह राज करौ सुरईस ।२१२।
अहो नाथ यह उत्तम ठाम । सुरग तेरमो आनत नाम ।।
जगतसार लछमीको येह । निरुपमभोग निरतर गेह ।।२१३।।
तुम इहि थान इन्द्र अवतरे । पूर्वजन्म दुद्धर तप धरे ।।
ये सब सुर सेवक तुमतनें । ये परिवार लोक हैं घनें ।।२१४।।

सोरठा ।

ये मनोग वनिता मडली । तुम आदेस चहै मनरली ।।
ये पटदेवी[2] लावनखान[3] । सब देवीं इन मानैं आन ।।२१५।।
ये विमान पुर महल उतंग । चमर छत्र सेना सप्तग ।।
धुजासिहासनआदि मनोग । सकल सम्पदा यह तुम जोग ।२१६
ऐसे वचन अनन्तर[4] तबै । जान्यौ इन्द्र अवधिबल सबै ।।
मै पूरव कीनौं तप घोर । दडे करम धरमधनचोर ।।२१७।।
जीवजातकौं निर्भयदान । दीनौं आप बराबर जान ।।
सब उपसर्ग सहे धरि धीर । जीत्यौ महारागरिपु वीर ।२१८।
काम विषम वैरी बस कियो । अरु कषाय बनकौं जारियो ।
जिनवरआन अखंडित पोष । चारित-चिर-पाल्यौ-निरदोष२१६
इहि विध सेयौ धर्म महान । तिस प्रभाव दीखै यह थान ।।
दुरगतिपात निवारन करौ । तिन मुझ इन्द्रलोक ले धरौ२२०
सो अब सुलभ नहीं इस देह । भोग जोग है थानक येह ।।

१. आनन्द पूर्वक बढना २ प्रमुखदेवी=इन्द्राणी ३ लावण्य से भरपूर ४. पश्चात्

रागआग दुखदायक सदा । चारिनजन्न बिन बुझै न कदा ॥
सो कारन सुरगतिमें नाहि । यतको उदय न या पदमाहि ॥
ह्या सम्यक्दरसन अधिकार । सकादिक मलवरजित सार२२२
कै जिनवरको भक्ति सहाय । ग्रोर न दीखै धर्मउपाय ॥
यह विचारि जिनपूजनहेत । उठ्यो इन्द्र परिवारसमेत ।२२३।
अमृतवापिकामें करि न्होन । गयो जहा मनिमय जिनभौन ॥
रतनबिम्ब वन्दे बिहसाय । भावभगतसों सीस नवाय ।२२४।
पूजा करी दरव धरि आठ । पुलकितग्रग पढ्यो थुतिपाठ[1] ।
चैतबिरछजिनप्रतिमा जहा । महामहोच्छव कीनों तहा ।२२५
यों बहु पुन्य उपायो सही । फेरि आय निज सम्पति गही ॥
दिव्यभोग भुंजे वडभाग । लोकोत्तम जिम सहजसुहाग ।२२६।
सोभनरूप[2] प्रथम सठान[3] । वसु[4] वैक्रियक सुलच्छनवान ॥
कोमल सुरभि सचिक्कन देह । सातधातवरजित गुनगेह ।२२७।
पलकपात लोचनमें नहीं । मलपसेव नख केस न कहीं ॥
जरा कलेस न चिंता सोग । नाहीं अलप मृत्युभय रोग ।२२८
इत्यादिक दुखजोग अनेक । तिनमें नहीं अमरके एक ॥
आठरिद्धि अनिमादि पसत्थ[5] । तिसबल सकलकाज समरत्थ ।
सुरग लोकके सुखकी कथा । कहैं कहा लों बुधबल जथा ॥
बैठि मनोगत विमल विमान । विचरैं नभपथ वाछितयान ॥
कबही मेरु जिनालय गमैं । कबही आन कुलाचल रमैं ॥
दीप समुद्र असख अपार । करैं सुरेंद्र सुछंद विहार ॥२३१॥

१. स्तुति २ सुन्दर ३ समचतुरस्र सस्थान ४ आठ ५ प्रशस्त=उत्तम ।

वर्ष वर्षमें हर्ष वढाय । तीन वार नन्दीसुर जाय ॥
पंचकल्यानक समयसुजोग । करैं तीर्थपदनमन नियोग ।२३२।
और केवली प्रभुके पाय । दोय कल्यानक पूजैं आय ॥
निज कोठे थिर होय सुग्यान । करैं दिव्यवानीरसपान ।२३३।
सभासिंहासन वैठि सुरेस । देय सुरनप्रति हितउपदेस ॥
करैं तत्त्ववरनन विस्तार । अनेकांतवानी अनुसार ॥२३३॥
जे सुर सम्यक्‌दरसनहीन । तपवल देव भये सुखलीन ॥
तिनप्रति धर्मवचन उचरैं । दरसनगुनकी प्रापति करैं ॥२३५॥
इहविध विविध करैं सुभकाज । महापुन्य संचैं सुरराज ॥
दरसनग्यान रतनभंडार । चारित गुनको नहिं अधिकार ।२३६।
धर्मवासनावासित जोग । करैं पुनीत[1] पुन्यफलभोग ॥
कवहीं सुनैं अपछरा-गान । निरखैं नाटक निरुपम थान ।२३७।
कवहीं सुभ सिंगाररसलीन । हाव भाव जोवैं[2] परवीन ॥
कवहीं हास्यकथा विस्तरैं । वनक्रीड़ा देविन संग करैं ।२३८।
यों नानाविध करत विलास । प्रतिदिन सुखसागरमैं वास ॥
साढे तीन हाथ परवान । दिव्यसरीर अतुल दुतिवान ।२३९।
सागर वीस परमथिति[3] जास । वीस पच्छ[4] पर लेय उसास ॥
वीसहजार वर्ष अवसान[5] । मनसा भोजन करैं महान ।२४०।
पंचम पिरथी लौं जिस सही । अवधिसकति जिनसासन कही ।
तावत मान विक्रियाखेत । सकलकाज साधनसुख हेत ।२४१।

१ पवित्र २ देखे ३ उत्कृष्ट स्थिति ४ पखवाड़े ५. अन्त ।

असंख्यात सुर सेवन पाय । देवीनेत्रकमलदिनराय ॥
यों पूरवकृत पुन्यसजोग । करै इन्द्र इन्द्रासन भोग ॥२४२॥

दोहा ।

कहा इन्द्रअहमिंद्र पद, जनम धरैं फिर आय ॥
जैनधर्म नृपकी धुजा, लोक-सिखर फहराय ॥२४३॥

इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषायां आनन्दरायइन्द्रपदप्राप्तिवर्णनं नाम चतुर्थोऽधिकारः ।

पाँचवाँ अधिकार ।



दोहा ।

वन्दौं पारसपदकमल, अमलबुद्धि दातार ॥
अब बरनौं जिनराजके, पंच कल्यानक सार ॥१॥

चौपई

प्रथम अनंत अलोकाकास । दसौं दिसा मरजाद न जास ॥
दूजो द्रव्य जहां नहिं और । सुन्न सरूप गगन सब ठौर ॥२॥
तहां अनादि लोकथिति जान । छोड़े[1] पांव पुरुष-सठान[2] ॥
कटिपै[3] हाथ सदा थिर रहै । यह सरूप जिनसासन कहै ॥३॥
पौन[4] पिंड[5] वेढ्यो सरवंग । चौदह राजू गगन उतंग ॥
घनाकार राजू गन ईस । कहे तीन सौ तेतालीस ॥ ४ ॥

१ पांव फैलाये हुए २ पुरुष के आकार ३ कमर पर ४ हवा ५. मनुष्य ।

जीवादिक छह दरब सदीव । तिनसौं भरयौ जथा घट घीव ।
स्वयंसिद्ध रचना यह बनी । ना इस करता हरता धनी ।।५।।
दरब दृष्टिसौं ध्रौव्यसरूप । परजयसौं उतपतछयरूप ।।
जैसे समुद सदा थिर लसै । लहर न्याय उपजै अरु नसै ।।६।।
लोक[1]-नाड़ि तिस मध्य महान । चौदह राजू व्योम उचान ।।
राजूमित[2] चौड़ी चहुंपास । यह त्रसखेत जिनागम भास ।७।
याके बाहर जगम[3] जीव । समुदघात बिन नाहिं सदीव ।।
तामै तीनौं लोक बिसाल । ऊरध मध्य और पाताल ।।८।।
सोलह स्वर्ग पटल बावन्न । नव ग्रीवक नव जान रवन्न ।।
अनुदिस और अनुत्तर येह । एक एक ही पटल गिनेह ।।९।।
ये सब त्रेसठ पटल बखान । सिद्धखेत सोहैं सिर थान ।।
ऊरध लोक बसैं इहि भाय । उत्तम सुरथानक सुखदाय ।१०।
अधोलोकमै बहु बिध भेव । सात नरक असुरादिक देव ।।
मध्यलोक पुनि तीजौ तहां । असख्यात दीपोदधि जहां ।११।
तिनमै सोभावंत सुहात । जबूदीप जगतविख्यात ।।
लच्छ[4] महाजोजन विस्तार । सूरजमडलकी उनहार ।।१२।।
वज्रकोट जिस ओट अभंग[5] । परिमित जोजन आठ उतंग ।।
चारौं दिस दरवाजे चार । तिनके नाम लिखौं अवधार[6] ।१३
विजय नाम पूरबमैं जान । वैजयंत दच्छिन दिस ठान ।।
पच्छिम भाग जयंत दुवार । उत्तरमैं अपराजित सार ।१४।

---

१. त्रस नाड़ी २ एक राजू प्रमाण ३ त्रस ४ एक लाख योजन ५ भेद रहित ६ धारण करो ।

लवन-समुद्र खातिकारूप[1] । चहुंदिस वेदची सउत सरूप ॥
तहां सुदरसन मेरु महान । मध्य भाग सोभा असमान ॥१५॥
अति उतंग लख जोजन सोय । रिजुविमान जा ऊपर होय ।
सब सैलनमैं ऊंचो यह । ग्रीव उठाय किधौं इम कहै ॥१६॥
करै कौन गिरि मेरी रीस[2] । जिनपति न्हौन होय मुझ सीस ।
चारौं दिस चारौं गजदंत । नील निषधसौं लगे महंत ॥१७॥
छह कुलपर्वत बड़े वियार[3] । पूरब पच्छिम दीरघ सार ॥
आठ महागिरि दिग्गज नाम । मेरु निकट आठों दिस ठाम ॥१८॥
कनक[4] वरन सोलह वक्खार । महाविदेहविषैं छविसार ॥
कंचनगिरि दोसैं परवान । सीता सीतोदा तट थान ॥१९॥
कुरु भूमाहिं जनक गिरि चार । नील निषधके निकट निहार ।
चार नाभिगिरि मिथ्या नाहिं । मध्यम जघनभोगभूमाहिं ॥२०॥
विजयारध पर्वत चौंतीस । इतने ही वृषभाचल दीस ॥
ते मलेच्छमधिखंडनविखैं । चक्री जहां नांव निज लिखैं ॥२१॥
यो गिरि दीपविषैं वरनये । ग्यारह अधिक एक सौ भये ॥
भद्रसाल वन दोय सुवास । पूरव अपर[5] मेरुके पास ॥२२॥
दो तरु जंबू-सेंभलतनै । उत्तम भोगभूमिमैं बनै ॥
छह द्रह बड़े कुलाचलसीस । पदम महापदमादिक दीस ॥२३॥
बीस सरोवर और सुनेह । सीता सीतोदामधि तेह ॥
उत्तम मध्यम जघन विसेस । भोगभूमि छह कही जिनेस ॥२४॥
महादेस चौंतीस सुखेत । ऐरावत अरु भरत समेत ॥

---

१ खाई २ बराबरी ३ विस्तार ४ सोने जैसे रंग के ५ पश्चिम ।

इतनी ही नगरी परवान । आरजखंडमध्य थिर थान ।२५।
उपसमुद्रकी सख्या यही । कछू विनासिक कछु थिर सही ।।
पूरब दिस दो बाग महत । देवारन्य दीपके अंत ।। २६ ।।
ऐसे ही पच्छिम दिस दोय । भूतारन्य नाम तिन होय ।।
गंगादिक सरिता दसचार । चौसठ महा विदेहमझार ।।२७।।
बारह विपुल विभंगा जेह । महानदी नव्वै सब येह ।।
इतने ही सब कुंड महान । जहां तरंगिनि[1] उतरें आन ।२८।
सत्रह लाख सवन परिवार । सहसछानवै ऊपर धार ।।
यह सब जबूदीपसमास । आगममै विस्तार प्रकास ।।२९।।

दोहा ।

यही कथन अगनविषै, वरन्यौ गनधर ईस ।
तीनलाख पदमै सही, ऊपर सहस पचीस ।।३०।।

चौपई ।

यो अनेक रचना आधार । दीपराज राजै अधिकार ।।
तहां मेरुके दच्छिन भाग । किधौं भूमितिय सुभग सुहाग ।३१
भरतखड छहखड समेत । धनुषाकार विराजत खेत ।
तामै सबसुखधर्मनिवास । कासीदेश कुसलजनवास ।।३२।।
गाव खेट पुर पट्टन जहां । धन-कन भरे बसैं बहु तहां ।।
निवसें नागर जैनी लोय । दयाधर्म पालै सब कोय ।।३३।।
जिनमंदिर ऊचे जिनमांहि । नरनारी नित पूजन जांहि ।।
पद पद पुरपंकित[2] पेखिये । उदवसथान[3] न कहिं देखिये ।३४

---

१ दूसरी नदी २ नगरों की पंक्ति ३ ऊजड भूमि ।

नीर अगाध नदी नित बहैं । जलचर जीव जहां नित रहैं ।।
मुनिजनभूषित जिनके तीर । काउसग्ग[1] धरि ठाड़े धीर।३५।
ऊंचे परवत झरना झरैं । मारग जात पथिक मन हरैं ।।
जिनमैं सदा कंदराथान[2] । निहचल देह धरैं मुनि ध्यान ।३६।
जहां बडे निर्जनबनजाल । जिनमैं बहुबिध बिरछ बिसाल ।
केला करपट कटहल कैर । कैथ करोंदा कौंच कनैर ।।३७।।
किरमाला कंकोल कल्हार । कमरख कंज कदम कचनार ।।
खिरनी खारक पिंडखजूर । खैर खिरहटी खेजड़ भूर ।।३८।।
अर्जुन अमलो आम अनार । अगर अंजीर असोक अपार ।।
अरनी औंगा अरलू भने । ऊंबर अड अरीठा घने ।।३९।।
पाकर पीपल पूग[3] प्रियंग । पीलू पाटल[4] पाढ़ पतंग ।।
गौंदी गुडहल गूलर जान । गांडर[5] गुंजा[6] गोरख पान ।४०।
पचा चीढ़ चिरोंजी फली । चंदन चोल चमेली भली ।।
जंड जंभीरी जामन कोट । नीम नारियल हींस हिंगोट ।४१।
सौना सीसम सेंभल साल । सालर सिरस सदा फलजाल ।।
बांस बबूल बकायन बेर । बेत बहेडा बड़हल पेर ।।४२।।
महुआ मौलसिरी मचकुन्द । मरुवा मोखा करना कुन्द[7] ।।
तूत तबोलनि तींदू ताल । तगर तिलक तालीस तमाल ।४३।
इहि बिध रहे सरोवर छाय । सबही कहत कथा बढ़ जाय ।
तहां साधु एकांत विचार । करैं पठनपाठनविधि सार ।।४४।।

---

१ कायोत्सर्ग २ गुफा ३ सुपारी ४ गुलाब ५ खस ६ चिरमी ७ मोगरा

बिबिध सरोवर सीतल ठाम । पंथी बैठि लेहिं बिसराम ॥
निर्मल नीर भरे मनहार । मानौं मुनिचित विगतविकार ।४५।
सोहैं सफल सालके[1] खेत । भये नम्र फलभारसमेत ॥
सज्जनजन ज्यों सपति पाय । छोड़ गुमान चलै सिर नाय ।४६।
केवलग्यानी करत विहार । जहां सदा सबसुखदातार ॥
आचारज चहुसंघसमेत । विहरमान भविजन हितहेत ॥४७॥
केई जहां महाव्रत लेहिं । भवदुखवास जलांजलि देहिं ॥
केई धीर उग्र तप करैं । ते अहिमिंद्र जाय अवतरैं ॥४८॥
केई श्रावकके व्रत पाल । अच्युत स्वर्ग बसैं चिरकाल ॥
केई कर जिनजग्य[2] विधान । पावैं पुन्नी[3] अमरविमान ।४९।
केई मुनिवरदानप्रभाव । भोगैं भोगभूमिकी आव ॥
अतिपुनीत सब ही बिध देस । जहां जनम चाहैं अमरेस ॥५०
तहां बनारस नगरी बसै । देखत सुरनरमन उलहसै ॥
है प्रसिद्ध धरनीपर सोय । तीरथराज कहैं सब कोय ॥५१॥
सोभा जाकी कही न जाय । नाम लेत रसना[4] सुचि थाय ।
जहां सरोवर नाना भांति । जिनके तीर तरोवर पांति ।५२।
निजजीवन[5] जीवन सुख देहिं । कमलसुवास सिलीमुख[6] लेहिं
सोहैं सघन रवाने बाग । फले फूल फल बढ़्यौ सुहाग ।५३।
सजल खातिका[7] राजै खरी । उठै लहरि लोयन[8]-गति-हरी
कोट उतंग कांगुरे लसैं । मानौं सुरगलोक दिस हंसै ॥५४॥

---

१ चावल २ जिनेन्द्र पूजन ३ पुण्यवान ४ जीभ ५ पानी ६ भौंरा ७ खाई ८ नेत्र ।

ऊचे महल मनोहर लगे । सुवरन कलस सिखर जगमगे ॥
अति उन्नत जिनमदिर जहा । तिन महिमा वरनन बुध कहा ॥
रतनबिंब राजे जिहि माहि । सिखर सुरग धुजा फहराहि ।
कचनके उपकरन समाज । आवे भविजन पूजाकाज ॥५६॥
जय जय सव्दसहित छवि छजे । किधो धर्म-रतनायर[1] गजे ।
नगरनारि नित बदन जाहि । जिनदरसनउच्छव उरमाहि ।५७।
भूषनभूषित सुन्दर देह । मानो सुभग अपछरा येह ॥
सब गृहस्थ साधे षट कर्म । पाले प्रजा अहिंसा धर्म ॥५८॥
दोष अठारहवर्जित देव । तिस प्रभुको पूजे बहु भेव ॥
चाह-चिहन[2]-वरजित जो धीर । सोई गुरु सेवे वरवीर ।५९॥
आदि अत जे विगत विरोध । तेई ग्रथ सुने मन सोध ॥
सत्य सील गुन पाले सदा । ताते लोग सुखी सर्वदा ॥६०॥

दोहा ।

प्रजा बनारस नगरकी, नागर नीत सुजान ॥
चार रतनके पारखी, लहिये घर घर थान ॥६१॥
देव धर्म गुरु ग्रथ ये, बडे रतन ससार ।
इनको परखि प्रमानिये, यह नर-भव-फल सार ॥६२॥
जे इनकी जाने परख, ते जग लोचनवान ।
जिनको यह सुधि ना परी, ते नर अध अजान ॥६३॥
लोचनहीने पुरुषकों, अध न कहिये भूल ॥
उर लोचन जिनके मुँदे, ते आधे निर्मूल ॥६४॥

रत्नाकर-समुद्र २ इच्छा रहित ३ श्रेष्ठ ।

चौपई ।

इहि विध नगर बसै बहु भाय । सब सोभा बरनी नहिं जाय ।
अस्वसेन भूपति बडभाग । राज करै तहा अतुल सुहाग ।६५।
कासिपगोत्र जगतपरसंस । बंस-इख्वाक-विमल-सर-हंस ।।
तेजवंत दिनपति[1] ज्यौं दिपै । प्रभुता देखि सचीपति[2] छिपै।६६।
कलपतरोवर सम दातार । रतिपति[3] लाजे रूप निहार ।।
रयनायर[4] सम अति गभीर । पर्वतराज बराबर धीर ।।६७।।
सोम समान सबनि सुखदाय । कीरति-किरन रही जग छाय ।
तीन ग्यानसंजुगत सुजान । परम विवेकी दयानिधान ।।६७।।
जिनपदभक्ति धर्म-धन-वास । गुरुसेवारति नीतिनिवास ।।
कला-चातुरी-बुधि-विज्ञान । विद्या-विनय-सपदा-थान ।।६९।
सकलसारगुणमानिककोष । उभयपच्छ निर्मल निर्दोष ।।
जिनसूरजउदयाचल राय । तिस महिमा बरनी किमि जाय।७०।
वामादेवी नाम पवित्त । तिनके घर रानी सुभ चित्त ।।
निरुपम लावन सबगुनभरी । रूपजलधिबेला[5] अवतरी।।७१।।
नखसिख सहज सुहागिनि नार । तीनलोकतियतिलक सिंगार
सकल सुलच्छनमडित देह । भाषा मधुर भारती[6] येह ।७२।
रंभा रति जिस आगे दीन । रोहिनिरूप लगै छबि छीन ।
इन्द्रबधू[7] इमि दीसै सोय । रविदुति[8] आगे दीपकलोय ।७३।
जनमनहरषबढावन एम । कातिक-चद्र-चद्रिका[9] जेम ।।

१ सूर्य २ इन्द्र ३ कामदेव ४ रत्नाकर ५ सीमा ६ भारत की ७ इन्द्राणी ८ सूर्य का प्रकाश ९ चांदनी ।

सकल सार गुनमनिकी खानि । सीलसंपदाकी निधि जानि ।७४।
सज्जनताकी अवधि अनूप । कला सुबुधिकी सीमारूप ॥
नाम लेत अघ तजै समीप । महापुरुष-मुक्ताफल-सीप ॥७५॥
त्रिभुवननाथ रत्नकी मही । बुधिबल महिमा जाय न कही ।
बहुबिध दंपति सपतिजोग । करै पुनीत पुन्यफलभोग ॥७६॥

उक्तं च षट्पाहुडग्रन्थे—आर्या

तित्थयरा[1] तप्पियरा[2] हलहर[3] चक्काइ[4] वासदेवाइ[5] ।
पडिवास[6] भोयभूमिय[7] आहारो[8] णत्थि[9] णीहारो[10] ।७७।

चौपई ।

जिनवर जिनमाता जिनतात । वासदेव बलदेव विख्यात ॥
चक्रीराय जुगलिया जोय । इन सबके मल मूत्र न होय ।७८।

दोहा ।

पूरब गाथाकौ अरथ, लिख्यौ चौपई लाय ॥
षट् पाहुडटीकाविषै, देख लेहु इहि भाय ॥७९॥

चौपई ।

अब आगे भविजन मन थंभ । सुनो गर्भमंगलआनन्द ॥
एक दिना सौधर्म सुरेस । धनपति[11] प्रति दीनौं उपदेस ।८०।

---

१ तीर्थङ्कर २ माता पिता ३ बलदेव ४ चक्रवर्ती ५ नारायण ६ प्रतिनारायण ७ भोगभूमियां ८ भोजन ९ नहीं होते १० मल मूत्र त्याग ११ कुबेर ।

आनतेंद्रको थितिमै सही । आयु छ मास शेष सब रही ।।
तेवीसम अवतार महान । होसी नगर बनारस-थान ।।८१।।
अस्वसेन भूपतिके धाम । पचाचरज[1] करौ अभिराम ।।
यह सुरेन्द्रने आज्ञा करी । सो कुवेर निज माथे धरी ।।८२।।
चल्यो तुरत लाई नहिं बार । सोहै संग अमर-परिवार ।।
हरषित अग पिता घर आय । करी रतन-वर्षा बहुभाय ।८३।
जिनके तेज तिमिर नहिं रहै । नाना वरन प्रभा लहलहै ।
ऐसे निर्मोलक[2] नग[3] भूर[4] । बरसे नृपके आगन पूर ।।८४।।

दोहा ।

नभसौं आवै झलकती, मनिधारा इहि माय ।।
सुरगलोक-लछमी किधौं, सेवन उतरी माय ।।८५।।

चौपई ।

साढ़े तीन कोड़ परवान । यौं नित बरसे रतन महान ।।
सुरभि सुगंध कलपतरुफूल । बरसावै सुर आनन्दमूल ।।८६।।
गंधोदककी बरसा करै । मानौं मुकताफल अवतरैं ।।
प्रतिदिन देव-दुन्दुभी बजै । किधौं महासागर यह गजै ।।८७।।
नंद वरद जय जय उच्चरैं । मात पिता प्रति सुर यौं करैं ।।
इहि विध पचाचरज विलोक । जैनी भये मिथ्याती लोक ।८८।

दोहा ।

देवन किये छ मास लौं, पचाचरज अनूप ।।
देखि देखि परजा-भई, आनन्द अचरजरूप ।।८९।।

---

१ पांच आश्चर्य (मद सुगन्ध हवा, गंधोदक वृष्टि, पुष्पवृष्टि, दुन्दुभि बाजा जयघोष) २ अमूल्य ३ रतन ४, वहुत ।

चौपई ।

यो अतिआनदसौं दिन जाहिं । माता मगन सुखोदधि[1]माहिं ।
मानिकजटित मनोहर धाम । रत्नपलक सेज अभिराम ।९०।
मनिमय दीप जहा जगमगें । अति सुगन्ध आवत अलि पगें ।
करि चतुर्थ आनन्द[2]-सनानि । करै सयन जननी सुख मानि।९१
पच्छिम[3] रैन रही जब आय । सोलह सुपनै देखे माय ॥
तिनके नाम लिखौं अवलोय । पढत सुनत पातक छय होय।९२

पद्धडी

सुपनाबलि सोलह सुनहु मीत । जिनराजजनमसूचक पुनीत ।
ऐरावत हाथी प्रथम दीस । मदगोलो गड[4] विसाल सीस।९३।
देख्यौ डक्कारत[5] वृषभराज[6] । अतिउज्जल मोतीबरन[7] भ्राज[8]।
देख्यौ पचानन[9]धवलदेह[10] । निज नाद करै ज्यौं सरद-मेह।९४
देख्यौ मनिआसनसोभमान । तहं हेमकलस कमला[11]–सनान ॥
देखी दो पावन पहुपमाल[12] । भ्रमरावलि-बेढो अतिविसाल९५
रविमडल देख्यौ तम दलत । उदयाचल ऊपर उदयवंत ॥
सपूरन तारापति[13]-विमान । तारावलि-मध्य विराजमान ।९६
जलतिरत मनोहर मीन[14]-जोट । देखे जिन-जननी पलकओट ।
देखे चामीकरकलस[15] दोय । अति झलकें वारिजढँके सोय९७

---

१ सुख–समुद्र २ रजो दर्शन के चतुर्थ दिन का स्नान ३ रात्रि की अन्तिम प्रहर ४ गाल ५ उच्च स्वर से बोलता हुआ ६ बैल ७ सफेद ८ शोभा दे ९ सिंह १० सफेद शरीर वाला ११ लक्ष्मी १२ पुष्पमाला १३ चन्द्रमा १४ मछली का जोडा १५ स्वर्णकलश ।

देख्यौ कमलाकर कमलछन्न । बहु हंसी हंसनसौं रवन्न ।।
देख्यौ रयनायर[1] गर्जमान । पुनि सिंहपीठ[2] मानिकनिधान।६८।
फिर देख्यौ देव-विमान जोग । धुज घंटा झालरसौं मनोग ।
प्रगट्यौ महि फोरि फनींद्रधाम[3]। मनि कचनमय नयनाभिराम[4]
पुनि रतनरासि देखी अनूप । इन्द्रायुधवरन[5] विचित्ररूप ।।
निर्धूम[6] धनजय[7] दीपमान । ये देखे सोलह सुपन जान ।१००।

दोहा ।

गजप्रवेश मुखकमलमै, सुपनअत अविलोय ।।
सुखनिद्रा पूरी भई, भयौ प्रात तम खोय ।।१०१।।
पूर्व दिवाकर[8] ऊगयौ, गयौ तिमिर सुखदाय ।।
जैसे जैनसिधांत सुनि, भरमभाव मिट जाय ।।१०२।।
मद तेज तारे भये, कछु दीखं कछु नाहि ।
ज्यो तीर्थंकरके उदय, पाखंडी छिप जांहि ।।१०३।।
सूरजवसी जे कमल, खिले सरोवरमांहि ।
ज्यो जिनबिंब विलोकिकै, भविलोचन विकसांहि ।१०४।
चदविकासी कमल जे, विकसत भये न सोय ।
ज्यों अजान जिनवचन सुनि, मुदित मूल नहिं होय।१०५।
चक्रवाक[9] हरखित भये, ज्यो जिनमत-सजोग ।
जीव सुमति पिय-नारिकौ, मिट्यौ अनादिवियोग ।१०६।
घूघूगरण[10] भूतलविषै, आधे भये असूझ ।

---

१ समुद्र २ सिंहासन ३ धरणेन्द्र विमान ४ सुन्दर ५ इन्द्र धनुष के रग का ६ धूम रहित ७ अग्नि ८ सूर्य ९ चकवा १० उल्लू ।

जैनग्रन्थके रहसमै, ज्यों परमती अबूझ ।।१०७।।
कमलकोष मधुकर बधे, छुटे जग्यौ सिर-भाग ।
जथा जीव जिनधर्मसौं, मुक्त होय भवत्याग ।।१०८।।
पथिक लोग मारग चले, सूझे घाट कुघाट ।
जिनधुनि सुनि सूझै जथा, सुरग मुकतिकी बाट[1] ।।१०९।
इहि बिध भयौ प्रभात सुभ, आनन्द भयौ अतीव ।।
धर्मध्यान आराधना, करन लगे भवि जीव ।।११०।।
जिनजननी रोमांच तन, जगी मुदित मुख जान ।
किधौं[2] सकटक कमलिनी, विकसी निसि अवसान।।१११।
मगलीक वाजित्र[3] धुनि, सुनि बंदीजन-गान ।
उठी सेज तजि सुखभरी, धरचौ हियै सुभ ध्यान ।।११२।
सामायिकबिध आदरी, पच परमपदलीन ।
और उचित आचार सब, स्नान-विलेपन कीन ।।११३।।
पहरे सुभ आभरन तन, सुन्दर वसन[4] सुरग ।
कलपबेल जगम[5] किधौ, चली सखीजन सग ।।११४।।
राजसिंहासन भूप तब, बैठे सभा-सुथान ।
देवी आवत देखकैं, कियौ उचित सनमान ।।११५।।
अर्धासन बैठनि दियौ, जोग वचन मुख भास ।
यौं रानी विकसत वदन, बैठी भूपति पास ।।११६।।
सभालोग तारे विबिध, भूपति चांद सरूप ।

---

१ रास्ता २ मानो ३ बाजा ४ कपडे ५ चलती फिरती ।

श्रीवामादेवी तहां, दिपै चन्द्रिकारूप ॥११७॥
स्वामी सोलह सुपन हम, देखे पच्छिम रैन ।
श्रीमुखतैं इनको सुफल, कहो श्रवनसुखदैन ॥११८॥
अस्वसेन भूपाल तब, बोले अवधि विचार ।
एकचित्त करि देवि तुम, सुनो सुपनफल सार ॥११९॥

चौपई ।

धुरि[1] गजेंद्रदरसनतैं जान । होसी जगपति पुत्र प्रधान ॥
महावृषभ पुनि देख्यौ सोय । जगजेठो[2] नंदन तुम होय ।१२०
सेत सिंह-दरसनफल भास । अतुल अनंती सकति-विवास ॥
कमलामज्जनतैं[3] सुरईस । करैं न्हौन कनकाचलसीस ॥१२१।
पहुपदाम[4] दो देखी सार । तिसफल दुबिध धर्मदातार ।
ससितैं सकल लोकसुखदाय । तेजपुंज सूरजतैं थाय ।१२२।
मीन जुगलतैं सब सुखभाज । कुंभविलोकनतैं निधिराज ॥
सरवरतैं सब लच्छनवान । सागरतैं गंभीर महान ॥१२३॥
सिंहपीठतैं मृगलोचनी[5] । होय बाल तुम त्रिभुवनधनी ॥
सुरविमान देख्यौ सुख पाय । सुरगलोकतैं उपजै आय ।१२४।
नागराज[6]-गृहको सुन हेत । जनमैं मतिश्रुतिअवधिसमेत ।
रतनरासिसैं गुन-मनि-खान । कर्मदहन पावकतैं जान ।१२५॥
गजप्रवेश जो वदनमझार[7] । सुपन-अंत देख्यौ वरनार[8] ॥
श्रीपारसजिन जगतप्रधान । गर्भ तुम्हारे उतरे आन ।१२६।

१. ध्रुव रूप से २ जगज्ज्येष्ठ ३. स्नान ४. माला ५. हरिणी से नेत्र वाली ६ धरणेन्द्र ७ मुख में ८. हे उत्तम स्त्री ।

दोहा।

सुनि गाथाइ सुपनफल, रोमांचित तन सूर।
सुवचन-जल सींचित कियौ, उगो हृदय अंकूर ॥१२७॥

चौपाई

अब सौधर्म सुरेस विचार। स्वामिगर्भअवसर निरधार ॥
कुलगिरि[1]-कमलवासिनी जेह। श्रीआदिक देवी गुनगेह ॥१२८॥
तिन्हैं बुलाय कह्यौ सुभ भाव। अस्वसेन नृपति घर जाव ॥
वामादेवीके उरथान। तेवीसम जिन उतरे आन ॥१२९॥
तिनकी गर्भसोधना करो। निज नियोगसेवा मन धरो ॥
यह सुनि सब आनन्दित भई। इन्द्रआन माथे धर लई ॥१३०॥
सुरगलोक तजि आई तहां। बसै बनारसि नगरी जहां ॥
महाकांत तन लावनभरीं। मानौं नभदामिनी[2] अवतरीं ॥१३१॥
अंग अंग सब सजे सिंगार। रूपसंपदा अचरजकार ॥
चूडामनि माथे जगमगै। देखत चकाचौंध सी लगै ॥१३२॥
सुरतरसुमनदाम[3] उर धरी। अति सुवास दसदिसि विस्तरी ॥
श्रवनसुखद नेवर-झंकार। सोभा कहत न आवै पार ॥१३३॥
आय नृपतिके पायन नईं। आयस[4] मागि महलमैं गईं ॥
सिंहासनथित माय निहार। करि प्रनाम कीनो जैकार ॥१३४॥
दोहा—जननीदेह सुभावसौं, अतिनिर्मल अविकार ॥
ताहि कुलाचलवासिनी, और करैं सुचि सार ॥१३५॥

---

१ कुलाचलों पर स्थित सरोवरों के कमलों में रहने वाली देवियां
२ आकाशकी बिजली ३ कल्पवृक्ष के फूलों की माला ४ आज्ञा।

कृष्णपाख वैशाख दिन, दुतिया निसि-अवसान ।
विमल विशाखा नखतमै, बसे गर्भ जिन आन ।।१३३।।
जथा सीप[1]सपुटविषै, मोती उपजै आन ।
त्योही निर्मल गर्भमै, निराबाध भगवान ।।१३७।।
गर्भ बसै पर गर्भतै, बरतै भिन्न सदीव ।
घटतै घटवरती[2] गगन[3], क्यो नहि भिन्न अतीव ।१३८।

चौपई ।

तव जिन पुन्यपवनसे हले । चउविध सुरके आसन चले ।।
चिह्न[4]देख इन्द्रादिकदेव । जानो अवधिज्ञानवल भेव ।१३९।
जिनवर आज गर्भ अवतरे । यह विचार उर आनन्द भरे ।।
चढि विमान परिवारसमेत । चले गर्भकल्यानक हेत ।१४०।
जयजयकार करत बहुभाय । उच्छवसहित पिताघर आय ।।
मातपिता आसन पर ठये । कंचनकलस नहावत भये ।।१४१।
गर्भमध्यवरती भगवान । प्रनमै देव धरो मन ध्यान ।।
गीत निरत बाजित्र बजाय । पूजा भेंट करी सिर नाय।१४२।
यो सुरगन सब साधि नियोग । गये गेह करि कारज जोग ।
इन्द्रराजको आयस पाय । रुचकवासिनी देवी आय ।।१४३।।
जथाजोग सब सेवा करैं । छिन छिन जिनजननीमन हरैं ।।
रुचक दीप तेरहमो जहाँ । रुचकनाम पर्वत है तहां ।।१४४।।
सो चौरासी सहस प्रमान । इतने जोजन उन्नत जान ।।

---

१ सींप के भीतर २ घडे का ३. आकाश ४. चिह्न ।

इतनी ही विस्तीरन धार । दीप मध्यसौं वलयाकार ॥१४५॥
ताके सिखर कूट बहु लसें । दिसाकुमारी तिनमें बसें ॥
ते सब सेवन आवें माय । यह नियोग इनको सुखदाय ॥१४६॥

कुसुमलता

आई भक्ति नियोगिनि देवी, जिन जननीकी सेव सजे ।
कोई स्नान-विलेपन ठानें । कोई सार सिंगार सजे ॥१४७॥
कोई भूषण वसन समप्पें, कोई भोजन मिष्ट करें ।
कोई देय तबोल[2] रवानें, कोई सुन्दर गान करें ॥१४८॥
कोई रतन सिंहासन थापें, कोई ढालें चमर वरी[3] ।
कोई सुन्दर सेज बिछावें, कोई चापें चरन करी[4] ॥१४९॥
कोई चन्दनसौं घर सींचें, सारे महल सुवास करी ।
कोई आंगन देय बुहारी, झारें फूल-पराग परी ॥१५०॥
कोई जलक्रीडा कर रंजे, कोई बहुविध भेष किये ।
कोई मनिदर्पन[5] कर धारें, कोई ठाडी खडग[6] लिये ॥१५१॥
कोई गूंथि मनोहर माला, आवें आन सुगंध खरी ।
कोई कलपतरोवरसौं ले, फल फूलनकी भेट धरी ॥१५२॥
कोई काव्य कथारसपोखें, कोई हास्य विलास ठवें ।
कोई गावें बीन बजावे, कोई नाचत सीस नवें ॥१५३॥

दोहा ।

इह विध सेवा करत नित, नवं मास शुभ श्रेय ।
प्रश्न करें सुरकामिनी, माता उत्तर देय ॥१५४॥

---

१ गोल २ पान ३ श्रेष्ठ ४ हाथ से ५ मणिमय कांच ६ तलवार ।

अंतरलापि[1] पहेलिका, बहिरलापिका[2] एव ।
बिंदुहीन[3] निरहोठपद[4], क्रियागुप्त बहुभेव ॥१५५॥
इत्यादिक आगमउकत, अलंकारकी जात ।
अर्थगूढ़ गभीर सब, समझावें जिन-मात ॥१५६॥

चौपई ।

तुमसो त्रिया कौन जग आन । तीर्थंकर सुत जनै महान ॥
जगमै सुभट कौनसे माय । जे नर जीतें विषय कषाय ।१५७
कौन कहावै कायर दीन । इन्द्रीमदमेटन बलहीन ॥
पंडित कौन सुमारग चलै । दुराचार दुर्मारग दलै ॥१५८॥
माता मूरख कौन महत । विषयी जीव जगत जावंत ।
कौन सत्पुरुष नरभव धार । जो साधैं पुरुषारथ चार ॥१५९॥
कौन कापुरुष[5] कहिये मर्म । जो सठ साध न जानैं धर्म ॥
धन्य कौन नर इस संसार । जोवन समै धरैं व्रतभार॥१६०॥
धिक किनकों कहिये सर्वंग । जे धरि करैं प्रतिग्या भंग ॥
कौन जीवके बैरी लोय । काम क्रोध हैं और न कोय॥१६१॥
जननी जगमैं कौन मलीन । पातकपंकमलिन मतिहीन ॥
कहो कौन नर नित्त पवित्त । ब्रह्मचर्यधारी दिढ़ चित्त ।१६२
कौन पसू मानुष आकार । जिनके हिरदै नांहि विचार ॥
अंध कौन जो देव अदेव । कुगुरुसुगुरुको भेद न भेव ॥१६३॥
बधिर[6] कौनसे उत्तर देह । जैनसिधांत सुनैं नहिं जेह ॥

१ वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो । २ जिसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दो से बाहर हो । ३ बिन्दुरहितपद ४ ऐसा पद जिसके उच्चारण में होठो से ध्वनि न निकलती हो । ५. कायर । ६ बहरा ।

मूकनाम नर कर्म लहै । जो हित मान वचन नहि कहै ।१६४
लावी भुजा कौन करहीन । जिनपूजा मुनिदान न दीन ।।
कौन पागले पावकमेन । जे तीर्थ परम न अचेत ।।१६५।।
कौन कुरूप जननि कहु एह । सीलसिंगार बिना नरजेह ।।
वेग कहा करिये बडभाग । दिच्छागहन जगतको त्याग ।।
मित्र कौन हितवचक होय । धर्म दिढावे आलस खोय ।।
सत्रु कौन जो दिच्छालेत । विघन करै परभवदुखहेत ।१६७।
जियको कौन सरन है माय । पचपरमगुरु सदा सहाय ।।
इहिविध प्रस्न करै सुरनारि । माता उत्तर देहि विचारि ।१६८
वामादेवी सहज प्रवीन । सकल मरम[1] जानै गुनलीन ।।
पुरुषरतन उरअन्तर वहे । क्यो नहि ग्यान अधिकता लहै ।१६६

दोहा ।

निवसै[2] निर्मल गर्भमें, तीन ग्यान-गुनवान ।
फटिकमहलमें जगमगे, ज्यो मनि दीप महान ।।१७०।।
उदयवान दिनकरसमय, पूर्व दिसा छवि जेम ।
त्रिभुवनपति-सुत उर धरै, सोहत जननी एम ।।१७१।।
गर्भभार व्यापै नही, त्रिवली[3] भग न होय ।
देह न दीखै पीतछवि, और विकार न कोय ।।१७२।।
ज्यो दर्पन प्रतिबिंबसौं, भारी कह्यौ न जाय ।
त्यौं जिनपतिके गर्भसौं, खेद न पावै माय ।।१७३।।
कलपलतासी लसत अति, जननी छबिसयुक्त ।

---

१ रहस्य २ बसै ३ पेट के तीन सलवट भगवान के गर्भ में आने पर भी नष्ट नही हुए ।

मदहास कुसुमित भई, अब फलि है फल पुत्त[1] ।।१७४।।
देवराजके वचनसौं, अहनिस[2] हरखत अंग ।
अलखरूप सेवै सची[3], लिये अपछरा संग ।।१७५।।
पूरबवत नवमास लो, पंचाचरज अनूप ।।
अस्वसेन भूपालघर, किये धनद[4] सुखरूप ।।१७६।।
यो सुखसौं निसदिन गये, खेद नामकहिं नाहिं ।।
यह सब पुन्य-प्रभाव है यही रहस इसमाहिं ।।१६७।।

इति श्रीपार्श्वपुराणभाषाया गर्भावतारवर्णन नाम पञ्चमोऽधिकार. ।

छठा अधिकार ।



दोहा ।

रागादिक जलसौं भरयो, तन तलाब बहु भाय ।
पारस-रवि दरसत सुखै, अघ सारस उड़ि जाय ।।१।।
गर्भ मास पूरन भये, नभ निर्मल आकार ।
पौष मास एकादसी, स्याम पच्छ सुभ बार ।।२।।
वामादेवी-पूर्व-दिसि, जनम्यो जिनवर भान ।
मुदित भयो त्रिभुवनकमल, असुभतिमिर अवसान[5] ।।३।।
अस्वसेन नृप उदयगिरि, उगयो बाल दिनेस ।
तीन[6] ग्यान-किरनावली, लिये जगत परमेस ।।४।।

१. पुत्र २. रातदिन ३. इन्द्राणी ४. कुबेर ५. अन्त ६ मति,श्रुत,अवधि

पद्धडि।

जनम्यौ जब तीर्थंकर कुमार। तिहुलोक बढ्यौ आनंदअपार
दीखै नभनिर्मल दिसि असेस। कहि आधो मेह न धूलि लेस।
अति सीतल मद सुगधि वाय। सो बहन लगी सुखसातिदाय
सब सुजनलोक हरषे विसेस। ज्यो कमल-खड प्रगटत दिनेस[१]
घटा घन गरजे देवलोक। ज्योतिषिघर केहरिनाद[२] थोक॥
भवनालय बाजे सहज संख। बिंतर-निवास भेरी असंख।७
ये अनहद बाजे बजे जान। जिनराज-जनमअतिसय महान।
बहु कलपतरोवर पहुपवृष्टि। स्वयमेव करन लागे विसिष्ट।८
इंद्रासन कांपे अकसमात। ये करन किधौ सारथ (?) सुजात
जिनजनम भयौ भूलोकमांहि। उच्चासन अब तुम जोग नांहि।
आनम्र[३] भये मणिमुकुट एम। श्रीजिनप्रति करत प्रनाम जेम।
ये चिहन देखि इंद्रादिदेव। तब अवधिग्यानबल जान भेव[४]॥
निरधार बनारसि-नगर-थान। तीरथपति जनम्यौ आज आन।
प्रभुजन्मकल्यानककरनकाज। उद्यम आरंभ्यौ देवराज।११।
परिवारसहित सब इन्द्रनाम। आये मिलि प्रथमसुरेद्रधाम॥
नानाबिध बाहन चढे जेह। जिनभगतिसलिलसिंचतसुदेह
सप्ताग सैन तब चली एम। यह महाजलधिकी लहर जेम॥
हाथी रथ पायक[५] वृषभ[६] बाज[७]। गायनि नर्तकि सेनासमाज
एकेक सैनमैं सात कच्छ। तिहिमांहि प्रथम चउ असी लच्छ।
फिर दुगुन दुगुन सातम लो जान, इस भाति सात सेना महान
सौ कोर और छैकोर जोरि। अठसट्ठ लाख ऊपर बहोरि॥

१ सूय २ सिंहध्वनि ३ झुके ४ भेद ५ पैंदल ६ वैल ७ घोडा।

यह एकहस्ति सेनाप्रमान । ऐसी ही सब सातौं समान ।।१५।।
तहँ नागदंत[1] सुर आभियोग । सो करइ विक्रिया निजनियोग।।
ताप्रति आग्या दीनी सुरिंद । तिन कीनौं ऐरावत गइन्द ।१६।
लख जोजन मान मतंगईस । अतिउन्नत देह उतंग सीस ।।
सुभसेतवरन[2]मनहरन काय । लीलागति धारैं ललित पाय ।१७
मदजीवनकलित[3]कपोल स्याम । नख विद्रुमवरण[4]मनोभिराम
सब लसत सुलच्छन अंगअंग । नहिं गिनीजाहिंजिसछबितरंग
गंभीर घनाघनघोष जास । बहु सुन्दर सुंड सुगंध सास ।।
हो कामसरूपी कामगौन । जादेखें मोहत तीन भौन ।।१९।।
घनघोरत घंटा लवमान । मनि घूंघुरमाला कंठथान ।।
सोवनपाखर[5]सो दिपै देह । संपाजुत[6] मानौं सरद मेह ।।२०
सौ वदन विराजत सोभवंत । एकेकवदनमें[7] आठ दंत ।।
प्रतिदंत सरोवर एक दीस । सरसरहँ कमलिनी सौपचीस[8]।२१
एकेक कमलिनी प्रति महान । पच्चीस मनोहर कमल ठान ।।
प्रतिकमल एकसौ आठपत्र । सोभावरनी नहिं जाय तत्र ।२२।
पत्रनपर नाचैं देवनारि । जगमोहत जिनकी छबि निहारि ।
नव नवरस पोखैं करत गान । लावन्यजलधि-बेलासमान ।२३
तिस हाथी ऊपर सचीसंग । सौधर्मसुरगपति मुदित अंग ।।
आरूढ[9]भयौ अति दिपत एम । उदयाचलमस्तक भानु जेम ।
चंद्रोपम चामर छत्रसीस । दसजाति कलपसुरसहित ईस ।।

---

१ आभियोग्य जाति के देव २ सफेद रंग ३ मदजल ४ मूंगा का रंग
५ स्वर्ण की झूल ६ बिजली ७ मुख ८. एक सौ पच्चीस ९ चढा ।

ईसानप्रमुख इमि देवराज । निज निज वाहनकों चले साज ॥
परिजनसमेत उर हरषभाव । जिन जनमकल्यानक करन चाव
वाजे सुरदुंदुभि विविध भेव । जयकार करें मिलि सकलदेव२६
उपज्यौ कोलाहल गगन थान । मत्र दिसि दीखें वाहन विमान।
आकाससरोवर अतिगँभीर । इन्द्रादि अमर तन तेज नीर ।२७
तहा विकसत मुख अपछरा एम । यह खिल्यौकमलिनीबागजेम।
इहि विध देवागम भयौ जान । अवतरे बनारस नगर थान ।२८
चन्द्रादि जोतिषी पंच जात । दस भेद भवनवासी विख्यात ॥
पुनि आठ जातके वान देव । सब आये इन्द्र समेत एव ।२६॥
निज निज वाहन चढि सपरिवार । जिनजन्म-महोच्छवहियँधार
तब पुरप्रदच्छिना सुरन दीन । अतिहरखत उर जयकार कीन।
बन बीथी[1]मारग गगन रोक । सब ठाडे देवी देव थोक ॥
सब सक्र सची मिलि भूप गेह । आये घर आगन भरो तेह ।३१
तब इंद्रबधू अति रजमान[2] । सो गई गुपत जिनजनमथान ॥
देखी जिनमात सपुत्त[3]ताम । परदच्छिन दे कीनों प्रनाम ।३२
सुत-रागरँगी सुखसेजमाझ । ज्यों बालक-भानुसमेत साझ ॥
कर जोरि जुगल सिर नाय नाय । थुति कीनी बहु जानें न माय
सुखनींद रची तब सची तास । मायामय राख्यौ पुत्र पास ॥
करकमलन बालक-रतन लीन । जिन कोटिभानुछबि छीन कीन
सुख उपजें जो प्रभु परस देह । कवि-बानीगोचर नाहिं तेह।
प्रभुकौ मुखवारिज[4]देख देख। हरखें सुररानी उर विसेख ३५

१ गली २ आनन्दित होकर ३ पुत्रसहित ४ कमल ।

वसु मंगलदरव विभूति सार। दिसदिव्यकुमारी अग्रचार ।।
इहिविध सौधर्मसुरेसनार। आन्यो सिवकन्या[1]वर कुमार ।३६
देख्यौ हरि बालकचंद जाम। आनंदजलधि उर बढ्यौ ताम ।।
सिर नाय इंद्र निज वार बार। थुति कीनो कर जुग सीस धार ।।
छवि देखि तृपति नहिं होय लेस। तब सहस आंख कीनो सुरेस
करि नमस्कार निजगोद लीन्ह। ईसान इंद्र सिर छत्र दीन्ह ।।
तहां सनतकुमार महेंद्र सोय। ए चामर ढालें इन्द्र दोय ।।
ब्रह्मादि सुरगवासी सुरेस। जय नंद वर्ध बोलें विसेस ।।३९।।
नाचें सुर-रमनी रूपखान। गंधर्व करें जिनसुजसगान ।।
सुरवाजे बाजें बहुप्रकार। कर धरहिं किन्नरी बीन सार ।।४०
केई सुर श्रीजिनसुभगभेष। देखें भरि लोचन निर्निमेष[2] ।।
केई यों भाषें सुरसमाज। हम देवजन्मफल लह्यौ आज ४१
केई सरधायुत भये देव। मिथ्यात महाविष वम्यौ एव ।।
इस भांति चतुरविध देवसंघ। सब चले जोतिषीपटल लंघ[3] ।।

दोहा।

जोजन सहस निन्यानवै, सुरगिरि-सिखर उतंग।
गये सकल सुरगन तहां, भूषनभूषित अंग ।।४३।।

चौपई।

महामेरुके मस्तकभाग। पांडुकवन बहु धरै सुहाग[4] ।।
जोजन सहस जासु बिस्तार। सुर चारन खग करें बिहार ।।४४
चहुंदिसि चार जिनालय तहां। सघन सासते तरुवर जहां।

१. मुक्तिरूपी कन्या २ अपलक ३ उल्लंघन करके ४ सौंदर्य।

मध्यचूलिका मुकट सरीस । सो उतग जोजन चालीस ॥४५
वारह जोजन जड़ विस्तार । आठमध्य अर ऊपर चार ॥
जाके ऊपर रजकविमान । रोमातर[1]नरछेत्रप्रमान ॥४६॥
तिस ईसानदिसा सुभ थान । मनिमय सिला सासती जान
पाडुकनाम फटिक उनहार । आकृति अर्ध चंद्रमाकार ॥४७॥
सौ जोजन आयाम[2] अभग । विस्तर[3]आधो आठ उतंग ॥
सुरविद्याधर पूजत नित्त । भरतखंड-जिन-न्हौन-पवित्त ॥
तहा हेम-सिहासन सार । रत्नजडित सो वलयाकार ॥
धनुष पाचसौ उन्नत जोय । भूमिभाग विस्तीरन सोय ॥४८
ऊपर जास अर्ध विस्तार । जाके तेज मिटै अँधियार ॥
तिसहीपर पदमासन साज । पूरवमुख थापे जिनराज ॥५०॥
इस औसर सोहैं इमि ईस । मानौं मेघ रतनगिरि सीस ॥
धुजा कलस दर्पन भृ गार[4]। चमर छत्र सुप्रतिष्ठक[5]तार[6] ॥५१॥
मगल दर्व मनोहर जहा । धरे अनादि-निधन ये तहा ॥
आसन दोय उभय दिस ओर । जुगलइद्र ठाड़े तिहि ठौर ॥५२
चारौं दिस चारौं दिगपाल । जथाजोग जिनमज्जनकाल[7] ॥
सची सुरेंद्र अपछरा-थोक[8] । सव ठाडे पाडुकवन रोक ॥५३
चौबिध[9]देव खड़े चहुंपास । जनम-न्हौन देखन हुल्लास ।
कियौ महामडप हरि तहा । तीनलोक जन निवसै जहा ॥५४
कल्पकुसुममाला मनहार । लटकै मधुप करै झंकार ॥

---

१ एक वाल का अन्तर २ लम्बाई ३ चौडाई ४ कलश ५ साथिया ६ पखा ७ अभिषेक ८ समूह ९ चार प्रकार के देव (भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी, कल्पवासी)

सुर वाजित्र बजे बहुभाय। सुरभि[1] सुगंध रही महकाय।५५।
मंगल मिल गावें सब सची। नाचें सुर-वनिता रस-रची।।
तब मज्जन आरभ विसेस। उद्यम कियो प्रथम अमरेस[2] ५६।

दोहा।

तहा कुबेर रतन खची[3], रचो पंडका पत[4]।
मेरु सिखरसौं सोहिये, छीरोदधिपरजत[5] ।।५७।।
सुर-श्रेणी सोपान-पथ, पचम सागर जाय।
भर लाई कंचन-कलस, चदन-चरचित काय ।।५८।।
जोजन एक प्रमान मुख, वसु[6] जोजन गभीर।
यह मरजादा कलसकी, जिनशासनमे बीर ।।५९।।
मुकतमालमडित लसें, कचन-कलस महंत।
नभवनिताके[7] उरज[8] ये, यों अति सोभावत ।।६०।।

चौपई

सहस[9] भुजा सुरपति तब करी। भूषनभूषित सोभा भरी।
इस औसर हरि सोहै एम। भूषणाक सुरतरुवर जेम ।।६१।।
कलस हाथ हरि लीनें जाम। भाजनाग[10] सम सोभा ताम।
तीन बार कीनौ जयकार। कलसोद्धारन मंत्र उचार ।।५१।
इहिविध श्रीसौधर्माधीस। ढाले कलस स्वामिके सीस ।।
तब सब इंद्र कियौ जिनन्हौन। अतुल उछाव वढ्यो जगभौन।

१. मनोरम २ सौधर्म स्वर्ग का इन्द्र ३ रत्न जटित ४. पंक्ति ५ पचम समुद्र तक ६ आठ ७ आकाश रूपी स्त्री ८ स्तन ९ हजार १०. भाजन देने वाला कल्प वृक्ष।

सहा धार जिनमस्तक ढरी । मानौं नभगंगा अवतरी ।।
मुदित असंख अमरगन तबै । जै जैकार कियौ मिलि सबै ६४।
उपज्यौ अति कोलाहल सार । दसदिस बधिर[1] भई तिहिंबार।
भयौ असम[2] औसर इहि भाय । वचनद्वार बरन्यौ नहिं जाय।

दोहा ।

जा धारासौं गिरिसिखर, खड खड हो जाय ।
सौ धारा जिनदेहपै, फूल-कली सम थाय ।।६६।।
अप्रमान वीरजधनी, तीर्थंकर प्रभु होय ।
तातै तिनकी सकतिकौं, उपमा लगै न कोय ।।६७।।
नीलबरन प्रभु देहपर, कलस-नीरछबि एम ।
नीलाचलसिर हेमके, बादल बरसै जेम ।।६८।।
चली न्हौनके नीरकी, उछल छटा नभमांहि ।
स्वामिसंग अघविन[3] भई, क्यो नहि ऊरध जाहि ।६९।
न्हौनछटा तिरछीभई, तिन यह उपमा धार ।
दिगवनिता[4]-मुख सोहियै, करनफूल उनहार ।।७०।।

सोरठा ।

जिनतनपरस पवित्र, भई सकल जगसुचिकरन ।
सो धारा मम नित्त, पाप हरो पावन[5] करो ।।७१।।

चौपई ।

यो सुरेंद्र मज्जनविधि ठान । फिर कीनौं गधोदकन्हान ।।
सो जल लेय विनय विस्तरी । सांतिपाठ पढि पूजा करी ।७२।

१ बहरी २ जिसकी समानता नहीं की जा सकती ३ निष्पाप ४ दिशा

सक्र सची सुर आनन्द भरे। यथाजोग सब कारज करे।
परदच्छिन[1] दीनी बहु-भाय। बारंबार नये सिरनाय ॥७३॥

हरिगीत।

सौधर्मपति अभिषेक कारक, न्हौनपीठ[2] सुदंसनो[3]।
गधर्व गायक निरतकारक, अपछरा-जन संसनो[4] ॥
पंचम पयोनिध न्हौन-कुंड, असंख सुर सेवक जहां।
तिस जन्ममगलकी बडाई, कहन समरथ बुध कहा ॥७४॥

चौपई।

जन्महौनविधि पूरन भई। सकल सुरासुर देवनि ठई ॥
अब इंद्रानी जिनवर अग। निर्जल[5] कियौ वसन[6]-सुचिसंग।७५।
कुंकुमादि लेपन बहु लिये। प्रभुके देह विलेपन किये ॥
इहि सोभा इह औसरमाझ। किधौं नीलगिरि फूली साझ।७६
और सिंगार सकल सह कियौ। तिलक त्रिलोकनाथके दियौ।
मनिमय मुकुट सची सिर धरयौ। चूडामनि माथे विस्तरयौ७७
लोचन अजन दियौ अनूप। सहज स्वामिदृग अंजितरूप ॥
मनि कुडल कानन विस्तरे। किधौं चन्द्र सूरज अवतरे।७८।
कठ कठिका[7] मोतीहार। मुक्तिरमनि झूला उनहार ॥
भुजभूषनभूषित भुज करी। कटक मुद्रिका सोभित खरी।७९।
कटिभूषन कीनौं कटि-थान। मनिमयक्षुद्रघटिकावान ॥
पग नेवर पहराये सार। जिनमै रतन झलक झकार ॥८०॥

---

१ परिक्रमा २. स्नान का सिंहासन ३ सुदर्शन मेरु ४. प्रशसा ५ शरीर को सुखाया ६ वस्त्र ७ कठी।

दोहा।

अंगअंग आभरनजुत[1], यह उपमा तिहि काल ॥
सुरतरुसम प्रभु सोहिये, भूषनभूषित-डाल[2] ॥८१॥

चौपई।

तब इंद्रादि लगे थुति करन। जय जिनवर भव आरत[3]-हरन
त्रिभुवनभवन दीप उनहार। धन्य देव तेरो अवतार ॥८२॥
जय श्रीअस्वसेनकुलचंद। वामानंदन जोति अमंद[4] ॥
सुखसागरके वधनहार। सब जग श्रेय[5]-सांति दातार ॥८३॥
तुम जग असनामन अवतरे। हममें दाम महासुख भरे ॥
बिन रविउदय तिमिर[6] क्यो जाय। कैसे कमलवाग विकसाय
मिथ्यामत रजनी[7] अतिघोर। मूसें[8] धर्म कुलिंगी[9] चोर ॥
जो प्रभुजन्मप्रभात न थाय। तो किमि प्रजा बसे सुखपाय।८५
ये अनादि संसारी जीव। विलखें भव-गद[10]-ग्रसे अतीव ॥
सो दुखमैंटन दयानिधान। राजवैद जनमें भगवान ॥८६॥
भरमकूपवरती बहु लोय[11]। काढनहार तिन्हें नहिं कोय ॥
श्रीमुखवचननेज[12]-बलधार। अब उद्धार लहैं निरधार।८७।
आप परमपावन परमेस। औरन कौं सुचि करहु विशेष ॥
ज्यो सरि[13] सेत[14] प्रभा तन धरैं। सेत सरूप सबनको करैं।८८
विन सनान तुम निर्मल नित्त। अंतर बाहज सहज पवित्त ॥
हम मज्जनविधि कीनो आज। निजपवित्रकारन जिनराज८९

१ आभूषण २ टहनी ३ दुःख ४ सदा जगने वाली ५ कल्याण ६ अंधकार ७ रात ८ चोर ९ खोटे भेषधारी १० रोग ११ लोग १२ रस्सी १३ सरोवर १४ सफेद।

तुम जगपति देवनके देव । तुम जिन स्वयबुद्ध स्वयमेव ।।
तुम जगरच्छक तुम जगतात । तुम बिनकारन-बन्धु विख्यात।।
तुम गुनसागर अगम अपार । थुतिकर[1] कौन जाय जन पार।।
सूच्छम ग्यानी मुनि नहिं तरें । हमसे मंद कहा बल धरें ।६१।
नमो देव असरन-आधार । नमो सर्वअतिसयभंडार ।।
नमो सकलसिवसपतिकरन । नमो नमो जिनतारनतरन ।६२।

दोहा ।

इहि विध इन्द्रादिक अमर, सुरपदवीफल लेय ।
जन्म-न्हौन-विधि कर चले, मानौं निज शुभ श्रेय ।।६३।।
जन्ममहोच्छव देख कर, सुरपतिकी परतीत[2] ।
बहु सुर सरधानी भये, तजि सरधा विपरीत ।।६४।।

चौपई ।

तब सब देव जनमपुरथान । पूरवली बिधि कियौ पयान[3] ।।
चढ़्यौ इन्द्र ऐरावत शीश । गोद लिये त्रिभुवनपतिईस ।६५।
पूरववत दुंदभि धुनिगाज । वे ही गीत निरत सब साज ।।
आये जय जय करत असेस । पिताभवन कीनौं परवेस ।६६।
मनिमय आंगनमै हरि आप । हेम-सिंहासन पर प्रभु थाप ।।
अस्वसेनभूपति तिहिं बार । देख्यौ नदन[4] नयन पसार ।६७।
तेजपुंज निरुपम छबि देह । रोमांचित तन बढ़्यौ सनेह ।।
माया नींद सची तब हरी । जिनजननी[5] जागी सुखभरी ।६८
भूषनभूषित कांति विसाल । भर लोयन निरख्यौ जिनबाल ।।

१ स्तुति करके, २ विश्वास ३ गमन, ४ पुत्र, ५ जिनमाता ।

अति प्रमोद उर उमग्यौ तबै । पूरन भये मनोरथ सबै ।९९।
तब सुरेस रोमाचितकाय । मात पिता पूजे मन लाय ।।
भूषन वसन भेंट बहु धरी । हाथ जोरि जुग थुति[1] विस्तरी१००
तुम जगमै उदयाचल भूप । पूरबदिसि देवी सुचिरूप ।।
उदय भये त्रिभुवनरवि जहां । तुम महिमा वरनन बुधि कहा
धनि धनि अस्वसेन भूपाल । जिनके जगगुरु[2] जनम्यौ बाल।।
कीरतबेल अधिक तुम बढ़ी । तीनलोकमडप सिर चढी ।१०२
धनि वामादेवी जगमाय । जिन जायौ नदन जगराय ।।
तीनलोकतिय-[3] सृष्टिसिगार । धनि जननी तेरो अवतार ।१०३
तुम सम जगमै और न आन । जिनदेवल[4] सम पूज्य प्रधान ।।
यो थुतिकरि हरि[5] हिये प्रमोद[6] । बाल दिवाकर दोनौं गोद
कहो सकल पूरबली कथा । मेरु महोच्छव कीनौं जथा ।।
तब निज नगरविषै भूपाल । जन्म उछाह कियौ तिहिंकाल ।
हरषत सब पुरजन परिवार । घर घर भये मगलाचार ।।
घर घर कामिनि[7] गावैं गीत । घर घर होय निरत-सगीत१०६
मगलीक बाजे बहु भेव । बाजन लगे सकल सुखदेव ।।
श्रीजिनभवन न्हौन विस्तार । किये सकल मगल आचार ।।
छिरक्यौ चदन नगरमंझार । रतन साथिया धरे सवार ।।
जाचक-दान सुजन-सनमान । जथाजोग सब रीति-विधान ।।
इहि विध अस्वसेन नरनाह । कीनौ पुत्र-जनमउच्छाह ।।
पूरनआस भये सब लोय । दुखी दीन दीखै नहिं कोय ।१०९।

१. स्तुति २ ससार का गुरु ३ स्त्री ४ जिन मदिर ५ इन्द्र, ६ आनद ७. स्त्री

दोहा ।

उदय भयौ जिनचन्द्रमा, कुलनभतिलक[1] महंत ॥
सुखसमुद्रबेला[2] तजी, बढ़चौ लोक-परजंत ॥११०॥

चौपई ।

तब बहु देवनसंग विसेस । आनन्द-नाटक ठयो सुरेस ॥
करें गान गधर्व-समाज[3] । समयजोग सब बाजे साज ।१११।
देखें अस्वसेन नरनाथ । पुत्रसहित सब परिजन साथ ॥
प्रथमरूप नव भव दरसाय । पुहपांजुलि[4] खेपी सुरराय ।११२।
तांडव नाम निरत आरंभ । कियौ जगतजन करन अचंभ ॥
नट सरूप धारचौ अमरेस । रंगभूमि कीनौं परवेस ॥११३॥
मगलोक सिंगार सवार । सब संगीत वेद अनुसार ॥
ताल मान विधिसहित सुभाय । रंग-धरा पर फेरै पाय ।११४।
करें कुसुमवरसा नभ देव । देखि इंद्रकी भक्ति सुभेव ॥
वीना मुरज[5] बांसली[6] ताल । बाजे गेह गीतकी चाल ।११५।
करें किन्नरी मंगलपाठ । बिरियां[7] जोग बन्यौ सब ठाठ ॥
नाचें इन्द्र भमैं बहु भाय । मोरें[8] हाथ कंठ कटि पाय ।११६।
अद्भुत तांडवरस तिहिं बार । दरसावे जन अचरजकार ॥
सहस भुजा हरि कीनो तबैं । भूषनभूषित सोहैं सबैं ।११७।
धारत चरन चपल अति चलें । पहुमी[9] कांपै गिरिवर हलें ।
भमैं मुकुट चकफेरी लेत । ताकी रतनप्रभा छबि-देत ।११८।

१. आकाश कुल का तिलक २. सीमा ३. समूह ४ पुष्पांजलि ५ मृदंग ६ बांसुरी ७. काल ८ मोड़ैं ९ पृथ्वी ।

वलयाकृति[1] ह्वै झलकै सोय। चक्राकार अगनि जिमि होय।
छिनमै एक छिनक वहुरूप। छिन सूच्छम छिन थूलसरूप।११६।
छिनमै निकट दिखाई देय। छिनमै दूर देह धर लेय॥
छिनआकासमाहिं सचरै। छिनमै निरत भूमि पर करै।१२०।
छिन छूवै तारावलि जाय। छिनक चंदसौं परसै काय॥
इद्रजालवत[2] यो अमरेस। दरसाई निज रिद्धिविसेस।१२१।
हाथ अगुलिनपै अपछरा। नाचै रूप रतनकी धरा॥
अग अग भूषन झलकाहिं। विकसत लोचन मुख मुसकाहिं।
निरत-भेदविधि धारै पाव। करै कटाच्छ दिखावै भाव॥
बहुविधकला प्रकासै सार। सुरकामिनि[3] दामिनि[4] उनहार१२३
तिनसजुत[5] हरि सुरतरु एम। कलपलतागनबेढयौ[6] जेम॥
यो नाटकबिधि ठान अनूप। तिहुजग सक्र[7] किये सुखरूप१२४
स्वामिजनम-अतिसयपरताप। जिनवरपिता सभापति आप।
इन्द्र महानट नाचै जहा। तिस अवसर-वरनन बुधि कहा॥
तब तहां मातपिताकी साख। पारस नाम सकल सुर भाख।
राखि सुरासुर सेवा-जोग। चले देव सब साधि नियोग।१२६

दोहा।

इहिविध इन्द्रादिक अमर, जन्मकल्यानक ठान।
बहुविध पुन्य उपायकै, पहुँचे निज निज थान॥१२७॥

---

१ गोल २ जादू ३ देवाङ्गना ४ विजली की तरह ५ उन सहित ६ कल्प वेलि से लिपटा हुआ ७ इन्द्र।

हरिगीति ।

इन्द्रादि जन्मसनान जिनकौ, करन कनकाचल[1] चढे ।
गधर्व देवन सुजस गायौ, अपछरा मगल पढे ।।
इहविध सुरासुर निज नियोगै, सकल सेवाबिधि ठई ।
ते पासप्रभु मुझ आस पुरवो, सरन सेवकने लई ।।१२८।।

इति श्रीमत्पार्श्वपुराणभाषाया जिनेन्द्रजन्मोत्सववर्णन नाम षष्ठमाधिकार. ।

सातवां अधिकार

दोहा ।

पारस प्रभु तजि औरकौं, जे नर पूजन जाहिं ।
कलपबिरछकौ छांड़िकै, बैठे थूहर[2] छांहि ।।१।।

चौपई ।

अब जिन बालचन्द्रमा बढै । कोमल हास-किरन मुख कढ़ै ।।
छिन छिन तात-मात-मन हरै । सुखसमुद्र दिन दिन विस्तरै।२।
अमृत इन्द्र अगूठे देय । वही पोष[3] पयपान[4] न लेय ।।
देवी धाय[5] हरष मन धरै । मज्जनमडन[6] बिधि सब करै ।३।
केई मनिभूषन पहराय । करै अलंकृत प्रभुको काय ।।
केई कामिनि करै सिंगार । श्रीमुखचन्द्र निहार निहार ।४।

१. सुमेरु पर्वत २ थोर=कांटेदार झाड ३ पोषण योग्य ४. दूध पीना
५. बच्चे को पालने वाली माता ६ शृङ्गार ।

निरुपम कांति कला विग्यान । लावन रूप अतुलगुनथान।१४।
मति-श्रुति-अवधि-ग्यानबल देव । जानें सकल चराचर भेव ।
सोमसुभाव[1] सहज उपसंत । निर्मल छायकदरसनवंत ।।१५।।
इहिविध आठवरसके भये । तब प्रभु आप अनुव्रत लये ।।
देवकुमार रहें संग नित्त । ते छिन छिन रंजें जिन-चित्त ।१६।
कबहीं गज तुरंग[2] तन धरें । तिनपै चढि प्रभु जनमन हरें ।।
कबहीं हंस मोर बन जांहि । तिनसौं जगपति केलि कराहिं।१७।
कबहीं जलक्रीड़ाथल गमें । कबहीं वनविहारभू रमें ।।
कबहीं करें किंनरी गान । सो प्रभु सुजस सुनें निज कान ।१८।
कबहीं निरत ठवें[3] सुर-नार । देखें जिन लोचनसुखकार ।।
कबहीं काव्यकथारस ठान । करें गोठ[4] जिन बुधि बलवान।१९।
विना सिखाये विन अभ्यास । सब विद्या सब कलानिवास ।
यो सुखअनुभव करत महान । भये पास जिन जोवनवान।२०।

दोहा ।

संपूरन जोवन समय, प्रभुतन सोहै एम ।।
सहजमनोहर चांदको, सरदसमय छवि जेम ।।२१।।

चौपई ।

प्रभुके अंग पसेव न होय । सहज सदा मलवरजित[5] सोय ।।
उज्जलवरन रुधिर जिमि खीर[6]। सुसमचतुरसठान[7] सरीर।२२।
प्रथम सारसंहननसरूप[8] । इन्द्र-चन्द्र-मनहरन अनूप ।।

---

१. सौम्य स्वभाव २ घोड़ा ३ करें ४. गोष्ठी ५ शरीर मल रहित ६ दूध ७ सर्वांग सुन्दर ८. वज्रवृषभनाराच संहनन ।

पर पासप्रभुकी सुजसमाला, पहिरि दास कहावना ।।२८।।

दोहा ।

सहस अठोतर लच्छन ये, सोभित जिनवरदेह ।
किधौ कलपतरुराजके, कुसुम विराजत येह ।।२९।।

चौपई ।

शुभ परमानूमय जिन अग । नीलबरन नौ हाथ उतंग ।।
छबि बरनत नहिं पावे ओर । त्रिभुवनजनमनमानिकचोर।३०
सतसंवत्सर[1] आव[2] प्रमान । अतुल असाधारन गुनथान ।।
सत्रुमित्रऊपर समभाव । दयासरोवर सोमसुभाव ।।३१।।
सागरसौं प्रभु अति गंभीर । मेरुसिखरसौं अधिक धीर ।।
कांति देखि लाजै मिरगांक[3] । तेज बिलोकि छिपै रवि राक[4]।।
कलपबिरछसौं अधिक उदार । तिहुँजगआसापूरनहार ।।
यौं जिनगुनकौं उपमा कहीं । तीनकाल त्रिभुवनमै नहीं ।३३।

दोहा ।

यो सुख निवसत पास जिन, सेवत कमला पाय ।
सोलह बरस प्रमान प्रभु, भये जगतसुखदाय ।।३४।।
सभासिंहासन एक दिन, बैठे सहज जिनेन्द्र ।
सुरनरमै प्रभु यौं दिपै, ज्यो उडगनमै[5] चन्द्र ।।३५।।
अस्वसेन भूपाल तब, बोले अवसर पाय ।
नेहसलिल[6] भीजे वचन, सुनो कुमर जगराय ।।३६।।
एक राजकन्या बरो, करो उचित व्यवहार ।

१ सो वर्ष २ आयु ३ चन्द्रमा ४ गरीब ५ तारो मे ६ प्रेमजल ।

वंसवेल आगे चलै, सुख पावै परिवार ॥३७॥
नाभिराजकी आस ज्यौं, भरी प्रथम अवतार।
तथा हमारी कामना, पूरन करो कुमार ॥३८॥
पितावचन सुनि प्रभु दियौ, प्रतिउत्तर तिहिं बार।
रिषभदेव सम मैं नहीं, देखो हिये विचार ॥३९॥
मेरी सब सौ वर्ष थिति, सोलह भये वितीत।
तीस वर्ष संजम समय, फिर मत कहो पुनीत ॥४०॥
अल्पकालथिति अल्प सुख, अल्प प्रयोजनकाज।
कौन उपद्रव संग्रहै समुझि देख नरराज ॥४१॥
सुन नरेंद्र लोचन भरे, रहे वदन[1] बिलखाय[2]।
पुत्रव्याहवर्जनवचन[3], किसे नहीं दुखदाय ॥४२॥

चौपई।

इहिविध संदराग जिनराय। निवसैं सबजीवनसुखदाय॥
पूरवकथित कमठचर सीह। पाप करत मानी नहिं बीह।४३।
मुनिहत्यावस दुर्गति गयौ। पंचमनरकवास सो लयौ॥
सत्रहजलधि[4] तहां दुख सहे। वचन द्वार जो जाहिं न कहे।४४।
थिति पूरन कर छोडो ठौर। सागर तीन भम्यौ फिर और।
पसुगतिमांहि विपत बहु भरी। त्रसथावरकी काया धरी।४५।
इहिविध भयौ पाप अवसान[5]। काहू जन्मक्रिया सुभ ठान।
महीपालपुर सोहै जहां। महीपालनृप उपज्यौ तहां ॥४६॥
पारसप्रभुको वामा माय। इनकौ पिता भयौ यह राय॥

---

१ मुख २ रोना ३ पुत्र के विवाहका मना कर देना ४ सत्रह सागर ५ अंत

पटरानीके प्रानवियोग । उपज्यौ विरह बढ्यौ चित सोग।४७।
तपसी भेष धर्यौ दुख मान । पचागनि साधै बनथान ।।
सीस जटा मृगछाला संग । भसम पीस लाई सब अंग ।।४८।।
भ्रमत बनारसिके उद्यान । आयौ कष्ट करत बिनग्यान ।।
इहि अवसर श्रीपार्श्वकुमार । गये सहज बन करन बिहार।४९।
राजपुत्र बहु सुरगन साथ । गज आरूढ दिपै जिननाथ ।।
कर सुछन्द बनकेलि[1] अनूप । चलै नगरकौं आनन्दरूप ।५०।
देख्यौ मगमै जननी-तात[2] । तपै पचपावक[3]-तप गात ।।
सो समीप प्रभुकौं अविलोय । चितै चित रोषातुर[4] होय।५१।
मै तपसी कुलवत महत । जननी-पिता पूज सब भत ।।
अहो कुमरके यह अभिमान । विनय प्रनाम करै नहिं आन ।
इतने ई धन कारन जान । लकडी चीरन लग्यौ अयान[5] ।।
हाथ कुल्हाडी लीनी जबै । हितमितवचन चये प्रभु तबै ।५३।
भो तपसी यह काठ न चीर । यामै जुगल[6] नाग हैं बीर ।।
सुनि कठोर बोल्यौ रिस[7] आन । भो बालक तुम ऐसो ग्यान
हरिहर ब्रह्मा तुम ही भये । सकलचराचरग्याता ठये ।।
मनै करत उद्धत अविचार । चीरचौ काठ न लाई बार ।५५।
ततखिन[8] खड भये जुगजीव । जैनी बिन सब अदय[9] अतीव ।
दयासरोवर जिन तब कहै । तपसी बृथा गरब तू बहै ।।५६।।
ग्यान बिना नित काया कसै । करुना तेरे उर नहिं बसै ।।

---

१ बन क्रीडा २ माता का पिता (नाना) ३ पचाग्नि ४ क्रोधयुक्त
५ अज्ञानी ६ दो का जोडा ७ गुस्सा ८ तत्काल ९ दया रहित ।

तब सठ[1] रोषवचन फिर चयौ। जननी जनकर तपसी भयौ।
करै न मदवस विनयविधान। और उलट खडै मुझ आन ॥
पंच अगनि साधूं तन-दाह। रहूं एकपद ऊरधबांह ॥५८॥
भूख प्यास बाधा सब सहू। सूखे पत्र पारनै[2] गहूं ॥
ग्यानहीन तप क्यो उच्चरै। क्यो कुमार मुझ निंदा करै ॥५९॥
तब प्रभुवचन कहे हितकार। तुझ तपमै हिंसाअघभार ॥
छहो कायके जीव अनेक। नास होहि नित नाहि विवेक।६०।
जहां जीवबध होय लगार। तहा पाप उपजै निरधार ॥
पाप सही दुर्गति दुख देह। यातै दयाहीन तप येह ॥६१॥
ग्यान बिना सब कायकलेस। उत्तम फलदायक नहि लेस ॥
जैसे तुस[3] खडन[4] कन छार। यो अजान तप अफल असार।६२।
अधपुरुष वन[5]-दौमै दहै। दौर[6] मरै मारग नहि लहै ॥
त्यो अजान उद्यम करि पचै। भवदावानलसौं नहि बचै।६३।
ऐसे ही किरिया बिन ग्यान। सो भी फलदायक नहि जान।
जथा पगु लोचनबल धरै। उद्यमबिन[7] दावानल जरै ॥६४॥
तातै ग्यानसहित आचार। निहचै वांछितफलदातार ॥
इहिबिध जिनमतके अनुसार। करि उत्तम तप यह हठछार।६५।
मै तुझ वचन कहे हितकार। तू अपने उर देखि विचार ॥
भली लगै सोई करि मित्त[8]। वृथा मलीन करै मति चित्त ६६।

१ मूख २ उपवास के पश्चात् का भोजन ३ भूसा ४ टुकड़े ५ बन की आग
६ दौड़ना ७ बिना पुरुषार्थ ८ मित्र।

दोहा ।

नाग जुगल सुनि जिनबचन, क्रूरजीव अति निंद ।
देह त्यागि ततखिन भये, पदमावति धरनिंद ।।६७।।
नाग जुगल[1]के भागकी, महिमा कही न जाय ।
जिनदरसन प्रापति भई, मरन समय सुखदाय ।।६८।।

चौपई ।

घर आये श्री पार्सजिनन्द । सुरनरनेत्रकमलिनीचन्द ।।
समय पाय तपसी तजि देह । भयौ जोतिषी संवर तेह ।६९।
देखो जगमै तपपरभाव । ग्यान बिना बांधी सुरआव[2] ।।
जे नर करें जैनतप सार । तिन्हैं कहा दुर्लभ संसार ।।७०।।
स्वामी मगन सुखोदधिमांहि । हर्ष विनोद करत दिन जांहि ।
प्रभुके इष्ट-वियोग न होय । सोगसंजोग न कबही कोय ।७१।
वायपित्तकफजनित विकार । सुपनैं होय न सोच विचार ।।
जरा न ब्यापै तेज न जाय । ना मुखकमल कभी कुम्हलाय७२
होहि नहीं दुखकारन आन । पुन्यउदधिबेला भगवान ।।
यो सुखभोग करत दिन गये । तब जिन तीस वर्षके भये।७३।
नृप जयसेन अजुध्याधनी । भक्ति प्रीत प्रभुसौं अति घनी ।
तुरगादिक बहु वस्तु अनूप । पठई[3] विनय वचन कहि भूप ७४
राजदूत चलि आयौ तहां । सभा थान जिन बैठे जहां ।।
हेमासन पर सोहैं एम । हिमगिरिसिखर स्यामघन जेम ।७५।
देखि दूत रोमाचित भयौ । बहुबिध चरन कमलकौं नयौ ।

१ युगल २ देव आयु ३ भेजी ।

मान्यौ सफलजन्म निजसार । त्रिभुवनपति परतच्छ[1] निहार ७७
धरी भेंट जो राजा दई । विनय प्रनाम वीनती चई[2] ॥
तब पूछे तहां त्रिभुवनधनी । संपति नगर अजोध्यातनी ॥७७॥
कहै दूत कर जुग[3] सिर धार । वरनै तीर्थंकर अवतार ॥
मोख गये वरनैं तिहिंठाम । सुनि स्वामी चिंतै उर ताम ॥७८॥

छन्द चाल ।

सुनि दूत वचन वैरागे । निज मन प्रभु सोचन लागे ॥
मैं इन्द्रासन सुख कीने । लोकोत्तम भोग नवीने ॥७९॥
तब तृपति भई तहां नाहीं । क्या होय मनुषपदमाहीं ॥
जो सागरके जलसेती । न बुझी तिस्ना[4] तिस एती ॥८०॥
सो डाभ[5]-अनीके पानी । पीवत अब कैसे जानी ॥
ईंधनसौं आगि न धापै । नदियों नहिं समुद्र समाएं[6] ॥८१॥
यों भोगविषै अतिभारी । तृपते न कभी तनधारी[7] ॥
जो अधिक उदय ये आवैं । तो अधिकी चाह बढ़ावैं ॥८२॥
जो इनसौं तृपति विचारैं । सो वैसानर[8] घृत डारैं ॥
इन सेवन जो सुख पावै । सो आकों[9] आंब[10] उमहावै ॥८३॥
ये भीम भुजंग सरीखे । भ्रम-भाव-उदय सुभ दीखे ॥
चाखतहीके सुख मोठे । परिपाक[11] समय कडु दीठे ॥८४॥
ज्यों खाय धतूरा कोई । देखै सब कंचन सोई ॥
धिक ये इन्द्री-सुख ऐसे । विषवेल लगे फल जैसे ॥८५॥

१ प्रत्यक्ष २ कहा ३ दोनों हाथ ४. प्यास ५ डाभ का अगला हिस्सा ६ भरे ७. शरीरधारी ८ अग्नि ९ आकड़े का पौधा १० आम ११ उदयकाल

इनही वस जीव अनादी। भव भाँवर[1] भ्रमत सवादी[2] ॥
इन ही बस सीख न मानै। नानाबिध पातक[3] ठानै ॥८६॥
थिर जगम[4] जीव संघारै। इनके वस झूठ उचारै ॥
पर चोरीसौं चित लावै। परतिय संग सील गमावै ॥८७॥
परिग्रह-तिसना[5] बिस्तारै[6]। आरंभ उपाधि बिचारै[7] ॥
इत्यादि अनर्थ अलेखै[8]। करि घोर नरकदुख देखै ॥८८॥
ये ही सुखपर्वतकेरे। जग फोरन वज्र बड़ेरे ॥
ये ही सब दोषभंडारे। धन-धर्म-चुरानवहारे ॥८९॥
मोही जन मोहैं योहीं। ये आदरजोग न क्यो हीं ॥
इनसौं ममता तज दीजै। पर त्यागत ढील न कीजै ॥९०॥
सामान पुरुष जग जैसे। हम खोये ये दिन ऐसे ॥
संजम बिन काल गमायौ। कछु लेखेमैं नहि लायौ ॥९१॥
ममतावस तप नहि लीनौं। यह कारज जोग न कीनौं ॥
अब खाली ढील न कीजं। चारित-चिंतामनि लीजं ॥९२॥

दोहा।

भोगविमुख[9] जिनराज इमि, सुधि कीनी सिवथान[10]।
भावै बारह भावना, उदासीन हितदान ॥९३॥

चौपई।

द्रव्य सुभाव बिना जगमाहिं। परजै[11] रूप कछु थिर नाहिं ॥
तनधन आदिक दीखत जेह। कालअगनि सब ई धन तेह ॥९४॥

१ ससार परिभ्रमण २ स्वाद लेनेवाला ३ पाप ४, त्रस ५ लालच ६ फैलावे ७ रोग-चिंता ८ बेहिसाब ९ उदास १० मुक्तिस्थान ११ पर्याय

भववन भ्रमत निरतर जीव । याहि न कोई सरन सदीव ॥
व्योहारै परमेठी-जाप । निहचै सरन आपकौं आप ॥६५॥
सूर[1] कहावै जो सिर[2] देय । खेत[3] तजै सो अपजस लेय ॥
इस अनुसार जगतकी रीति । सब असार सब ही विपरीत॥६६
तीनकाल इस त्रिभुवनमाहिं । जीव-सगाती[4] कोई नाहिं ॥
एकाकी सुख दुख सब सहैं । पाप पुन्य करनीफल लहै ॥६७॥
जितने जग सजोगी[5] भाव । ते सब जियसौं भिन्न सुभाव ॥
नितसंगी[6] तन ही पर सोय । पुत्र सुजन पर क्यो नहिं होय
असुचि[7]अस्थि[8]-पिंजर तन येह । चामवसनबेढ्यो[9] घिनगेह[10]।
चेतनचिरा[11] तहां नित रहै । सो बिन ग्यान गिलानि न गहै
मिथ्या अविरत जोग कषाय । ये आस्रवकारन समुदाय ॥
आस्रव कर्मबन्धको हेत । बन्ध चतुरगतिके दुख देत ॥१००॥
समिति गुपति अनुपेहा[12] धर्म । सहन परीषह संजम पर्म ।
ये सवरकारन निरदोख । संवर करै जीवको मोख ॥१०१॥
तपबल पूर्वकरम खिर जाहिं । नये ग्यानबल आवै नाहिं ।
यही निर्जरा सुखदातार । भवकारन-तारन निरधार ।१०२।
स्वयसिद्ध त्रिभुवनथित जान । कटिकर[13] धरे पुरुषसठान[14]।
भ्रमत अनादि आतमा जहाँ । समकित बिन सिव होय न तहाँ।

---

१ शूरवीर २ मस्तक कटावे ३ युद्ध क्षेत्र ४ साथी ५ सयोगी ६ सदा साथ रहने वाला ७ अपवित्र ८ हड्डियोका पीजरा ९ चमडे का कपडा लिपटा हुआ १० घृणा का स्थान ११ चेतन रूपी पक्षी १२ अनुप्रेक्षा (बार बार चितन) १३ कटियो पर हाथ १४ पुरुष के आकार जैसा ।

दुर्लभ धर्म दसांग[1] पवित्त । सुखदायक सहगामी नित्त ॥
दुर्गति परत यही कर गहै । देय सुरग सिवथानक यहै ॥१०४॥
सुलभ जीवकौं सब सुख सदा । नौग्रीवक ताईं संपदा ॥
बोधिरतन दुर्लभ संसार । भवदरिद्रदुखमेटनहार ॥१०५॥
ये दस-दोय भावना भाय । दिढ़ वैरागि भये जिनराय ॥
देहभोग संसार सरूप । सब असार जान्यौ जगभूप ॥१०६॥
इतनैं लौकांतिक सुर आय । पुहुपांजलि दे पूजे पाय ॥
ब्रह्मलोकवासी गुनधाम । देव रिषीश्वर जिनकौ नाम ।१०७।
सब पूरवपाठी बुधवंत । सहज सीलमूरति उपसंत ॥
वनिताराग[2] हियें नहिं गहैं । एकजनम धरि सिवपद लहैं१०८
तीर्थंकर जब विरकत[3] होय । हर्षवंत सब आवैं सोय ॥
और कल्यानक करैं प्रनाम । सदा सुखी निवसैं निजधाम।१०९।
हाथ जोरि बोले गुनकूप[4] । थुतिदायक[5] अरु सिच्छारूप ।
धनिविवेक यह धन्य सयान[6] । धनि यह औसर दयानिधान ॥
जान्यौ प्रभु संसार असार । अथिर अपावन[7] देह निहार ॥
इन्द्रिय सुख सुपने सम दीस । सो याही विध है जगईश १११
उदासीन असि[8] तुम कर[9] धरी । आज मोहसेना थरहरी ।
बढ्यौ आज सिवरमनि सुहाग । आज जगे भविजन सिरभाग
जग प्रमादनिद्रावस होय । सोवत है सुधि नाहीं कोय ॥
प्रभु धुनिकिरन पयासैं[10] जबै । होय सचेत जगैं जन तबै ॥११३

१. दस धर्मों वाला २ स्त्री प्रेम ३ विरक्त ४. कुआ ५. स्तुतिरूप वचन ६ समझदार ७ अपवित्र ८ तलवार ९ हाथ १०. प्रकाशित हो।

यह भव दुस्तर[1] पारावार[2] । दुखजलपूरित वार न पार ॥
प्रभु उपदेश पोत[3] चढ़ि धीर । अब सुखसौं लैहैं जन तीर ॥११४॥
सिवपुरि पौर[4] भरमपट[5] जहा । मोह मुहर[6] दिढ कोनो तहा ॥
तुम वानी कूची कर धार । अब भवि जीव लहैं पयसार[7] ॥११५॥
स्वयबुद्ध बोधन-समरत्थ । तुम पर प्रतिबुध[8] वचन अकत्थ[9] ॥
ज्यो सूरज आगे जिनराज । दीप दिखावन है बेकाज ॥११६॥
हम नियोग औसर यह आय । तातैं करैं वीनती आय ॥
धरिये देव महाव्रत भार । करिये कर्मसत्रुसघार ॥११७॥
हरिये भरम तिमिर सर्वथा । सूझै सुरगमुकतिपथ जथा ॥
यो थुति करि बहुभाव दिढाय । बारबार चरनन सिर नाय ११८
साधि नियोग[10] गये निजथान । लोकातिक सुर बडे सयान ॥
अब चौविध इन्द्रादिक देव । चढ़ि निज निज वाहन बहुभेव ११९
हर्षित उर परिवारसमेत । आये तृतिय-कल्यानक[11] हेत ॥
सुर वनिता नाचै रस भरीं । गावैं मधुरगीत किन्नरीं ॥१२०॥
बाजे विविध बजैं तिस वार । करैं अमरगन जय जय कार ।
सोवन[12]-कलस भरे सुरराय । विमल छीरसागर-जल लाय १२१
हेमासन[13] थापे जिनराय । उच्छवसहित न्हौन-विधि ठाय ॥
भूषन वसन सकल पहिराय । चदनचर्चित कीनी काय ।१२२।
इस औसर प्रभु सोहैं एम । मोखबधूवर दूलह जेम ॥

---

१ कठिनता से तरनेयोग्य २ समुद्र ३ जहाज ४ पोल ५ किवाड़ ६ म्होर=सी
७ प्रवेश ८ उपदेश योग्य ९ बेकार १० नियम से होनेवाला काय ११ तप कल्याण १२ सोने के १३ स्वर्ण सिंहासन ।

कहि वैराग वचन जिन तबै। प्रतिबोधे[1] परिजन जन सबै ।।
अति हठसौं समझाई माय। लोचन भरे वदन विलखाय ।।
विमला नाम पालकी साज। आनी इन्द्र चढे जिनराज।१२४।
पहले भूमिगोचरी[2] राय[3]। सात पैंड़ लीनी सुखदाय ।।
फिर विद्याधर राजा रले। पंड सात ही ते ले चले ।।१२५।।
पीछै इन्द्रादिक सुरसंघ। कांधै धरी चले पुर लंघ ।।
ना अति निकट न दीसै दूर। नभ मारग देखैं जन भूर।१२६।

दोहा।

जिस साहबकी[4] पालकी, इन्द्र उठावनहार ।।
तिस गुनमहिमा-कथन अब, पूरन होउ अपार ।।१२७।।

चौपई।

यो सुर नर हरषित भये। अस्व नाम वनमै चलि गये ।।
बड़तरुतलै सिला सुभ जहां। कीनौं सची[5] साथिया तहा ।।
उतरे प्रभु अति उत्तम ठाम। सात भयो कोलाहल ताम ।।
सत्रुमित्र ऊपर समभाव। तिन-कंचन गिन एकसुभाव ।।१२८
सोमभाव[6] स्वामी उर धार। पटभूषन[7] सब दीनै डार ।।
उदासीन उत्तरमुख भये। हाथ जोर सिद्धन प्रति नये ।।१३०
दुबिध परिग्रह तजि परमेस। पंच[8]-मुष्टि लोचे[9] सिरकेस ।।
सिवकामिनिकी दूती जोय। धरी दिगंबरमुद्रा सोय ।।१३१।।

---

१ समझाये २ पृथ्वी पर चलने वाले ३, राजा ४ पदवीधारी पुरुष ५ इन्द्राणी ६ सौम्यभाव (रागद्वेष रहित) ७ वस्त्राभूषण ८ पांच मुट्ठी ९ उखाडे।

आठवाँ अधिकार

सोरठा।

जाप्रभुकी जसहंस[1], तीनलोक पिंजरं वसै ॥
सो मम पाप विधंस, करौ पास परमेस नित ॥१॥

चौपई।

अब जिन उठे जोग-अवसान। देहहेत उद्यम उर आन ॥
परमउदास अधोगत[2] दीठ[3]। महजसातमुद्रा मनईठ[4] ॥२॥
दया-नीर-निर्मल-परवाह। गुलर-खेटपुर पहुचे नाह[5] ॥
लाभ अलाभ बराबर धार। निर्धन धनकी नाहि विचार ।३।
ब्रह्मदत्त नृपति बड़भाग। प्रभुकों देखि बढ्यो उरराग ॥
उत्तमपात्र सकलगुनधाम। करि प्रनाम पड़िगाहे ताम ॥४॥
हेमासन थाप्यौ नरराय। प्रासुक जल परछाले[6] पाय ॥
आठभांति पूजा विस्तरी। हाथ जोर अंजुलि सिर धरी ।५।
मन-तन-वायक[7] सुद्धसरूप। नौ दातागुनसंजुत भूप ॥
सुद्ध अन्न दीनों परवीन। प्रासुक मधुर दोषदुखहीन ॥६॥
उत्तमपात्र दानविधि करी। तीनभवन कीरति विस्तरी ॥
पंचाचरज भये नृपधाम। फिर स्वामी आये वन-ठाम ॥७॥
करे घोर तप साधै जोग। दरसन करत मिटै सब सोग ॥
अचल अंग मुख सोहै मौन। एकचित्त निजपद चितौन[8] ॥८॥

---

१. कीर्ति रूपी हंस २. नीचे देखना ३. दृष्टि ४ मन को भाने वाली ५ नाथ ६. धोये ७. वचन ८. चिंतन।

दोहा।

यों दुद्धर तप करत अति, धर्मध्यानपदलीन ॥
चार मास छद्मस्त[1] जिन, रहे रागमलहीन ॥१५॥

चौपई।

एक दिवस दीच्छाबन जहा। जोगलीन प्रभु निवसे तहां ॥
काउसग्ग[2] तन विगतविरोध। ठाड़े जिनवर जोगनिरोध ।१६
संवर नाम जोतिषी देव। पूरवकथित कमठचर एव ॥
अटक्यौ अंबर[3] जात विमान। प्रभु पर रह्यौ छत्रवत आन।१७
ततखिन[4] अवधिग्यानबल तबै। पूरव बैर संभालो सबै ॥
कोप्यौ अधिक न थाम्यौ जाय। राते[5] लोयन[6] प्रजुली[7] काय[8]॥
आरंभ्यौ उपसर्ग महान। कायर देखि भजे भयमान ॥
अंधकार छायो चहुंओर। गरज गरज बरखे घन घोर ।१९॥
झरै नीर मुसलोपम धार। वक्र[9] बीज[10] झलकै भयकार ॥
बूड़े गिरि तरुवर बनजाल। झंझा वायु बही विकराल ॥२०॥
जल थल भयो महोदधि[11] एम। प्रभु निवसै कनकाचल[12] जेम॥
दुष्ट विक्रियावल अविवेक। और उपद्रव करे अनेक ॥२१॥

छप्पय।

किलकिलंत बेताल[13], काल कज्जल[14] छवि सज्जहिं।
भौं कराल विकराल, भाल मदगज जिमि गज्जहिं ॥

---

१ केवलज्ञान के पूर्व की दशा, २ कायोत्सर्ग ३. आकाश ४ इसी समय ५ लाल ६. आखें ७ जली ८. शरीर ९. टेढी १०. बिजली ११. समुद्र १२. सुमेरु १३. व्यंतरदेव १४. काजल के समानकाले।

मुंडमाल[1] गल धरहिं, लाल लोयननि डरहिं जन ।
मुख फुलिंग[2] फुंकरहिं, करहिं निर्दय धुनि हन हन ।।
इहि बिध अनेक दुर्भेष[3] धरि, कमठजीव उपसर्ग किय ।
तिहुंलोकबंद जिनचंद्रप्रति, धूलि डाल निज सीस लिय ।।२२

दोहा ।

इत्यादिक उतपात सब, वृथा भये अति घोर ।
जैसे मानिक दीपकौं, लगै न पौन झकोर ।।२३।।
प्रभु चित चल्यौ न तन हल्यौ, टल्यौ न धीरज ध्यान ।
इन अपराधी क्रोधवस, करी वृथा निज हान ।। २४ ।।
पावक[4] पकरै हाथसौं, अवसि[5] हाथ जलि जाय ।
परके तन लागै नहीं वाके पुन्यसहाय ।। २५ ।।
प्रानी विषयकषायवस, कौन कौन विपरीत ।
करत हरत कल्यान निज, जलौ जलौ यह रीत ।। २६ ।।
प्रभु अचिंत्य[6]-महिमा-धनी, त्रिभुवनपूजित-पाय ।
तिनके यह क्यो संभवै, सुर उपसर्ग कराय ।। २७ ।।
इहि बिध जो कोई पुरुष, पूछै संसय राखि ।
ताके समुझावन निमित, लिखूं जिनागम साखि ।।।२८।।

चौपई ।

अवसर्पनि उतसर्पनि काल । होंहि अनंतानंत विसाल ।।
भरत तथा ऐरावतमांहि । रैंहटघटीवत आवै जांहि ।।२९।।

१ कटे शिरो की माला २ आग ३ खोटे भेष ४ अग्नि ५ अवश्य
६ चिंतन मे न आने योग्य ।

चौपई।

इहिविध त्रेसठ प्रकृति निवार। घाते कर्म घातिया चार॥
चैतअंधेरी चौदस जान। उपज्यौ प्रभु के पंचम[1] ग्यान।५०।
लोकालोक चराचर भाव। बहुविध परजयवंत सुभाव॥
ते सब आन एक ही बार। झलके केवलमुकुर[2]मंझार॥५१।
भये अनंत चतुष्टयवंत। प्रगटी महिमा अतुल अनंत॥
दिव्य परम औदारिक देह। कोटि भानुदुति जीती जेह।५२।
अलौकीक अद्भुत संपदा। मंडित भये जिनेसुर तदा॥
बचनअगोचर महिमा सार। बरनन करत न पइये पार।५३।

दोहा।

पांच हजार प्रमान धनु[3], उपजत केवलग्यान॥
अंतरिच्छ[4]प्रभु तन भयौ, ज्यों ससि अबरथान *॥५४॥

चौपई।

प्रकटी केवल रविकिरन जाम। परिफूल्यौ त्रिभुवन कमल ताम
आकास अमल दीसै अनूप। दिसि-विदिसि भई सब विमलरूप
सुरलोक बजै घंटागरिष्ट। तरु करन लगे तहां पुहपविष्ट॥
इंद्रासन कांपे अतिगरीस। आनम्र[5] भये मनिमुकुट सीस॥५६
इत्यादिक बहुविध चिह्न चार। प्रभु केवलसूचक भये सार॥

* उक्तं च गाथा—
जादे केवलणाणे परमोढार जिणाण सव्वाण।
गच्छदि उवरे चावा पचसहस्साणि वसुहाओ।

१ केवलज्ञान २ कांच ३ धनुष ४ आकाश ५ झुके।

तब अवधि जोति जान्यौ सुरेस । जुग करै धर्म पारसजिनेस ॥
सिंहासन तजि निज सीसनाय । प्रनमो परोच्छ सुख उर न माय ॥
उछ्रानो पुलकै पहर रत्न । यों पावन तजि उनके तुरत ।५८।
फिर शासन स्वामी नयौ सीस । याही प्रतिउत्तर दे ईस ॥
तब दीने पिरसिन देवराज । प्रभु उपज्यौ केवलज्ञान आज ॥
ऐरावतगज सजि सपरिवार । प्रथमेन्द्र चल्यौ आनंद अपार ।
बाजे बहु पटह पयान-भेर । सब सुरगन परन लगे प्रवेर ।६०।
ईसानप्रमुख सब स्वर्गनाथ । निजवाहन चढि चढि चले साथ ।
हरिनाद[1] सुन्यौ जोतिषी देव । उड्डादि चले तब पत्र सेव[2] ॥६१॥
भावन-घर बाजे सङ्ख पूरि । दसविध सुर निकसे हरख पूरि[3] ॥
वसु[4] विन्तर-घर गरजे निसान । यों परिजन सब कीनौ पयान ।६२।
यों चलो चतुरविध सुरसमाज । जिन-केवलपूजा करन काज ।
अम्बर तजि आये अवनिमाहिं । जहँ समोसरन ध्वज फरहराहिं
जो सुरपतिको उपदेश पाय । धनपतिने[5] कीनौ प्रथम आय ॥
वर पचवरन मनिमय अनूप । जगलछमीको कुलगृह सरूप ॥६४॥

दोहा ।

समोसरनको सम्पदा, लोकोत्तर तिहुँ भौन ।
वचनद्वार बरनै तिसै, सो बुध समरथ कौन ॥६५॥

सोरठा ।

पै यह अवसर पाय, धर्मध्यानकारन निरखि ॥
लिख्यौ लेस मन लाय, पढत सुनत आनंद बढ़ै ॥६६॥

---

१ स्वामी २ नमस्कार ३ गमन का बाजा ४ सिंह का ध्वान ५ [illegible] ६ प्रगट ७ पठ ८ कुबेर ।

चौपई।

पहले गोलपीठिका[१] ठई। इन्द्रनीलमनिमय निर्मई ॥
पांच कोस चौड़ी परवान। तीनलोक उपमा नहिं आन ॥
जाके चहुदिस गिरदाकार[२]। बनी पैड़िका[३] बीसहजार ॥
हाथ हाथपर ऊचो लसै। नभपरजंत देखि दुख नसै ॥६७॥
तापर धूलीसाल उतग। पंचरतनरजमय सरवंग ॥
विविध बरनसौं बलयाकार[४]। झलकै इन्द्रधनुष उनहार ॥६८
कहीं स्याम कहिं कंचनरूप। कहिं विद्रुम कहिं हरित अनूप ॥
समोसरन लछमीकौ एम। दिपै जड़ाऊ कुडल जेम ॥६९॥
चारौं दिसि तोरन बन रहे। कनक थभ ऊपर लहलहे ॥
आगे मानभूमि है जहा। मानथभ[५] चारोदिसि तहां ॥७०॥
तिनकी प्रथम पीठिका बनी। सोलह पैड़ी संजुत ठनी ॥
चार चार दरवाजे ठान। तीन तीन तहा कोट महान ।७१
तिनमै और त्रिमेखलपीठ[६]। तिनपै मानथभ थिर दीठ ॥
अति उतग कचनके ठये। छत्रधुजादिकसौं छबि छये ॥७२॥
जिनै देखि मानी मद-बढे। उतरे मान-महागिरि-चढे ॥
मूलभाग प्रतिमा मनहरै। इन्द्रादिक पूजा विसतरै ॥७३॥
एक एक दिसि चहुं दिसि ठई। सहज वापिका[७] वारिज-छई
नदादिक सुभ जिनके नाम। चारौं दिसि सोलह सुखधाम ॥
आगे खाई सोभित खरी। औंडी अधिक विमलजलभरी ॥
रतन-तीर राजै चहुँओर। हसकलाप[८] करै जहं सोर ॥७५॥

---

१ चबूतरा २ गोलाकार ३ सीढ़िया ४ गाल ५ मानस्तम्भ ६ तीन मेखला वाला चबूतरा ७. बावडी ८ हसो का समूह।

दोहा।

वलयाकृति[1] खाई बनी, निर्मल जल लहरेय।
किधौं विमल गंगानदी, प्रभु परदछना देय ॥७६॥

चौपई

आगे पुहपवेल[2]-वन सार। महासुगंध[3] मधुपमुखकार ॥
सघन छांह सब रितुके फूल। फूले जहां सकल सुखमूल ।७७।
याके कछु अंतर दुति धरै। कंचन कोट प्रथम मनहरै ॥
वलयाकृति अति उन्नत जेह। मानौं मानुषोत्र गिरि येह ।७८
चहुँदिसि सोहैं चार दुवार। रूपमई तिखने मनहार ॥
रतनकूट ऊपर जगमगै। लाल बरन अतिसुन्दर लगै ॥७९।
किधौं अरुन-छवि हाथ उठाय। जगलछमी नाचै विहसाय।
नौनिधि जहा रहैं अभिराम। पिंगलादि हैं जिनके नाम ।८०
प्रभुअजोग[4] गिन दीनी छार[5]। वे मचलीं[6] सेवैं दरबार ॥
मंगल दरव एकसौ आठ। धरे प्रतेक मनोहर ठाठ ॥८१॥
गावैं जिनगुन देवकुमार। और विविध सोभा तह सार ॥
विंतरदेव खड़े दरवान। विनयहीनकौ देहिं न जान ॥८२॥
यह पहले गढ़को विधि कही। आगे और सुनौ अब सही ॥
गोपुर[7] तजि चारौं दिसि गली। गमनहेत भीतरकौं चली ।८३
तहां निरतसाला दुहुँ पास। सब दिसिमैं जानौ सुखवास ॥
सुवरनथंभ फटिकमय भीत। तिखनी[8] मनिमय सिखर पुनीत

१ गोल २ पुष्प वेल ३ भौंरे ४ अयोग्य ५ राख ६ गिरीपड़ी ७ दरवाजे ८ तीन खन का।

सुरवनिता नाचै तहँ एम । लावन-तोय तरंगनि[1] जेम ॥
मंदहास मुख सोहैं खरीं । जिनमंगल गावैं सुखभरीं ॥८५॥
बाजै बीन बांसली ताल । महा मुरजधुनि होय रसाल ॥
आगे बीथी अंतर धरे । दोनों दिसा धूपघट भरे ॥८६॥

सोरठा ।

स्याम वरन यह जानि, धूप धुम्रां नभकों चल्यौ ।
किधौं पुन्य-डर मानि, धूम्रां मिस पातक[2] भज्यौ ॥८७॥

चौपई ।

आगे चार बाग चहुँ ओर । प्रथम असोक नाम चितचोर ॥
सप्तपरन चंपक सहकार । ये इनकी संग्या[3] अविधार ॥८८॥
सब रितुके फल-फूलन-भरे । बिरछ बेलसौं सोहत खरे ॥
वापीमंडप महल मनोग । राजैं जहां जथाविध जोग ॥८९॥
चैत-बिरछ चारों बनमांहि । मध्यभागसुन्दर छवि छांहि ॥
जिनमुद्रामंडित मन हरे । सुर नर नित पूजा विस्तरे ॥९०॥
बाग ओट बेदी चहुँओर । चार द्वारमंडित छवि-जोर ॥
अब इस बन-बेदीतैं सही । गढपरजंत गली जे रही ॥९१॥
तिनमैं धुजापांति फहरांहि । कंचनथंभ लगी लहरांहि ॥
दसप्रकार आकार समेत । तिनके भेद सुनौ सुखहेत ॥९२॥
माला वसन[4] मोर अरविंद[5] । हंस गरुड हरि वृषभ गयंद[6]
चक्रसहित दस चिह्न मनोग । धुजा दुकूलनि[7] सोहैं जोग ॥

१ जहर २ पाप ३ नाम ४ वस्त्र ५ कमल ६ हाथी ७ कपड़ा ।

ये दस एक जातको जान । एक एकमी आठ प्रमान ।
दसमें असी सबै मिल भई । एक दिसामें सब बरनई ॥९४॥
चारों दिसिकी जोड़ सरीस । चार हजार तीनसैं बीस ॥
यह परमित जिननामनमाहि । अतिविचित्र सोभा अधिकाहि॥
हालें धुजा पवन-बस येह । जिनपूजन भवि आये जेह ॥
पपखेद तिनको मन आन । करत किंधों सनकार-विधान॥९६
मानथंभ धुजथंभ अनूप । चैतविरछ वेदी गटरूप ॥
इत्यादिक ऊंचे इकसार । जिन-तनतें वारह गुन धार ॥९७।
आगे रजतमयी निरमान[1] । तुंग[2] कोट अति धवल महान ।
किधों सेत प्रभु-सुजस-प्रकास । फेरो देय फिरयो चहुपास ॥९८
पूरववत दरवाजे चार । रतनमई अनुपमछवि-धार ॥
नौनिधि मंगलदरव समाज । तोरनप्रमुख और सब साज ॥९९
प्रथमकोटवरननसम जान । ठाडे भवन देव दरवान ॥
यासों लगी और अब गली । चारों तरफ एक सी चली ॥१००
कलपविरछ-वन राजें तहां । दस विध कलपतरोवर जहां ॥
सूपन वसन लगे जिन डार । सोभा कहत न लहिये पार ॥
मध्यभाग जिनबिंबसमेत । सिद्धारथ[3] तरुवर छवि देत ॥
चहूंदिसि वेदी चहुं दिसि द्वार । रचना और अनेक प्रकार ॥
इस वेदीके बाहर भाग । आगे फटिक कोट लों लाग ॥
अति विचित्र महलनकी पांति । जिन सिर रतनकूट बहुभांति

[1] बनाई [2] ऊंची [3] एक वृक्ष विशेष ।

चंद्रकांतिमनि-भासुर[1] भीत । सुवरनमय तहा थंभ पुनीत ॥
सुरनरनाग रमें जिनमाहिं। किन्नरगन बहु केलि कराहिं॥१०४
वीथी[2]मध्यदेस सुभरूप । पद्मराग-मनिमय नव तूप ॥
धुजा छत्र घंटा छबि देहिं । जिनमुद्रासौं मन हर लेहिं ॥१०५
आगें तृतिय कोट बन एम । फटिकमई निर्मल नभ जेम ॥
अति उतंग सो वलयाकार । लालवरन मनिनिर्मित द्वार ॥
और कथन पूरववत जान । ठाढ़े सुरगदेव दरवान ॥
महामनोहर लोचनहारि । अनुपमसोभा अचरजकारि ।१०७॥
अब सुनि मध्य भूमिकी कथा । फटिककोटभीतर विधि जथा॥
गढसौं प्रथमपीठ लग लगी । फटिकभीत सोलह जगमगी ।१०८
तिनपै रतनथंभ छबि देहिं । प्रभा-[3]जालसौं तम हर लेहिं ॥
तिनहीपै श्रीमंडप छयौ । फटिकमई नभमैं निरमयौ ॥१०६॥

सोरठा।

या श्रीमंडपमाहिं, निराबाध[4] तिहुं जग बसै ।
भीर[5] होय तहां नाहिं, त्रिभुवनपति अतिसय अतुल ॥११०॥

चौपई।

भीतन बीच गली जे रहीं । बारहसभा तहां जिन कहीं ॥
बैठे मुनि अपछर अज्जिया[6] । जोतिष-वान-असुर-सुर-तिया ।
भावन वितर जोतिषि देव । कल्पनिवासी नर-पसु एव ॥
तिनमैं प्रथम पीठिका ठई । अनुपम वैडूरज-मनिमई ॥११२॥

१ चमकदार २ गली ३ चमक ४ बाधारहित ५ भीड़ ६ आर्यिका ।

मोरकंठवत आभा जास । सोलह पंच माल चहूँ पास ॥
बारह सभा महा दिसि चार । तिनकौं पह पथ मालह सार।
मंगलदरब जहा सब धरे । जच्छदेव सेवक तहा खरे ॥
धर्मचक्र तिनके सिर दिपै । जिनकौं देखि दिवाकर छिपै ॥११४॥
तापर दुतिय पीठिका बनी । चामीकर[2]मय राजत घनी ॥
मेरुशृङ्गवत[3] उन्नत एम । जगमगाय मंडल रवि जेम ॥११५॥
आठधुजा आठों दिसि जहा । तिन सोभा वरनन बुधि कहा।
तिनमें आठ चिहन चित्राम । चक्र गयंद वृषभ अभिराम ॥
वारिज वसन केहरीरूप । गरुड माल आकार अनूप ॥
मदपवनवस हालें जेह । किधौं पापरज झारत येह ॥११७॥
तापर तृतिय पीठिका और । तीन मेखला-मंडित ठौर ॥
सर्वरतनमय झलकत खरी । किरन जास दस दिसि विस्तरी॥
गंधकुटी तहा बनी अनूप । पंचरतनमय जडित सरूप ॥
जाके चार द्वार चहुँओर । झलकें मानिक हीरा-हीर ।११८।
तीनपीठ सिर सोहत खरी । किधौं[4] त्रिजगछवि नीची करी
परम सुगंध न बरनी जाय । सुन्दर सिखर धुजा फहराय ॥
तहां हेम-सिंहासन सार । तेजसरूप तिमिर छयकार ॥
नानारतन प्रभामय लसे । जगलछमी प्रति किरनन हसे ॥
वचनगम्य नहिं सोभा जहा । अंतरीच्छ[5] प्रभु राजें तहा ॥
त्रिभुवनपूजित पासजिनेस । ज्यो जगसिखर सिद्धपरमेस ॥

---

१ सूर्य २ सोना ३ चोटी ४ मानो ५ आकाश मे।

दोहा।

समवसरन रचना अतुल, ताकौ अति विस्तार।
संपति श्रीभगवानकी, कहत लहत को पार ॥१२३॥

सोरठा।

जिन-बरनन-नभमाहिं, मुनि विहग उद्यम करैं।
पै उड़ि पार न जाहिं, कौन कथा नर दीनकी ॥१२४॥

गीता

राजत उत्तंग असोक तरुवर, पवनप्रेरित थरहरै ॥
प्रभु निकट पाय प्रमोद नाटक, करत मानौं मनहरै ॥
तिस फूलगुच्छन भ्रमर गुंजत, यही तान सुहावनी।
सो जयौ पासजिनेन्द्र, पातकहरन जगचूडामनी[1] ॥१२५॥
निज मरन देखि अनग डरप्यौ, सरन ढूंढत जग फिरयौ।
कोऊ न राखै चोर प्रभुको, आय पुनि पायन गिरयौ ॥
यो हार निज हथियार डारे, पुहप-बरसा मिस भनी।
सो जयौ पासजिनेन्द्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१२६॥
प्रभु अग नील उतग नगतै[2], वानि[3] सुचि सीता ढली[4]।
सो भेदि भ्रम गजदत पर्वत, ग्यानसागरमै रली ॥
नय सप्तभगतरंगमडित, पापतापविधसनी।
सो जयौ पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूड़ामनी ॥११७॥
चद्रार्चिचय[5] छबि चारु चचल, चमरवृंद सुहावने।
ढोलै निरतर जच्छनायक, कहत क्यों उपमा बनै ॥

१. शिखामणी २. पहाड ३. वाणी ४ नदी ५. चन्द्रिका।

यह नीलगिरिके शिखर मानो, मेघझर लागो घनी ।
सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१२८॥
हीराजवाहरखचित[1] बहुविध, हेमआसन राजए ।
तहं जगतजनमनहरन प्रभुतन, नीलवरन विराजए ।
यह जटित वारिज मध्य मानो, नीलमनिकलिका[3] बनी ।
सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१२९॥
जगजीत मोह महान जोधा, जगतमें पटहा दियो ।
सो सुकलध्यान कृपानबल, जिन विकट वैरी वस कियो ॥
ये बजत विजय निसान दुंदुभि, जीत सूचै प्रभुतनी ।
सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३०॥
छदमस्त पदमैं प्रथम दरसन, ग्यान चारित आदरे ।
अब तीन तेई छत्र छलसौं, करत छाया छवि-भरे ॥
अति धवलरूप अनूप उन्नत, सोमबिंबप्रभा[4] हनी ।
सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३१॥
दुति देखि जाकी चाव सरमैं[5], तेजसौं रवि लाजए[6] ।
अब प्रभामंडलजोग जगमैं, कौन उपमा छाजए ॥
इत्यादि अतुल विभूतिमंडित, सोहिए त्रिभुवनधनी ।
सो जयो पासजिनेंद्र, पातकहरन जगचूडामनी ॥१३२॥
यो असम[7] महिमासिंधु साहब, सक्र[8] पार न पावही ।
तजि हासभय तुम दास 'भूधर', भगतिवस जस गावही ॥

---

१ जडित २ कमल ३ कली ४ चन्द्रबिंब ५-६ लज्जितहो ७ उपमारहित ८ इन्द्र ।

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मै सदा सेवक रहौ।
कर जोर यह वरदान मागौं मोखपद जावत[1] लहौ।१३३।

चौपई।

इह विध समोसरनमडान। कियौ कुबेर जथाविध थान।।
आये सुर वरसावत फूल। जयजयकार करत सुखमूल।१३४।
अति प्रसन्नता सब विध भई। हरसत तीन प्रदछिना दई।।
धूलसालिमे कियौ प्रवेश। चकितभयौ छवि देखि सुरेस।१३५।
मुदित महर्धिक[2] देवन साथ। जिनसनमुख आयौ सुरनाथ।
हस्तकमल जोरे अमरेस[3]। देखे दृग भरि पासजिनेस।१३६।
मनि उतग आसन पर ईस। मानौं मेघ[4] रतनगिरि-सीस।।
फैल रहो तनकिरनकलाप[5]। कोटभानुसौं[6] अधिक प्रताप।१३७।
विकसत चित रोमांचित काय। प्रनम्यौ चरन सीस भुविलाय।।
मनिझारी भरि तीरथतोय। पूजे मघवा[7] जिनपद दोय।१३८।
सुरग-सुगन्धनि भक्ति वढ़ाय। अरचे[8] इन्द्र जिनेसुरपाय।।
मुक्ताफलमय[9] अच्छत[10] लिये। पु ज[11] परमगुरु आगे दिये१३९
पारिजात मंदार मनोग। पुहप चढ़ाये जिनवर जोग।।
सुधापिंड चरु लेय पवित्त। पूजा करी सक्र धरि चित्त।१४०।
रतनप्रदीप रवाने खरे। श्रीपति पांय सचीपति धरे।।
देवलोककी अगर अनूप। पासचरन खेई सुरभूप।।१४१।।

---

१ जबतक २ महा ऋद्धिधारी ३. इन्द्र ४. बादल ५ समूह ६ करोडों सूर्यो से ७. इन्द्र ८ पूजे ९ मोती समान १० चावल ११ समूह।

क्रोधमहानलमेघ प्रचंड । मानमहीधरदामिनिदंड ॥
मायाबेलधनजयदाह[1] । लोभसलिलसोषक दिननाह[2]॥१५१॥
तुम गुनसागर अगम अपार । ग्यानजिहाज न पहुँचे पार ॥
तट ही तट पर डोलत सोय । स्वारथ सिद्ध तहांहो होय।१५२।
प्रभु तुम कीर्तिबेल बहु बढी । जतनबिना जगमडप चढी ॥
और अदेव सुजस नित चहैं । ये अपने घरही जस लहै ।१५३।
जगतजीव घूमैं बिनग्यान । कीनें मोहमहाविषपान ॥
तुमसेवा विषनासन जरी । यह मुनिजन मिलि निहचै करी ।
जन्मलता मिथ्यामतमूल । जामनमरन लगे जिहि फूल ॥
सो कबही बिन भगतिकुठार । कटै नहीं दुखफलदातार।१५५।
कलपतरोवर चित्राबेल[3] । काम-पोरसा[4] नौनिधि मेल ॥
चिंतामनि पारस पाषान । पुन्यपदारथ और महान ॥१५६॥
ये सब एकजनमसंजोग । किंचित सुखदातारनियोग ॥
त्रिभुवननाथ तुमारी सेव । जनमजनम सुखदायक देव ।१५७।
तुम जगबांधव तुम जगतात । असरनसरन-विरद-विख्यात ॥
तुम जगजीवनके रछपाल । तुम दाता तुम परमदयाल।१५८।
तुम पुनीत तुम पुरुष-पुरान[5] । तुम समदरसी तुम सबजान ।
तुम जिन जग्यपुरुष परमेस । तुम ब्रह्मा तुम विष्णु महेस।१५९।
तुमही जगभरता जगजान । स्वामि स्वयंभू तुम अमलान ।
तुम बिन तीनकाल तिहुलोय । नहिं नहिं सरन जीवकौं कोय॥

१ अग्नि २. सूर्य ३ अद्भुत बेल ४. इच्छापूर्ण करने वाली ५ पौराणिक पुरुष

तिस कारन करुनानिधि नाथ । प्रभु सनमुख जोरे हम हाथ।
जबलौ निकट होय निरवान । जगनिवास छूटै दुखदान ।१६१
तब लौं तुम चरनाबुज-वास । हम उर होहु यही अरदास[1] ।
और न कछु बाछा भगवान । यह दयाल दीजै वरदान ।१६२

दोहा ।

इहिबिध इन्द्रादिक अमर, करि बहु भगति विधान ।
निज कोठे बैठे सकल, प्रभु सम्मुख सुखमान ॥१६३॥
जीति कर्मरिपु जे भये, केवललब्धि-निवास ।
ते श्रीपारसप्रभु सदा, करो विघन-घन[2] नास ॥१६४॥

इति श्रीपार्श्वपुराणभाषाया भगवत्‌ज्ञानकल्याणकवर्णन नाम अष्टमोधिकार ।

नौवाँ अधिकार

—•—०—०—

सोरठा ।

पारसप्रभुको नाउँ, सार सुधारस जगतमैं ।
मै याकी बलि जाउँ, अजर-अमर-पदमूल यह ॥१॥

दोहा ।

बारह सभा सुथानमधि, यो प्रभु आनन्दहेत ।
जथा कमलिनो[3] खंडकौ, ससिमंडल सुख देत ॥२॥
विकसितमुख सुरनर सकल, जिनसन्मुख करजोर ।
निवसै प्यासे अमृतधुनि, ज्यौं चातक घनओर ॥३॥

---

१ प्रार्थना २ बादल-समूह ३ कुमोदिनी ।

चौपई ।

तब-गनराज स्वयम्भू नाम । चार ग्यानधारी गुनधाम ।।
करि प्रनाम पारसप्रभुओर । विनती करी करांजुलि जोर।।४।।
भो स्वामी त्रिभुवनघर येह । मिथ्यातिमिर छयौ अति जेह ।
भूले जीव भमै तामांहि । हितअनहित कछु सूझै नांहि ।।५।।
श्रीजिनवानी दीपक-लोय । ता बिन तहां उदोत[1] न होय ।
तातै करुनानिधि स्वयमेव । करि उपदेश अनुग्रह[2] देव ।।६।।
जाननजोग कहा है ईस । गहनजोग सो कह जगदीस ।।
त्यागनजोग कहो भगवान । तुम सबदरसी पुरुष प्रमान ।।७।।
कैसे जीव नरकमै परै । क्यो पसुजौनि पाय दुख भरै ।।
काहेसौं उपजै सुरलोय । कौन कर्मतै मानुष होय ।।८।।
कौन पापफल जनमै अंध । बहरा कौन क्रियासम्बन्ध ।।
किस अघ उदय होय नर पग । गू गा किस पातक-परसंग ।६।
कौन पुण्यतै दरव अतीव । क्यो यह होय दरिद्री जीव ।।
पुरुष-वेद[3] किस कर्म उदोत । नारि नपु सक किस विध होत ।
किम आचरन बडी थिति धरै । क्यों करि अलप आयु धरि मरै।
भोगहीन अरु भोगसमेत । सुखी दुखी दीखै किस हेत ।।११।।
किस कारन मूरख मतिहीन । क्यो उपजै पंडित परवीन ।।
किस करनीतै होय सरोग । किस अधर्मतै पुत्रवियोग ।।१२।।
विकल सरीर पाय दुख सहै । नीच ऊंचकुल कैसै लहै ।।
किनभावनि भवथिति विस्तरै । भवथितिभेद कहाकरि करै।।

१ प्रकाश २, दया ३ लिंग ।

षयोकर होय सुरगमै इन्द्र । कैसे पद पावै अहमिंद्र ॥
चक्रीपद किस पुन्यउदोत । किमि बांधे तीर्थंकरगोत ॥१४॥
इत्यादिक यह प्रस्न समाज । इनको उत्तर कहु जिनराज ॥
तुम सब संसयहरन जिनेस । जैसे भवतमदलन दिनेस ॥१५॥

दोहा ।

तब श्रीमुखवानी विमल, विन अच्छर गम्भीर ॥
महामेघकी गरज सम, खिरी हरन जगपीर[1] ॥१६॥
तालु होठ सपरस बिना, मुखविकार विन सोय ।
सब भाषामय मधुरतर, श्रीजिनकी धुनि होय ॥१७॥
जथा मेघजल परिनमैं, निंबादिक रसरूप[2] ।
तथा सर्वभाषामई, श्रीजिनवचन अनूप ॥१८॥

चौपई ।

छहों दरब पंचासतिकाय । सात तत्त[3] नौ पद समुदाय ॥
जाननजोग जगतमै येहु । जिनसौं जाहिं सकल सदेह ॥१९॥
सब बिध उत्तम मोखनिवास । आवागमन मिटै जिहिं वास ॥
तातै जे सिवकारन भाव । तेई गहनजोग मन लाव ॥२०॥
यह जगवास महादुखरूप । तातै भ्रमत दुखी चिद्रूप ॥
जिनभावन उपजै संसार । ते सब त्यागजोग निरधार ॥२१॥
नरकादिक जग-दुख जावंत । पापकर्मबसतै बहुभंत ॥
सुरगादिक सुखसपंति जेह । पुन्य तरोवरको फल तेह ॥२२॥

---

१ ससार के दुख २ नीम आदि ३ तत्त्व ।

दोहा।

इहि विध प्रस्नसमाजकौ, यह उत्तर सामान।
अब विसेस इनकौ लिखौं, जथासकति कछु जान ॥२३॥
जीव अजीव विसेस बिन, मूल दरब ये दोय।
इनहीको फैलाव सब, तीनकाल तिहुं लोय ॥२४॥
चेतन जीव अजीव जड़, यह सामान्यसरूप।
अनेकांत जिनमतविषैं, कह्यौ जथारथरूप ॥२६॥
दरव अनेक नयातमक[1], एक एक नय साधि।
भयौ विविध मतभेद यौं, जगमैं बढी उपाधि ॥२६॥
जन्मअंध गजरूप[2] ज्यौं, नहिं जानै सरवंग।
त्यों जगमैं एकांत मत, गहै एक ही अंग ॥२७॥
ता विरोधके हरनकौं, स्यादवाद जिनवैन।
सब संसयमेटन विमल, सत्यारथ सुखदैन ॥२८॥
सात भंगसौं साधिये, दरवजात जामाहिं।
सधै वस्तु निरविघन तब, सब दूषन मिट जाहिं ॥२९॥

घनाक्षरी।

अपने-चतुष्टैकी[3] अपेच्छा दर्व 'अस्ति' रूप,
परकी अपेच्छा वही 'नासति' बखानियै।
एकही समै सो 'अस्ति नासति' सुभाव धरै,
ज्यों है त्यों न कहा जाय 'अवक्तव्य' मानियै॥
अस्ति कहै नासति अभाव 'अस्ति अवक्तव्य',

१ नयात्मक २ हाथी का स्वरूप ३. स्व चतुष्टय (द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव)

त्यों ही नास्ति कहैं 'नास्ति अवक्तव्य' जानिये ॥
एकै वार अस्ति नास्ति कह्यौ जाय कैसे तातैं,
'अस्तिनास्तिअवक्तव्य' ऐसैं परवानियें ॥ ३० ॥

दोहा ।

इहि विध ये एकांतसौं, सात भंग भ्रमखेत ।
स्यादवाद पौरुष धरैं, सब भ्रमनासन हेत ॥३१॥
स्यादसब्दकौ अर्थ जिन, कह्यौ कथंचित जान ।
नागरूप[1] नयविषहरन, यह जग मंत्र महान ॥३२॥
ज्यों रससिद्ध कुधातु[2] जग, कंचन होय अनूप ।
स्यादवाद-संजोगतैं, सब नय सत्यसरूप ॥३३॥

चौपई ।

दरवदिष्टि जिय नित्तसरूप । परजयन्याय अथिर चिद्रूप ॥
नित्यानित्य कथंचित होय । कह्यौ न जाय कथंचित सोय ॥
नित्य अवाचि[3] कथंचित वही । अथिर अवाचि कथंचित सही॥
नित्यानित्यअवाचक जान । कहत कथंचित सब परवान ।३५।
इहिविध स्यादवाद नयछांहि । साध्यौ जीव जैनमतमांहि ॥
और भांति विकलप जे करैं । तिनके मत दूषन विसतरैं।३६।
जीव नाम उपयोगी जान । करता भुगता देहप्रमान[4] ॥
जगतरूप सिवरूप अरूप । ऊरधगमन सुभावसरूप ॥३७॥

१ सर्प २ तांबा ३ अवक्तव्य ४ देह बराबर ।

सोरठा ।

ये सब नौ अधिकार, जीवसिद्धिकारन कहे ।
इनकौ कछु विस्तार, लिखौं जिनागम देखिकै ॥३८॥

चौपई ।

चार भेद व्यौहारी प्रान । निहचै एक चेतना जान ॥
जो इनसौं नित जीवित रहै । सोई जीव जैनमत कहै ।३९।

सोरठा ।

प्रथम आव अवधार[1], इन्द्री सांस उसांस बल ।
मूल प्रान ये चार, इनके उत्तरभेद दस ॥४०॥

दोहा ।

पांच प्रान इन्द्रीजनित, तीनभेद बलप्रान ।
एक सास उस्वास गनि, आवसहित दस जान ॥४१॥

चौपई ।

सैनी जीव जगतमैं जेह । दसौं प्रानसौं जीवै तेह ॥
मनसौं रहित असैनी जात । ते नौप्रान धरै दिनरात ।४२॥
कान बिना चौइन्द्री जिते । आठ प्रानके धारक तिते ॥
तेइन्द्रीके आख न भनो । तातै सात प्रानके धनी ॥४३॥
नासा[2] बिन वेइन्द्री[3] जीव । तिन सबके षट प्रान सदीव ॥
जीभ-वचनवर्जित तन तास । एकेंद्री चउ प्राननिवास ॥४४॥

दोहा ।

इहिविध जीव अजीव सब, तीनकाल जगथान ।
सत्तासुख अवबोध चित, मुकतजीव के प्रान ॥४५॥

---

१ अवधारण करना २ नाक ३ दो इन्द्रिय ।

चौपाई ।

दोप्रकार उपयोग बखान । दरसन चार आठ विध ग्यान ॥
चक्षु अचक्षु अवधि अवधार । केवल ये सब दरसन चार ॥४६॥
अब सुन वसु विधग्यान-विधान । मति-श्रुत अवधिग्यान अग्यान ॥
मनपर्जय केवल निरदोख । इनके भेद प्रतच्छ परोख ॥४७॥
मतिश्रुतिग्यान आदिके दोय । ये परोख जानै सब कोय ॥
अवधि और मनपरजयग्यान । एकदेश परतच्छ प्रमान ॥४८॥
केवलग्यान सकल परतच्छ । लोकालोक-विलोकन दच्छ ॥
जहां अनंत दरबपरजाय । एक बार सब झलकै आय ॥४९॥
दरसन चार आठ विध ग्यान । ये व्यवहार चिह्न जो जान ॥
निहचैरूप चिदातम येह । शुद्ध ग्यान दरसन गुनगेह ॥५०॥
कल्पित असदभूत व्यवहार । तिस नय घटपटादि करतार ॥
अनुपचरित अजथारथरूप । कर्मोपाधिकरता चिद्रूप ॥५१॥
जब अशुद्धनिहचैबल धरै । तब यह रागदोषको करै ॥
यही शुद्ध निहचै कर जीव । शुद्ध भावकरतार सदीव ॥५२॥

सोरठा ।

प्रानी सुख दुख आप, भुगतै पुद्गलकर्मफल ।
यह व्यवहारी छाप, निहचै निजसुखभोगता ॥५३॥

दोहा ।

देहमात्र व्यवहार कर, कह्यौ ब्रह्म भगवान ।
दरवित[४] नयकी दिष्टिसों. लोकप्रदेशसमान ॥५४॥

१. आठ प्रकार २ चोहे प्रत्यक्ष ३, समर्थ ४ द्रव्य दृष्टि ।

अडिल्ल छंद ।

लघुगुरु देहप्रमान, जीव यह जानिये ।
सो वियार[1]-संकोच[2]-सकतिसौं मानिये ।।
ज्यो भाजन[3]परवान, दीपदुति विस्तरै ।
समुदघात विन राम[4], यही उपमा धरै ।।५५।।

चौपई ।

तैजस कारमानजुत भेस । बाहर निकसै जीवप्रदेस ।।
छांड़ै नहीं मूल तन ठाम । समुदघातविधि याको नाम ।५६।
सातभेद सब ताके कहे । गोमटसार देखि सरदहे ।।
प्रथम वेदना नाम बखान । दुतिय कषाय नाम उर आन।५७।
तन-विकुर्वना[5] तीजो येह । चौथो मारनात[6] सुनि लेह ।।
पंचम तैजस संग्या जान । छट्टम आहारक अभिधान[7] ।५८।
केवल समुदघात सातमा । ऐसी सकति धरै आतमा ।।५९।।
दुसह वेदनाके वस जहां । जीवप्रदेस कढत हैं तहां ।।
किसी जीवकै हो परवान । पहला समुदघात यह जान ।६०।
जब नाहू रिपु करन विधंस । बाहर जाहिं जीवके अंस ।।
अतिकषायसौं हो है तेह । दूजो समुदघात है येह ।।६१।।
नाना जात विक्रियाहेत । निकसै ब्रह्मप्रदेस सचेत ।।
देवनारकीके यह होय । तीजो समुदघात है सोय ।।६२।।
किसी जीवकै मरते समै । हस[8] अंस तन बाहर गमै[9] ।।

१ विस्तार २ सिकुड़ना ३. बर्तन ४ जीव ५ विक्रिया ६ मारणान्तिक ७ नाम ८ आत्मा ९ निकले ।

बाधी गतिके परसन[1] काज । चौथो भेद कह्यौ जिनराज ।६३।
जो मुनिकै कछु कारन पाय । उपजै क्रोध न थाम्यौ जाय ॥
तैजस तनकौ औसर यही । वाम[2] कधसौं प्रगटै सही ॥६४॥
ज्वालामई काहलाकार[3] । अर सिदूरपु ज उनहार ॥
बारह जोजन दीरघ सोय । नौ जोजन विस्तीरन होय ॥६५॥
दंडकपुर वत प्रलय करेय । साधुसमेत भस्म कर देय ॥
असुभकषाय यही विख्यात । अब सुनि सुभ तैजसकी बात ॥
दुर्भिच्छादिक दुख अविलोय[4] । दयाभाव मुनिवरकै होय ॥
सुभआकृतिसौ निकसै ताम । दच्छिन काधेसौं अभिराम ।६७।
पूरवकथित देह-विस्तार । रोगसोग सब दोष निवार ॥
फिर निज थान करै पंसार । पचम समुदघात यह धार ।६८।
करत साधु पदअर्थ-विचार । मन ससय उपजै तिहि बार ॥
तहा तपोधन[5] चिंता करै । कैसे यह विकलप निरवरै ॥६९॥
भरतखेत आदिक भूमाहिं । अब ह्या निकट केवली नाहिं ॥
तातै करिये कौन उपाय । बिनभगवान भरम नहि जाय।७०।
तब मुनि-मस्तकसौ गुनगेह । प्रगट होय आहारक देह ॥
एक हाथ तिस परमित कही । श्रीजिनसासनसौं सरदही ।७१।
फटिक वरन मनहरन अनूप । तहा जाय जह केवलरूप ॥
दरसनकरि सदेह मिटाय । फेरि आनि निजथान समाय ।७२।
अष्टम समुदघात यह मान । मुनिके होहि छठे गुनथान ॥
जब सजोगि जिनकै परदेस । बाहर निकसै अलख अभेस।७३।

१ छूने २ वाये कधे से ३ वजाने का बाक्या ४ देखना ५ साधु ।

दड-कपाटादिक-विधि ठान । क्रमसौं होंहि लोकपरवान ॥
सप्तम समुदघात यह भाय । सरधा करो भविक मनलाय।७४।
मरनातक आहारक जेह । एक दिसागत जानौ येह ॥
बाकी पाच रहे जे आन । ते सब दसौ दिसागत जान ॥७५॥
दुविध रास संसारी जीव । थावर जगमरूप सदीव ॥
तहा पांच बिध थावरकाय । भू जल तेज वनस्पति वाय।७६।
चार जातके जगम जंत । चलत फिरत दीखै बहुभंत ॥
सख सीप कौडी कृमि[1] जोक । इत्यादिक बेइन्द्री-थोक॥७७॥
चेंटी दीम कुंथ पुनिआदि । ये तेइन्द्री जीव अनादि ॥
माखी माछर भृंगीदेह[2] । भ्रमरप्रमुख चौइन्द्री येह ॥७८॥
देव नारकी नर विख्यात । केतक पसू पचेंद्री जात ॥
ये सब त्रस थावरके भेव । इनकौ विषयछेत्र सुन लेव ॥७९॥

छप्पय ।

फरस चारसै पाच, जीभ चौसठ सौ नासा[3] ।
दृग जोजन उनतीस, सतक चौवन क्रम भासा ॥
दुगुन असैनी अत, श्रवन वसु सहस धनुष सुनि ।
सैनी सपरस विषै, कह्यौ नौ जोजन श्रीमुनि ॥
नौ रसन[4] घ्राण[5] नो चच्छुप्रति, सैतालीस हजार गिन
दोसै त्रेसठि बारह स्रवनविषै-छेत्रपरधान भन ॥८०॥

१ लट २ भौरी ३ नाक ४ जीभ ५ नाक ।

दोहा

अथिर अर्थपरयाय[1] जो, हानिवृद्धमय रूप ।
तिसमै सिद्ध बखानिये, उतपति नाससरूप ।।८७।।
ग्येय[2] त्रिबिध परनति धरै, ग्यान तदाकृत भास ।
यो भी सिवपदमै सधै, थित उतपत्ति विनास ।।८८।।
अथवा सब परनति नसे, भई सिद्धपर्याय ।
सुद्धजीव निहचल सदा, यों तीनौं ठहराय ।।८६।।

अडिल्ल ।

बरन पाच रस पांच, गंध दो लीजिए ।
आठ फरस गुन जोर[3], बोस सब कीजिए ।।
जीवविषे इनमांहि, एक नहि पाइए ।
यातें मूरतिहीन, चिदातम गाइए ।।६०।।
जगमै जीव अनादि, बध-सजोगतें ।
छूट्यौ कबही नांहि, कर्मफलभोगतें ।।
असदभूत व्यवहार, पच्छ जो ठानिए ।
तो यह मूरत्तिवंत[4], कथंचित मानिए ।।६१।।

दोहा ।

प्रकृतिबंध थितिबंध पुनि, अरु अनुभाग प्रवेस ।।
चारभेद यह बधके, कहे पास परमेस ।।६२।।
बन्धविवर्जित आतमा, ऊरधगमन करेय ।
एकसमयकरि सरलगति, लोकअंत निवसेय ।।६३।।

१. सूक्ष्म पर्याय २ जानने योग्य पदार्थ ३ जोड़ ४ मूर्तरूप ।

ये परमानू पंचगुन, सात बन्धमै जान ।
वरनादिक जे बीस हैं, ते गुन जात बखान ।।१०४।।
आगे पुद्गल बन्धके, सुनो भेद खट[1] सोय ।
सरधा करतै समझतै, ससय रहै न कोय ।।१०५।।

चौपई ।

प्रथम भेद अतिथूल[2] बखान । दुतिय थूल[3] संग्या उर आन ।।
तृतिय थूल[4]-सूच्छम सरदहो । सूचछम[5]-थूल चतुर्थम गहो १०६
पंचम सूच्छम[6] नाम गिनेह । छट्ठम अतिसूच्छम[7] खट येह ।।
अब इनको बरनन विरतंत । सुनो एक मनसौं मतिवंत ।१०६
खंडखंड कीनै जे बन्ध । फेर न मिलै आपसौं सध ।।
माटी ईंट काठ पाखान । इत्यादिक अतिथूल बखान ।।१०८।।
छिन्न भिन्न हो फिर मिल जांहि । ऐसे पुद्गल जे जगमांहि ।
घृत अरु तेल जलादिक जान । ये सब थूल कहे भगवान ।१०९।
देखत लगै दिष्टिसौं थूल । करमै[8] गहे जांहि नहिं मूल ।।
धूप चांदनी आदि समस्त । जान थूल ते सूच्छम वस्त ।११०।
आंखनसौं दीखै नहिं जेह । चारौं इन्द्रीगोचर तेह ।।
विविध सपर्स सब्द रस गंध । सूच्छमथूल जान ते बंध ।१११।
नाना भांति वर्गना पिंड । कारमान परमानू पिंड ।।
काहू इन्द्रीगोचर नांहि । ते सूच्छम जिनसासनमांहि ।११२।
कर्मवर्गना सो ही कहा । जो अति ही सूच्छम सरदहा ।।

१. छ' २ स्थूल स्थूल ३ स्थूल ४ स्थूल-सूक्ष्म ५. सूक्ष्म-स्थूल ६. सूक्ष्म ७. सूक्ष्म-सूक्ष्म ८ हाथ मे ।

तातैं पचअथिकाय[1] है, काय काल बिन मान ॥१२३॥

सवैय्या छन्द ।

जीवरुधर्म अधर्म दरब ये, तीनौं कहे लोक-परवान ।
असंख्यात परदेसी राजै, नभ अनंतपरदेसी जान ॥
सख असख अनतप्रदेसी, त्रिबिधरूप पुद्गल पहिचान ॥
एकप्रदेस धरै कालानू, तातैं काल कायबिन मान ॥१२४॥

दोहा ।

काल काय बिन तुम कह्यौ, एकप्रदेसी जोय ।
पुद्गल परमानू तथा, सो सकाय[2] क्यों होय ॥१२५॥

सवैया

अलख असंख्य दरब कालानू, भिन्नभिन्न जगमाँहि बसाँहि ।
आपसमाँहि मिलैं नहिं कबहौं, तातैं कायवंत सो नाँहि ॥
रूप सचिक्कनतैं परमानू, ततखिन बंधरूप हो जाँहि ।
यो पुद्गलकौं कायकलपना, कही जिनेसुरके मतमाँहि ॥१२६॥
जितने मान एक अविभागी, परमानू रोकै आकास ।
ताकौ नाव प्रदेस कहावै, देय सर्व दरवनकौं बास ॥
तहां एक कालानू निवसै, धर्म अधर्म प्रदेस निवास ।
रहैं अनंत प्रदेस जीवके, पुद्गल बन्ध लहैं अवकास ॥१२७॥

पोमावती

धर्म अधर्म कालअरु चेतन, चारो दरव अरूपी गाये ।
तातैं एक अकास-देसमै, प्रभु सबके परदेस समाये ॥

---

१ पांच अस्तिकाय २. काय सहित ।

पद्धडी।

आस्त्रव अविरोधनहेत भाव। सो जान भावसंवर सुभाव॥
जो दर्वित आस्त्रव सुद्धरूप। सो होय दरव संवरसरूप।१३६।
व्रत पंच समिति पांचों सुकर्म। वर तीन गुप्ति दस भेद धर्म॥
बारह बिध अनुप्रेच्छाविचार। बाईस परीषहविजय सार१३७
पुनि पाच जात चारित असेस। ये सर्व भावसंवर विसेस॥
इनसौं कर्मास्त्रव रुकै एम। परनालोके[1] मुख डाट जेम।१३८।

दोहा।

सुभ उपयोगी जीवके, व्रत आदिक आचार।
पापास्त्रव अवरोधकौं[2], कारन हैं निर्धार॥१३६॥
सुध उपयोगो साध[3] जे, तिनकै ये आचार।
पुन्यपाप दोऊनकौं, संवरहेत विचार॥१४०॥

चौपई।

तपबल कर्म तथा थिति पात। जिन भावो रस[4] दे खिर जात॥
तेई भाव भावनिर्जरा। संवरपूरव है सिवकरा॥ १४१ ॥
बंधे कर्म छूटैं जिसबार। दरब[5]निर्जरा सो निर्धार॥
इहिबिध जिनसासनमै कह्यौ। समकितवत सांच सरदह्यौ॥
जो अभेद रतनत्रय भाव। सोई भावमोख ठहराव॥
जीव कर्मसौं न्यारा होय। दरवमोच्छ अविनासी सोय।१४३।
ये सब सात तत्त्व बरनये। पुन्यपाप मिलि नौपद[6] भये॥
आस्त्रवतत्त्वविषै ये दोय। गर्भित जान लीजिये सोय।१४४।

---

१ नाली २ रुकावट ३ साधु ४ फल ५ द्रव्य ६ नौ पदार्थ।

दोहा।

जीव जथारथदिष्टिसौं[1], सरधै तत्वसरूप।
सो सम्यक्‌दरसन सही, महिमा जास अनूप ॥१४५॥
नयप्रमान निच्छेप करि, भेदाभेद विग्यान।
जो तत्वनकों जाननो, सोई सम्यकग्यान ॥१४६॥
सो सामान्य विलोकिये, दरसन कहिये सोय।
जो विसेस कर जानिये, ग्यान कहावै सोय ॥१४७॥
चारित किरियारूप है, सो पुनि दुविध पवित्त।
एक सकल चारित्र है, दुतिय देसचारित्त ॥१४८॥

अडिल्ल

जहाँ सकल सावद्य[2], सर्वथा परिहरै[3]।
सो पूरन चारित्र, महा मुनिवर धरै॥
लेश[4]–त्याग जह होय, देशचारित वही।
सो गृहस्थकौ धर्म, गृही[5] पालै सही ॥१४९॥

दोहा।

तीर्थंकर निरग्रन्थपद, धर साधो सिवपथ।
सोई प्रभु उपदेसियो, मोखपथ निरग्रन्थ ॥१५०॥
दसविध बाहिज[6] ग्रन्थमें[7], राखै तिल[8]–तुस भान।
तौ मुनिपद कहिये नहीं, मुनि बिन नहि निर्वान ॥१५१॥
जे जन परिग्रहवतकौ, मानै मुक्तिनिवास।

---

१ यथार्थ दृष्टि से २ सदोष ३ छोड़े ४ एक देश त्याग ५ गृहस्थ ६ वाह्य ७ परिग्रह ८ थोड़ासा भी।

ढाल

श्रीगुरु सिच्छा माभलो[1], (ग्यानी) सात व्यसन परित्यागोरे ॥
ये जगमें पातक बडे, (ग्यानी) इन मारग मत लागोरे ।१६०।
जूवा खेल न माडिये, (ग्यानी) जो धन धर्म गवांवेंरे ॥
सब विसननको बीज है, (ग्यानी) देखता दुख पावेंरे ।१६१।
रजवीरजसें नीपजै, (ग्यानी) सो तन मास कहावेंरे ॥
जीव हते विन होय ना, (ग्यानी) नाव लिया घिन आवेंरे ।
सडि उपजै कीड़ा भरी, (ग्यानी) मद दुर्गन्ध निवासैरे[2] ॥
छीयासौं[3] सुचिता[4] मिटै, (ग्यानी) पीया बुद्ध विनासैरे ।१६३।
धिक वेस्या बाजारनी, (ग्यानी) रमती नीचन सायेंरे ॥
धनकारन तन पापिनी, (ग्यानी) बेचै विसनी हाथैंरे ।१६४
अतिकायर सवसौं डरै, (ग्यानी) दीन मिरग वनचारीरे ॥
तिनपै आयुध[5] साधते, (ग्यानी) हा अतिक्रूर सिकारीरे।१६५।
प्रगट जगतमैं देखिये, (ग्यानी) प्रानन धनतैं प्यारीरे ॥
जे पापी परधन हरैं, (ग्यानी) तिनसम कौन हत्यारीरे[6]।१६६।
परतिय[7] व्यसन महा बुरो, (ग्यानी) यामैं दोष बडेरोरे[8] ।
इहि भव तनधनजस हरै, (ग्यानी) परभव नरकबसेरोरे १६७
पांडवआदि दुखी भये, (ग्यानी) एक व्यसन रति मानीरे ।
सातनसौं जे सठ रचे, (ग्यानी) तिनकी कौन कहानीरे १६८

---

१ समझो २ स्थान ३ स्पर्श मात्र से ४ पवित्रता ५ अस्त्र ६ पापी
७ पर-स्त्री-सेवन ८ बड ।

दोहा।

पंच उदंबर फल कहे, मधु[1] मद[2] मास मझार।
इनके दूषन परिहरो, पहली प्रतिमा धार ॥१६९॥

चौपाई।

पांच अनुव्रत गुनव्रत तीन। सिच्छाव्रत चारों मलहीन॥
बारहव्रत धारे निर्दोष। यह दूजी प्रतिमा व्रतपोष ॥१७०॥

दोहा।

अब इन बारह व्रतनको, लिखों नेम विरतंत।
जिनको फल जिनमत कह्यो, अच्युतस्वर्ग[3] परजंत।१७१।

ढाल।

जो नित मनवचकायसों, कृतकारितादिकसों जेहो जी॥
त्रसको घात न कीजिये, प्रथम अनुव्रत एहो जी॥
बारहव्रत-विध वरनऊं ॥१७२॥
झूठवचन नहिं बोलिये, सब ही दोष निवासो जी।
दूजो व्रत सो जानिये, हितमित वचन सभासो[4] जी॥
बारहव्रत विध वरनऊं ॥१७३॥
भूलो बिसरो भूपरो[5], जो परधन बहु भायो जी॥
बिन दीये लीजे नहीं, जनम जनम दुखदायो जी॥
बारहव्रत विध वरनऊं ॥१७४॥
ब्याही वनिता[6] होय जो, तासों कर संतोषो जी॥
परिहरिये परकामिनी[7], यासम और न दोषो जी।

---

१ शहद २ शराब ३ सोलहवें स्वर्ग तक ४ समापण करना ५ जमीन पर गिरा ६ स्त्री ७ पर स्त्री।

बारहव्रत विध बरनऊं ॥१७५॥
धन-कन-कंचन आदि दे, परिग्रह सख्या ठानो जी ॥
तिसना[१] नागिनि वस करो यह व्रत मत्र महानो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७६॥
अवधि दसो दिसि खेतकी, कीजै सवर जानो जी ॥
बाहर पाव न दीजिये, जब लग घटमै प्रानो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७७॥
कर मरजादा कालकी, करिये देस-प्रमानो जी ॥
वन-पुर[२]-सरिता[३] आदि दे, नित्त गमनकौ थानो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१७८॥
जहां स्वारथ नहि सपजै[४], उपजै पाप अपारो जी ॥
अनरथदड वही कह्यौ, त्यागौ पच प्रकारो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊ ॥१७९॥
सामायिक-बिधि आदरो, थल एकात विचारो जी ॥
उर धरिये सुभ भावना, आरत रौद्र निवारो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१८०॥
पोषह[५] व्रत आराधिये, चारौं-परब-[६]-मझारो जी ॥
चहुबिध भोजन परिहरो, घरआरभ सब छारो जी ॥
बारहव्रत बिध बरनऊं ॥१८१॥
भोजन पान तंबोल[७] लिय[८], पटभूषण बहु एमो जी ॥

१ तृष्णा २ मगर ३ नदी ४ उपजना ५ प्रोषधोपवास ६ चार पर्व (दो अष्टमी दो चतुर्दशी) ७ पान ८ स्त्री ।

भोग तथा उपभोग है, करि इनको जम नेमो जी ॥
बारहव्रत विध बरनऊं ॥१८२॥
उत्तम प्रतिपिनकों सदा, दीजे चौविध दानो जी ॥
मान बड़ाई त्यागकें, हिरदें सरधा आनो जी ॥
बारहव्रत विध बरनऊं ॥१८३॥
अंत समय सल्लेखना, कीजे सकति संभालो जी ॥
आसों व्रत संजम सबें, ये फल देहि विसालो जी ॥
बारहव्रत विध बरनऊं ॥१८४॥

चौपाई।

तीनकाल सामायिक करें। पाचों अतीचार परिहरें ॥
सत्रु मित्र जानें इक सार। सो नर तीजो प्रतिमाधार॥१८५।
परब चतुष्टय तजि आरंभ। पोषह व्रत मांड़ै मनथंभ[1]।
सोलह पहर धरें सुभ ध्यान। सोई चौथी प्रतिमावान।१८६।
त्यागें हरीजात जावत। दल[2] फल कंद बीज बहु भंत ॥
प्रासुक जल पीवें तजि राग। सो सचित्तत्यागी बड़भाग१८७।
जो दिनमें मैथुन[3] परिहरें। मनवचकाय सील दिढ धरें ॥
षष्टमप्रतिमाधारी धीर। यह जघन्य श्रावक वर वीर।१८८।
जो सब नारि सर्वथा तजे। नौ विध सदा सील व्रत भजे ॥
कामकथारत कबहि न होय। सप्तमप्रतिमाधारी सोय॥१८९॥
जिन सब तजे विनज व्योहार। निरारंभ बरतें सब छार ॥
अहनिसि[4] हिंसासों भयभीत। अष्टमप्रतिमावत पुनीत।१९०।

१. मन का वश न करके २ पत्ते ३ काम क्रीडा ४. रात दिन।

जो समस्त परिग्रह परित्याग । उचित वसन राखै विनराग
सो नौमी प्रतिमा निरग्रंथ[1] । यह मध्यम श्रावककी पंथ ।।१६१।
जो गृहस्थकारज अघमूल । तिनकौं अनुमति[2] देय न मूल ।।
भोजनसमय बुलायो जाय । सो दसमी प्रतिमा सुखदाय ।।१६२।

दोहा ।

अब एकादसमी सुनो, उत्तम प्रतिमा सोय ।
ताके भेद सिधातमै, छुल्लक ऐलक दोय ।।१६३।।

चौपई ।

जो गुरुनिकट जाय व्रत गहै । घर तजि मठ–मडपमें रहै ।।
एकवसन तन पीछी साथ । कटि कोपीन[3] कमडल हाथ।।१६४।
भिच्छा-भाजन राखै पास । चारौं परव करै उपवास ।।
ले उदडभोजन[4] निर्दोष । लाभ अलाभ राग ना रोष ।।१६५।
उचित काल उतरावै केस । डाढो मूछ न राखै लेस ।।
तपविधान आगम अभ्यास । सक्तिसमान करै गुरुपास ।।१६६।
यह छुल्लक श्रावककी रीत । दूजो ऐलक अधिक पुनीत ।।
जाके एक कमर कोपीन । हाथ कमडल पोछी लीन ।।१६७।।
बिधिसौं बैठि लेहि आहार । पानिपात्र आगम अनुसार ।।
करै केसलुंचन अति धीर । सीत घाम सब सहै सरीर ।।१६८

सोरठा ।

पानिपात्र[5] आहार, करै जलाजुलि जोडि मुनि ।
खड़ो रहै तिहि बार, शक्ति–हीन भोजन तजै ।।१६९।।

---

१ परिग्रह त्याग २ अनुमोदना ३ लगोटी ४ अनुद्दिष्ट भोजन ५ हाथ मे भोजन करना ।

दोहा ।

एक हाथपै ग्रास धरि, एक हाथसौं लेय ।
श्रावकके घर आयके, ऐलक असन[1] करेय ।।२००।।
यह ग्यारह प्रतिमा कथन, लिख्यौ सिधात निहार ।
और प्रश्न बाकी रहे, अब तिनकौ अधिकार ।।२०१।।

चौपई ।

जे जगमै पापी परधान । सात व्यसनसेवक अग्यान ।।
रुद्रध्यान[2] धारै अघमई । अति ही क्रूरकर्म निर्दई ।।२०२।।
झूठवचन बोलै सत छोर । परधन परवनिताके चोर ।।
बहु आरभी बहुपरिग्रही । मिथ्यामतकौ पोषै सही ।।२०३।।
चड[3] कषायी अधिक सराग । जिनप्रतिमानिंदक निर्भाग[4] ।।
मुनिवर निदि पाप सिर लेहिं । जैनधर्मकौं दूषन देहिं ।२०४।
नीचदेवसेवारसरचे । धरै कृस्नलेस्या मद-मचे[5] ।।
इत्यादिक करनी-रत रहैं । ऐसे नीच नरकगति लहै ।।२०५।।

छप्पय

सप्तमसौं पसु होय, देस-संयम[6] न संभालै ।
छठे नरकसौं मनुष, होय व्रत नाहीं पालै ।।
पचमसौं व्रत धरै, मोखगतिकौं नहिं साधै ।
चौथेसौं सिव जाय, नहीं तीरथपद[7] लाधै ।।
सब सुभ्रवाससौं[8] आयकै, वासुदेव[9] भव नहिं धरै ।।
प्रति[10]-वासुदेव बलदेव पुनि, चक्रवर्ति नहिं अवतरै।२०६।

१ भोजन २ रौद्र ध्यान ३ प्रचड ४ अभागा ५ घमण्ड में चूर ६ एक देश सयम ७ तीर्थंकर पद ८. नरकवास ९. नारायण १०. प्रतिनारायण ।

चौपई।

मायाचारी जे दुठ जीव। परपचनमें[1] निपुन अतीव॥
झूठ लिखें अरु चुगली खाहिं। झूठी साखि[2] भरत भय नाहिं
सील न पालें मोहउदोत। लेस्या जिनकैं नील कपोत॥
आरतध्यानी धर्मविहीन। पसुपर्याय लहैं अकुलीन॥२०८॥
आरतरौद्ररहित नीराग। धर्म-सुकल-ध्यानी वड़भाग॥
जिनसेवक पालें व्रत सील। कसैं करन[3] मदमाते कील।२०९।
जिनप्रतिमा जिनमन्दिर ठवें। सातखेत उत्तम धन ववें[4]॥
सदाचार सुन स्रावक होय। जथाजोग पावें सुर लोय।२१०॥
सहज सरल-परनामी जीव। भद्रभाव[5] उर धरैं सदीव॥
मद मोह जिनके देखिये। मंदकषायप्रकृति पेखिये॥२११॥
अलपारंभ अलप धन चहैं। उर कपोतलेस्या निर्बहैं॥
पुण्यपाप नहिं वरतैं दोय। मिस्रभावसौं मानुष होय॥२१२॥
परके दोष सुनैं मन लाय। विकथा-ज्ञानी बहुत सुहाय॥
कुकविकाव्य सुन हरषें जोय। ते बहरे उपजें परलोय।२१३॥
पढ़ें सुछन्द विवेक न करैं। मृषापाठ विकथा विस्तरैं॥
परनिंदा भावें बहुभाय। निजपरससा करैं बढ़ाय॥२१४॥
मलमूत्रादिक-भोजन-काल। मौन छांडि बोलैं वाचाल॥
झूठ कहत कछु सकें नाहिं। ते गूंगे जनमैं जगमाहिं॥२१५॥
परतियमुख देखैं करि नेह। निरखैं सब योनादिक देह॥

---

१ इधर उधर की लगाने वाले २ गवाह ३ इन्द्रिय ४ खच करैं
५ उत्तम परिणामी।

वधवधन याचै×धरि राग । ते मरि आधे होंहि अभाव ।२१६।
जे नर करैं कुतारथ-गौन[1] । वहुत बोझ लादें बिनमौन ।।
वृथाविहारी[2] देख न चलै । होय पगु ते पातक फलै ।।२१७।।
नीति-वनिज करि लछमी लेंहि । अधिका लेंहि न ओछा[3] देंहि
अलप वित्त दानादिक करैं । ते नर दर्बधनी अवतरैं ।।२१८।।
जे धन पाय धरैं अभिमान । समरथ होकर देंहि न दान ।।
धनकारन छलछिद्र कराहिं । वढत परिग्रह धापैं नाहिं ।२१६।
लछमीवत कृपन जन जेह । परभव होंहि दरिद्री तेह ।।
मदकषायी सरलसुभाव । अहनिसि वरतै पूजाभाव ।।२२०।।
निजवनिता-सतोषी सदा । मदराग दीखै सर्वदा ।।
दुराचार जिनके नहिं होय । पुरुषवेद पावै सुरलोय ।।२२१।।
जे अतिकामी[4] कुटिल अतीव । महा सरागी मोहित जीव ।
परवनितारत सोकर्संजुक्त । ते कामिनी-तन लहैं निरुक्त।२२२।
रागअध अति जे जगमाहिं । कामभोगसौं तृपते नाहिं ।।
वेस्यादासीरक्त कुसील । ते नर लहैं नपुंसकडोल[5] ।।२२३।।
मनवचकाय महानिर्दई । वध वंधन ठानें अघमई ।।
परकौं पीड़ा वहुविध करै । ते जिय अलप आयु धरि मरैं ।।
कृपावत कोमल परिनाम । देखि विचारि करैं सब काम ।।
जीवदयामै तत्पर सदा । परकौं पीड़ा देंहि न कदा ।।२२५।।
सवही जीवनसौं हितभाव । धरैं पुरुष ते दीरघ आव ।।

× पाठ भेद—जोवैं (देखैं) १ खोटे तीर्थ को गमन २ विना काम भ्रमण करने वाले ३ कम ४ कामकषायी ५ शरीर।

जे जिनजग्यपरायन[1] नित्त। पात्रदानरत सीलपवित्त।२२६।
इन्द्रीजीत हिये सतोष। ते नर भोग लहैं व्रत-पोष ॥
पूजादानविमुख मदलीन। इन्द्रीलुबध दयागुनहीन ॥२२७॥
दुराचार दुरध्यानी लोग। इनकौं प्रापत हौंहिं न भोग ॥
समय विचारि पढ़ै जिनग्रंथ। पढ़ै पढ़ावै जे सुभपंथ ॥२२८॥
हितसौं धर्मदेसना[2] कहैं। ते परभव पडितपद लहैं ॥
ग्यानगरब हिरदै धर लेहिं। जिनसिधांतकौं दूषन देहिं।२२६।
इच्छाचारी पढ़ै असुद्ध। ग्यानविनयवरजित जड़बुद्ध ॥
पढनेजोग पढावै नाहिं। ऐसे मरि मूरख उपजाहिं ॥२३०॥
अनाचाररत आरंभवान। परकौं पीड़न करै अयान ॥
पापकर्मरत धर्म न गहै। ते परभवमै रोगी रहै ॥२३१॥
परदुख देखि हरख उर धरै। परवनिता परधन जो हरै ॥
नरपसुजीव बिछोहैं जोय। सो पुत्रादिवियोगी होय ॥२३२॥
नीचकर्मरत करुना[3] नाहिं। हाथ पांव छेदै छिनमाहिं ॥
जे परको उपजावै पीर[4]। ते नर पावै विकल सरीर।२३३।
जो मिथ्यामत मदिरा पियै। पापसूत्रकी सरधा हियै ॥
धर्मनिमित्त जीववध करै। महाकषायकलुषता धरै ॥२३४॥
नास्तिकमती पाप-मग गहैं। ते अनतससारी रहै।
रतनत्रयधारी मुनिराज। आगमध्यानी धर्मजहाज ॥२३५॥
इच्छारहित घोर तप करै। कर्म नास करि भवजल तिरै ॥

१ जिन पूजा में लीन २. धर्मोपदेश ३ दया ४. दुख।

उत्तम देव नमै सिरनाय। पूजे परम साधुके पाय ॥२३६॥
साधरमी-वत्सल मुनिप्रीत। उत्तम गोत बधे इहि रीत॥
जे जिन जती जिनागम जान। नमै नही सठ करि अभिमान।
मानै नीच देव गुरु धर्म। ये सब नीच गोतके कर्म॥
जिनके हिये रमै[1] वैराग। धारें संजम तिसना त्याग।२३८।
अतिनिर्मल चारितभडार। ग्यानध्यानतत्पर अविकार॥
ख्याति लाभ पूजा नहि चहैं। ते अहमिंद-सपदा गहैं।२३९।
पच-करन[2] बैरी वस आन। चारित पाले अति अमलान॥
दुद्धर तप कर सोखें काय। चक्री होय देवपद पाय॥२४०॥
जे सम्यकदृष्टी गुनग्रही। सोलहकारन भावे सही॥
ते तीर्थंकर त्रिभुवनधनी। होहि तीन-जगचूडामनी[3]॥२४१॥

दोहा।

इहिबिध पूछनहारको, समाधान जिनराज।
कीनौ गनधरदेवप्रति, जगतजीवहितकाज॥२४२॥
बानी सुन बारह सभा, भयो सबन आनन्द।
जैसे सूरजके उदय, विकसै वारिजवृन्द[4]॥२४३॥
वचनकिरनसौं मोहतम, मिट्यौ महा दुखदाय।
वैरागे जगजीव बहु, काललब्धिबल पाय॥२४४॥

चौपई।

केई मुक्तिजोग बड़भाग। भये दिगम्बर परिग्रह त्याग॥
किनही श्रावक-व्रत आदरे। पसुपर्याय अनुव्रत धरे॥२४५॥

---

१. व्याप्त=धारण करें २ पच इन्द्रिय ३. श्रेष्ठ ४. कमलों का समूह।

केई नारि अर्जिका भई । भर्ताके[1] संग वनकों गई ॥
केई नर पसु देवी देव । सम्यकरत्न लह्यौ तहां एव ।२४६।
केई सक्तिहीन संसारि । व्रत भावना करी सुखकारि ॥
पूजादानभाव परिनये । जथाजोग सब सेवक भये । २४७॥

दोहा ।

कमठ जीव सुरजोतिषी, करि वचनामृतपान ।
वम्यौ[2] वैर मिथ्यात्व विष, नम्यौं चरन जुग आन ।२४८
सम्यकदरसन आदरयौ, मुक्तितरोवरमूल ।
सकादिक मल परिहरे, गई जनमकी सूल[3] ॥२४९।
तहां सातसै तापसी, करत कष्ट अग्यान ।
देखि जिनेसुरसंपदा, जग्यौ जथारथ ग्यान ॥२५०।
दई तीन परदच्छिना, प्रनमे पारसदेव ।
स्वामि-चरन संयम धरयौ, निंदी पूरव टेव ॥२५१॥
धन्य जिनेसुरके वचन, महामंत्र दुखहत ॥
मिथ्यामत-विषधर[4]-डसे[5], निर्विष[6] होहि तुरत ।२५२।
कहाँ कमठसे पातकी, पायौ दरसन सार ॥
कहाँ पाप-तप-तापसी, धरयौ महाव्रत-भार ॥२५३॥
जिनके वचनजहाज चढ़ि, उतरे भवजलपार ॥
ते प्रतच्छ आये सरन, क्यों न होय उद्धार ॥२५४॥
अब श्रीगनधरदेव तह, चार ग्यान परवीन ॥

१ पति २ वमन किया ३ दुःख ('भूल' भी पाठ है) ४ साप ५ काटे ६ विष रहित ।

जिन-समुद्रतैं अर्थजल, मतिभाजन[1] भर लीन ॥२५५॥
नाम स्वयंभू दयानिधि, विविधरिद्धिगुनखेत ।
द्वादसांग रचना करी, जगतजीवहितहेत ॥२५६॥
परमागम अमृतजलधि, अवगाहै[2] मुनिराय ।
जन्मजरामृतदाह[3] हरि, होंय सुखी सिव पाय ॥२५७॥

चौपई ।

प्रथम एकसौ बारह कोड़ । लाख तिरानवै ऊपर जोड़ ॥
बावन सहस पांच पद सही । द्वादसांगकी परमित[4] कही २५८

पद्धडी ।

इक्यावन कोड़ी आठ लाख । चौरासी सहस सिलोक भाख ॥
छस्सै साढ़े इक्कीस जान । यह एक महापदकौ प्रमान ।२५९।

दोहा ।

इहि विध सभासमूह सब, निवसै आनन्दरूप ।
मानौं अमृत नीरसौं, सिंचत देह अनूप ॥२६०॥

चौपई ।

तब सुरेस[5] उठि विनती करी । हाथ जोर सिर अंजुलि धरी ।
भो जगनायक जगआधार । तीन भवनजनतारनहार ।२६१।
यह विहारअवसर भगवान । करिये देव दया उर आन ॥
भविकजीवखेती कुम्हलाय । मिथ्यातपसौं सूखी जाय ।२६२।
भो परमेस[6] अनुग्रह करो । बानीवरसासौं तप हरो ॥
मोखमहापुरके परधान[7] । तुम बिनजारे दयानिधान ।२६३।

---

१ बुद्धि रूपी पात्र २ निमग्न हुए ३ जलन ४ प्रमाण ५ इन्द्र ६ परमेश्वर ७ प्रधान ।

प्रभुसहाय भवि सुरपद लेहिं । आवागमन जलांजुलि देहिं ॥
इहिविध इन्द्र प्रार्थना करी । सहसनाम करि थुति विस्तरी२६४
भयो अनिच्छागमन[1] जिनेश । भविजीवनके भावविशेष ॥
नरसुरासुर जय जय कियो । जिनविहारप्रस्तावन दियो२६५
गमनसमय पौरें विध भई । समोसरनरचना फिर गई ॥
चले संग सुर चतुरनिकाय[2] । चउविध सकल चले सुरराय२६६
सुरदुन्दभि बाजें सुखकार । जिनमंगल गावें सुरनार ॥
हाथ धुजायुत देवकुमार । चले जाहिं नभमें छवि सार ।२६७।
चहुँदिशि चार चारसौ कोस । होय सुभिक्ष[3] सदा निर्दोस ।
नभविहार जिनवरको होय । जीवघात तहां करै न कोय २६८
सब उपसर्गरहित भगवंत । निरआहार आयुपर्जंत ॥
चतुरानन[4] दीखें सब सार । सबविद्यापति परमउदार ॥२६९॥
प्रभुके तनकी परै न छांहि । पलक[5] पलकसों लागै नाहिं ॥
नख अरु केश बढ़ैं नहिं जास । ये दस केवल-अतिशय भास२७०
भाषा सकल अर्धमागधी । खिरै सकल-संशयहर सधी ॥
नरपशु जातिविरोधी जीव । सब उर मैत्री धरैं सदीव ।२७१।
नानाजाति विरछ दुख दलैं । सब रितुके फल फूलनि फलैं ।
प्रभुसंचारभूमि मनिमई । दर्पनवत आगम वरनई ॥२७२॥
सुरभि[6] पवन पीछैं अनुसरैं । वायुकुमारजनित सुख करैं ॥
सुरनरपशू सभागत जेह । परमानंदसहित सब तेह ॥२७३॥

१ इच्छा रहित २ चार प्रकार के ३ सुभिक्ष (सुकाल) ४ चार मुख ५ टिमकार रहित मानें ६ सुगन्धित ।

मारुतसुर[1] जोजनमित मही । करै धूलितृनवर्जित सही ॥
मेघकुमार[2] करै मन लाय । गंधोदकबरसा सुखदाय ॥२७४॥
चरनकमल जिन धारै जहां । कंचन कमल रचै सुर तहां ॥
सातकमलतं आगे ठान । पीछे सात एक मधि जान ॥२७५॥
यों पंकजकी पंद्रह पांति । सवा दोइ सै सब इहिभांति ॥
सुकलध्यान उपजे बहुभाय । निर्मलदिसि निर्मल नभ थाय२७६
मुदित बुलावै देवसमाज । भविजनकौं जिन-पूजनकाज ॥
धर्मचक्र आगे संचरै । सूरजमंडलकी छबि हरै ॥२७७॥
मंगलदर्व आठ झलकाहिं । जथाजोग सुर लीये जाहिं ॥
ये चौदह देवनकृत जान । वरअतिसयमंडितभगवान ॥२७८॥
करै विहार परमसुख होत । भविजीवनके भाग उदोत ॥
स्वर्गमोखमारग प्रभु सार । प्रगट कियौ भ्रमतिमर निवार२७९
कहीं कुलिंगी[3] दीखै नाहिं । भानु उदय ज्यौं चोर पलाहिं ॥
सब निज निज वाछा अनुसार । पूरनआस भये तनधार २८०
कासी कौसलपुर पंचाल । मरहठ[4] मारूदेस[5] विसाल ॥
मगध अवंती मालवठाम । अंगबंग इत्यादिक नाम ॥२८१॥
कीनौ आरजखंड विहार । मेटौ जगमिथ्याअँधियार ॥
अब सब गणकी गणना सुनो । जथापुरानकथित बिध मुनो ।
प्रथम स्वयम्भूप्रमुख प्रधान । दस गनधर सर्वांगमजान ॥
पूरवधारी परमउदास । सर्व तीन सै अरु पंचास ॥२८३॥

---

१ बायु कुमार के देव २. मेघकुमार देव ३ खोटे भेषी ४ मराठो का देश ५ मारवाड ।

सिष्य मुनीसुर कहे पुरान । दसहजार नो सै परवान ।।
अवधिवत चौदह सै सार । केवलज्ञानी एकहजार ।।२८४।।
विविध विक्रियारिद्धिवलिष्ट । एकसहस जानो उतकृष्ट ।।
मनपरजयग्यानी गुनवत । सातसतक पचास महत ।।२८५।।
छसै वादविजयी[1] मुनिराज । सब मुनि सोलहसहस समाज ।
सहस छत्रीस अर्जिका गनी । एकलाख स्रावक व्रतधनी ।२८६।
तीनलाख स्रावकनी[2] जान । वरनी सख्या मूल पुरान ।।
देवीदेव असख्य अपार । पसुगन सख्याते निरधार ।।२८७।।
इहविध बारह सभासमेत । रतनत्रयमारगविध देत ।।
विहरमान[3] दरसावत वाट[4] । सत्तर वरस भये कछु घाट२८८
सम्मेदाचल सिखर जिनेस । आये श्रीपारसपरमेस ।।
एक मास जिन जोग निरोध । मनवचकाय क्रिया सब रोध२८९
सूच्छम कायजोगथिति ठान । त्रितियसुकलसजुत तिहि ठान ।
तजि सयोगिथानक स्वयमेव । आये फिर अयोगिपद देव।२९०।
पच-लघुच्छर[5] है थिति जहा । चतुरथ[6] सुकलध्यानबल तहा
दोयचरम[7] समये जिन भनी । प्रकृति बहत्तर तेरह हनी।२९१
इहिबिध कर्म जीत भगवान । एक समय पहुँचे निर्वान ।।
औ छत्तीस मुनीसुर साथ । लोकसिखर निवसे जिननाथ।२९२
सावन सुदि साते सुभ वार । विमल विसाखा नखतमझार ।
तजि ससार मोखमै गये । परमसिद्ध परमातम भये ।२९३।

१ वाद विवाद मे जीतने वाले २ श्राविकायें ३ विहार करते हुए ४ रास्ता ५ अ इ, उ ऋ, लृ ६ चतुर्थ ७ दो अन्तिम समय ।

पूरव चरम देहतें लेस। भये हीन आतम परदेस ।।
अष्टगुनातममय व्यवहार। निहचै गुन अनंतभंडार ।।२६४।।
सादि अनंतदसा परिनये। सिद्धभाव वसुगुनजुत थये ।।
परमसुखालय[2] वासो लियौ। आवागमन जलांजलि दियौ२६५

दोहा।

पच कल्यानक पाय सुख, जगतजीव उद्धार।
भये पूज्य परमातमा, जय जय पासकुमार ।।२६६।।
जिनके सुखकौं ग्यानकी, नहिं उपमा जगमाहिं।
जोतिरूप सुखपिंड थिर, इन्द्रीगोचर नाहिं ।।२६७।।
अब तिनको आकार कछु, एकदेस अवधार।
लिखौं एक दृष्टांत करि, जिनसासन अनुसार ।।२६८।।

चौपई।

मोममई[3] इक पुतला[4] ठान। नखसिख समचतुरस्रसंठान ।।
सब तन सुन्दर पुरुषाकार। नराकार इसही बिध सार।२६९।
माटीसौं इमि लेपहु[5] सोय। जैसे त्वचा[6] देहपर होय ।।
कहीं अग खाली नहि रहै। सब उपचारकलपना[7] यहै।३००।
पुनि सो लीजे अगनि तपाय। सांचा रहै मोम गल जाय ।।
अब ता भीतर करो विचार। कहा रह्यौ बुध ताहि निहार३०१
अतर मूस[8] पोल है जहाँ। पुरुषाकार रह्यौ नभ[9] तहा ।।
याही अंबरके उनहार[10]। ब्रह्मस्वरूप जान निरधार।३०२।

---

१ अन्तिम २ परम सुख का स्थान ३ मोम का ४ शरीर ५ लपेटना ६ चमड़ा ७ व्यवहार कल्पना ८ मिट्टी का खोल ९ आकाश १० समान।

यह आकास सून्य जड़रूप । वह पूरन चेतन चिद्रूप ॥
यही फेर है या वा माहि । आकृतिमें कछु अंतर नाहि॥३०३॥
या विध परब्रह्मको रूप । निराकार साकारसरूप ॥
यह दृष्टांत हियें निज धरो । भवि जिय अनुभवगोचर करो ।

दोहा ।

वसें सिद्ध सिवखेतमें, ज्यों दर्पनमें छांहि ।
ग्यान-नैननों प्रगट हैं, चर्म-नैननों नाहि ॥३०५॥

चौपई ।

तब इन्द्रादिक सुरसमुदाय । मोख गये जाने जिनराय ॥
श्रीनिर्वानकल्यानक काज । आये निज निज वाहन साज ।
परमपवित्त जानि जिनदेह । मनि-सिविकापर[2] थापी तेह ॥
करी महापूजा तिहि वार । लिये अगर चन्दन घनसार[3]।३०७
और सुगन्धदरव सुचि लाय । नमे सुरासुर सीस नमाय ॥
अगनिकुमार इन्द्रतें ताम । मुकटानल[4] प्रगटी अभिराम।३०८
ततखिन भस्म भई जिनकाय । परम सुगंध दसों दिसि थाय ।
सो तन भस्म सुरासुर लई । कंठ हिये कर मस्तक ठई।३०९।
भक्ति भरे सुर चतुरनिकाय । इहविध महा पुन्य उपजाय ॥
कर आनन्द निरत[5] वहुभेव । निज निज थान गये सब देव॥

दोहा ।

पंचकल्यानकपूज्य प्रभु, सिवसिरिकंत[6] जिनेस ॥
सब जग सुख संपति करो, श्रीपारसपरमेस ॥३११॥

१ शिवालय २ पालकी ३. कपूर ४ मुकुटों की अग्नि ५ नृत्य ६ मुक्तिरूपी श्री (लक्ष्मी) के पति ।

पद्धरी ।

पहले भव वामन कुलपवित्त। मरुभूत उपन्नो[1] सरलचित्त ।।
दूजे वनहस्ती वज्रघोष । जिन पाले बारहव्रत अदोष ।।३१२
तीजे भव द्वादस स्वर्गवास । सहस्रार नाम सब सुखनिवास ।।
चौथे भव विद्याधरकुमार । लघु वैस लियौ चारित्रभार ।।३१३
पचम भव अच्युत सुरगथान । बाईस जलधि जहं थिति प्रमान
छट्ठे भवमैं चक्रीनरेस । जिन साधे सहस बतीस देस ।।३१४
सातवें जनम अहमिन्द्र होय । सुख कीनें चिर उपमा न कोय ।।
आठम भव श्रीआनदराय । तजि राजरिद्धि बन बसे जाय ३१५
सोलहकारन भाये मुनिन्द्र । पुनि भये बारमै स्वर्ग इन्द्र ।।
इहि विध उत्तम नौ जनम पाय । वामाजननी उर बसे आय ।।
गरभ जनम तप ग्यान काल । निर्वानपूज्य कीरतिविसाल ।।
सुर नर मुनि जाको करे सेव । सो जयौ पास देवाधिदेव ।।३१७

दोहा

नाम लेत पातक[2] भजे, सुमरत सकट जाहिं ।
तेईसम अवतार मुझ, बसो सदा हियमाहिं ।।३१८।।

छप्पय ।

कमठ जीव तन छोरि, दुतिय कुरकट अहि[3] जायौ ।।
नरक पचमैं जाय, आय अजगर तन पायौ ।।
धूमप्रभामैं उपजि, भील अति भयौ भयानक ।
चरम[4] नरक पुनि सिध, फेर पचमसू-थानक ।।

---

१ पैदा हुआ २ पाप ३ सांप ४ सप्तम नरक ।

प्रभुनीति भुंजि महिपाल नृप, देव जोतिषी अवतर्यो।
इहि विध अनेक भवदुख भरे, वैरभाव-विस्तर करयो ॥

दोहा।

क्षिमाभाव फल पार्श्वजिन, कमठ वैर फल जान।
दोनों दिशा विलोककैं, जो हित सो उर आन ॥१२०॥

सोरठा।

जीव जाति जावंत, सबसौं मैत्रीभाव करि।
यानौं यह सिद्धंत, वैरविरोध न कीजियेक ॥१२१॥

सवैया

जो भगवान बखान करी धुनि, सो गुरु गौतमने उर आनी।
तापर आइ भई रचना कछु द्वादश अंग सुधारस सानी ॥
ता अनुसार अचारजसंघ सुबोधनसौं बहु शास्त्र बखानी।
जो जिनग्रंथ जथारथ है अजथारथ है सब और कहानी ॥

दोहा।

जितने जैनसिद्धांत जग, ते सब सत्यस्वरूप।
धर्मभावना हेत सब, हितमित सिद्धारूप ॥१२३॥
कलपित कथा सुहावनी, सुनते जीव अरत्थ।
लाभ दाम जिम कामकैं, लेखन लिखे अकत्थ ॥१२४॥

सोरठा।

सुन श्रीपार्सपुरान, जान सुभासुभ कर्मफल।
सुहित हेत उर आन, जगत जीव उद्यम करो ॥३२५॥

दोहा।

प्रभुचरित्र मिस[1] किमपि यह, कीनौ प्रभु-गुनगान।
श्रीपारस परमेसको, पूरन भयौ पुरान ॥ ३२६ ॥
पूरव चरित विलोकिकै, भूधर बुद्धिप्रमान।
भाषाबंध प्रबंध[2] यह, कियौ आगरे थान ॥ ३२७ ॥

छप्पय।

अमरकोष नहि पढ्यौ, मै न कहि पिंगल[3] पेख्यौ।
काव्य कंठ नहि करी, सारसुत[4] सो नहि सीख्यौ ॥
अच्छर-संधि-समास-ग्यानवर्जित बुधि हीनी।
धर्मभावना हेत, किमपि भाषा यह कीनी ॥
जो अर्थ छंद अनमिल कहीं, सो बुध फेर सवारियौ[5] ॥
सामान्यबुद्धि कविकी निरखि, छिमाभाव उर धारियौ।

दोहा।

जिनसासन अनुसार सब, कथन कियौ अवसान[6] ॥
निज कपोलकल्पित[7] कहीं, मति समझो मतिवान ३२९
छयउपसमकी[8] ओछसौं,[9] कै प्रमादवस कोय ॥
इहिविध भूल्यौ पाठ मै, फेर सवांरो सोय ॥३३०॥

---

१ बहाना २ प्रबन्ध काव्य ३ छन्द शास्त्र ४ सारस्वतव्याकरण ५ सुधार लेना ६ अन्त ७ मिथ्या कल्पना ८ क्षयोपशम ९ लाघव।

पंच वरन कछु सरससे, लागे करतन वेर ।।
बुधि थोरी थिरता अलप, तातैं लगी अवेर[1] ।।३३१।।
सुलभ[2] काज गरुवो[3] गनै, अलपबुद्धिकी[4] रीत[5] ।।
यौं कीडी कन ले चलै, किधौं चली गढ जीत ।।३३२।।
विघनहरन निरभयकरन, अरुन वरन अभिराम ।।
पासचरन संकटहरन, नमौं नमो गुनधाम ।।३३३।।

छप्पय ।

नमो देव अरहंत, सकल तत्त्वारथभासी ।।
नमो सिद्ध भगवान, ज्ञानमूरति अविनाशी ।।
नमो साधु निरग्रंथ, दुविध परिग्रहपरित्यागी ।।
जथाजात जिनलिंग धारि, वन वसै विरागी ।।
वंदौं जिनभाषित धरम, देय सर्व सुख सम्पदा ।।
ये सार चार तिहुँलोकमैं, करो छेम मंगल सदा ।।३३४।।
संवत सतरह सै समय, और नवासी लीय ।
सुदि असाढ तिथि पंचमी, ग्रंथ समापत कीय ।।३३५।।

